ADIBASI KUDMI SAMAJ
स्मारिका
(वर्ष ~ 2022-23)
आदिबासि कुड़मि समाज
वार्षिक केन्द्रीय अधिवेशन

09.01.2023
AKS, PASCHIM MEDINIPUR
AKS East Singhbhum
28.12.2022
Block Deputation
09.01.2023
AKS, NEW DELHI
Ramgadh Nagar
Parishad, Ramgadh
AKS Ramgadh
09.01.2023
AKS Seraikella-Kharsawan
09.01.2023

स्मारिका

(वर्ष – 2022–23)

आदिबासि कुड़मि समाज

वार्षिक केन्द्रीय अधिवेशन

दिनांक :– 5 नवंबर 2023, रविवार

स्थान :– ऑफिसर्स क्लब, जीएम ऑफिस, चरही, चुरचु, हजारीबाग, झाड़खँड।

सेवा में,

———————————————

———————————————

———————————————

Smarika : *A Souvenir of Yearly Convention on 5th November 2023 at Officer's Club, GM Office, Charhi, Churchu, Hazaribagh, Jharkhand, Organized by Adibasi Kudmi Samaj, Central Committee, Edited by Prasenjeet Mahato, Contact Number- 9955596660, 9835506564.*

स्मारिका (वर्ष – 2022–23) : आदिबासि कुड़मि समाज, वार्षिक केन्द्रीय अधिवेशन

सम्पादकीय समिति

प्रकाशक	:–	आदिबासि कुड़मि समाज
मुख्य सलाहकार	:–	डॉ० बिद्या भूषण महतो
सलाहकार	:–	डॉ० सुधाँशु शेखर महतो
		गणेश्वर महतो
		पन्नालाल जुरुआर
		प्रताप चन्द्र मोहन्ता
सम्पादक	:–	प्रसेनजीत महतो
सदस्य	:–	बैजनाथ महतो
		निरंजन महतो
		चुरामन महतो
		रामबिलास महतो
		निबारन महतो

कवर डिजाइन :– मनोहर महतो, पुरुलिया।

डीटीपी :– सुरेश कुड़मि, ज्योति प्रिंटर्स, असम।

मूल्य :– रू० 70/– (सत्तर रूपये मात्र)।
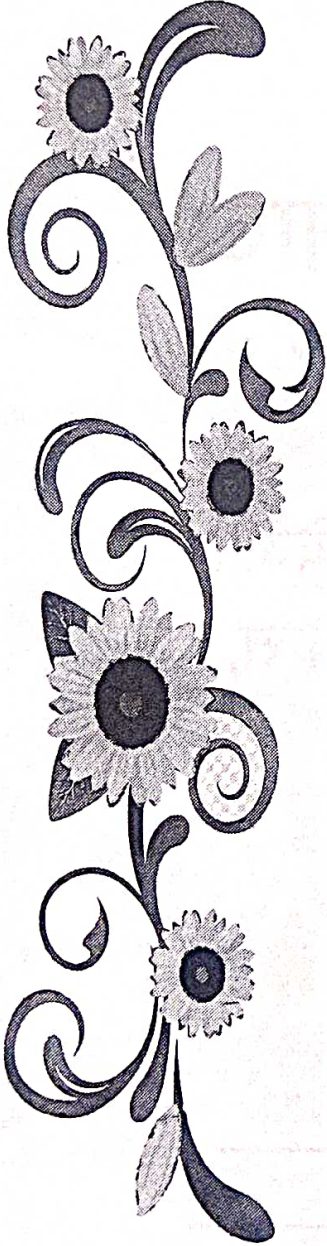
This Souvenir is Dedicated to,

Sarigot Thakur Das Mahato, *IAS*
(19.11.1917 - 07.01.1990)
who always inspired the Kudmi people for their Constitutional Rights and he used to tell them that their next generation will never forgive them if they do not restore their Constitutional Rights now.

Sarigot Basant Bonsriar
(02/04/1929 - 22/09/2011)
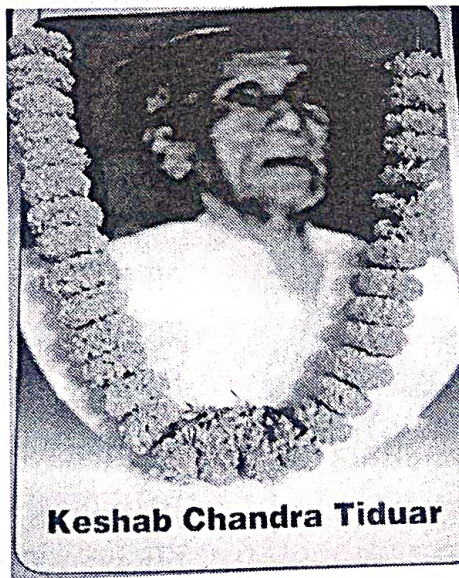
Sarigot Keshab Chandra Tiduar
(05/01/1931 - 05/11/2003)

Sarigot Lakshmikant Mutruar
(22/04/1939 - 26/09/2012)

Honourable Founder Members of Adibasi Kudmi Samaj (Estd.-1984)

मेरी बात

डॉ० बिद्या भूषण महतो जालबानुआर
मुख्य सलाहकार,
आदिबासि कुड़मि समाज, केंद्रीय समिति।

जोहाइर

हम सभी बचपन से ही पढ़ते आ रहे हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। ऐसा क्यों कहा जाता है? मनुष्यों ने जब खानाबदोश आखेट जीवन समाप्त करके कृषि जीवन में अपना पदार्पण किया तो उनमें स्थायीत्व आया। वो एक जगह पर रहने लगे और निर्माण हुआ समाज का। समाज के साथ भाषा, सभ्यता, संस्कृति और परंपराओं ने भी जन्म लिया। इस तरह दुनिया में अनेकों समाज और विभिन्न भाषा, संस्कृति, परंपराओं और मान्यताओं का अभ्युदय हुआ जो आज भी पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर चला आ रहा है। ये आदिम लक्षण ही किसी भी समाज के मूल परिचय का रीढ़ होता है। समाज ही किसी भी व्यक्ति के अस्तित्व का नींव होता है।

कुड़मि समाज भी इस दुनिया का एक ऐसा ही आदिम समाज है जो आदिकाल से अपने साथ अपने विशिष्ट भाषा, संस्कृति और परंपराओं का निर्वहन करते आ रहे हैं। फिर चाहे वो इनकी मातृभाषा कुड़मालि हो या बारह महीने के तेरह परब के रूप में मनाये जाने वाले संस्कृति हो या सामूहिकता के सिद्धांत पर आधारित परंपरा हो, इनकी पहचान को पृथक बनाती है। ये अलग पहचान ही है जो तत्कालीन से लेकर वर्तमान तक इनके हक अधिकार का मूल आधार भी है।

यह भी एक कटु सत्य है कि वर्तमान में विभिन्न बाह्य भाषा, संस्कृति, परंपराओं के अतिक्रमण से हमें अपने मूल भाषा, संस्कृति, परंपराओं को बचा पाने में बेहद कठिन संघर्ष करना पड़ रहा है। बाहरी संस्कृति के चकाचौंध में कुछ लोग अपने सादगी भरे संस्कृति से दिन–प्रति–दिन दूर भटकते चले जा रहे हैं। कालांतर में इसके कई कारण उभरकर सामने आये हैं –

i) अपने इतिहास की जानकारी ना होना।
ii) अपने चीजों की महत्ता को ना समझना।
iii) अपने चीजों का सम्मान ना करना।
iv) सामूहिकता का अभाव होना।
v) वैचारिक विचारधारा में कमी आना।
vi) इगो और महत्वाकांक्षा का हावी होना।
vii) अहम और मिथ्याभिमान में डूबे रहना।

इत्यादि।

हमें इन सब चीजों से बचना होगा। इन सभी चीजों में सुधार करना ही होगा तभी हम अपने समाज को आगे लेकर जा सकते हैं, विकास और उन्नति के पथ पर आगे बढ़ा सकते हैं। बेहद दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से पिछले कई दशक से विभिन्न चक्रांतों में फँसाकर उलझाकर हमें हमारे मूल पहचान से दूर करने की निरंतर कोशिश की जाती आ रही है। इसके लिए सामाजिक के साथ साथ राजनीतिक कुटिलता का भी सदैव भरपूर प्रयोग किया जाता है। हमें हमेशा अपने मतलब के लिए इस्तेमाल किया जाता है और हम इस्तेमाल होते चले जाते हैं। आज तक यही तो होता आ रहा है। हमें अब अपने चेतना को जगाना पड़ेगा। सही और गलत को समझना और समझाना होगा। भेड़चाल की दौड़ में दौडने के बजाय स्वविवेक का इस्तेमाल करते हुए यथार्थ का साथ देना पड़ेगा।

समाज विगत कई पीढ़ियों से बेहद विकट परिस्थितियों से घिर चुका है। ऐसे में अगर आज भी हम सजग नहीं हुए तो हमसे हमारा सबकुछ छिन जायेगा। इसलिए जरूरी है कि हम जमीनी स्तर पर लोगों को ज्यादा से ज्यादा जागृत करें। अपने इतिहास, भाषा, संस्कृति, परंपरा, नेग–नेगाचार के बारे में लोगों से विवेचना करें। गाँव के गाँव जब तक लोग अपने वास्तविक चीजों को नहीं समझेंगे नहीं सम्मान देंगे तब तक बाकि सबकुछ बेमानी ही होगा। एक बात यह भी याद रखें कि सही नेतृत्व ही समाज को सही दिशा दे पाता है। इसलिए इसके लिए हमें ऐसे नेतृत्व और संगठन को भी चुनना होगा जो सही मायने में समाज के लिए निस्वार्थ भाव से कुछ कर गुजरने का जज्बा रखते हैं। जो समाज को अँधकार से दूर कर प्रकाश में लाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। समाज की भावनाओं का फायदा उठाते हुए लोगों का इस्तेमाल करने की बजाय उनके भले के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने की हिम्मत रखते हैं। जो व्यक्तिवाद के नीति से कहीं ऊपर उठकर सामूहिकता के सिद्धांत को बल देते हैं।

इस दिशा में जो चंद संगठन निश्छल रूप से समाज के बीच काम कर रहे हैं उनमें से ही एक है – आदिबासि कुड़मि समाज (निबंधित संख्या – 66/2021–2022)। मेरा अब तक का जो भी अनुभव रहा है, उसके आधार पर मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि वर्तमान में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के कुशल नेतृत्व में यह संगठन जिस प्रकार का काम कर रहा है, वह आने वाले दिनों में समाज के लिए निश्चित रूप से एक मील का पत्थर स्थापित करेगा। मैं ऐसा इसिलिए कह पा रहा हूँ क्योंकि इनके अंदर मैंने समाज के प्रति जो त्याग, निष्ठा और समर्पण का भाव देखा है, वो अद्वितीय है। धैर्य और साहस की प्रतिमूर्ति बातों से ज्यादा काम करने का जुनून ही इनका असल परिचय है। वैचारिक रूप से बेहद मजबूत इनके काम करने का अनूठा तरीका, विहंगम कार्यशैली और किसी भी परिस्थिति में हार ना मानने का हौसला ही इनकी खूबी है। अभावों में भी अडिग रहकर समझौता ना करने का जज्बा ही इनके ऊपर विश्वास करने का मूल आधार है।

यह संगठन अपने सांगठनिक सामूहिक प्रयासों से निरंतर समाज के विभिन्न समस्याओं को दूर करने में अपनी एड़ी–चोटी का जोर लगा रहा है। समाज को अपने इतिहास भाषा संस्कृति धर्म परंपरा के प्रति जागरूक करना हो, शिक्षा स्वास्थ्य कला कृषि इत्यादि क्षेत्र के कार्य करना हो, सामाजिक कुरीतियों को दूर करना हो, पर्यावरणीय संबंधी कार्य करना हो या संवैधानिक हक अधिकार को हासिल करने की ओर स्टेप बाइ स्टेप कदम आगे बढ़ाना हो, हर मुमकिन कार्य करने की ओर निरंतर अग्रसर हैं। जमीनी स्तर से लेकर ऑफिसियल और डिपार्टमेंटल हर स्तर पर समाज के कार्यों को बखूबी अंजाम दे रहे हैं। इसके लिए ये मेहनत करने से, समय देने से, ऊर्जा खर्च करने से कभी पीछे नहीं हटते हैं। जैसे तैसे चुपचाप अपना काम बिना किसी दिखावे के करते रहते हैं। जाड़ा गर्मी धूप बरसात महामारी कोई परिस्थिति इनके काम के आगे आड़े नहीं आता है। मगर एक समस्या जो इनके सामने हमेशा विकराल रूप से खड़ा रहता है वो है – "आर्थिक समस्या"।

किसी भी समाज को आगे बढ़ाने में ऐसे संगठन का बहुत बड़ा हाथ होता है बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। मगर इसके लिए इनके सामने कई चुनौतियां सदैव मुंह बाए खड़ी रहती हैं। आवागमन की विकट समस्या हो, विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न प्रतिभाओं को सम्मानित कर उनका हौसला

बढ़ाना हो, पुस्तक–पत्रिकाओं के लेखन–प्रकाशन की बात हो या ऐसे तमाम सामाजिक कार्य जो अर्थ के बिना बेहद मुश्किल होता है। अपना पॉकेट काट काट कर आखिर कोई कितना दिन समाज कर सकता है? ऐसे में जरूरी है कि समाज भी इनके बारे में कुछ सोचे। अगर ये समाज के उन्नति के लिए समाज के आने वाले पीढ़ी के भविष्य के लिए अपना कीमती समय दे रहे हैं तो समाज का भी कर्तव्य बनता है कि इनके लिए कुछ करें। ताकि ये समाज के विभिन्न कार्यों को और भी बेहतरी के साथ कर सकें।

हमें इसके लिए घबराने या बहुत ज्यादा कुछ करने की भी आवश्यकता नहीं है। हमें बस अपने हिस्सा का एक मामूली सा सहयोग इनको करना है। मेरा समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों से चाहे वो आम हो या खास, सामाजिक हो या राजनैतिक, किसान हो या किसी प्राइवेट या सरकारी संस्थान में नौकरीपेशा हर व्यक्ति से अपील है कि अपने वार्षिक आय का मात्र 0.5% से 1% समाज के नाम पर इस संस्था को सहयोग करें। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आनेवाले समय में इस संस्था के माध्यम से समाज के बहुतेरे समस्याओं का निदान संवैधानिक तौर पर हम सभी मिलकर कर सकेंगे। धन्यवाद सह शुभेच्छा।

MESSAGE

It is a matter of great pleasure and pride to write this message for the Souvenir to be published by Adibasi Kudmi Samaj under the Leadership of Prasenjeet Mahato Kachhima at its Annual Central Convention to be held on 5th November 2023 at CCL Officer's Club, Charhi, Hazaribagh (Jharkhand). In fact, it is the need of the hour to make an evaluation of the activities performed by the organization within a period of last one year and also to set goals for the time to come. An organization with no goal is just like a ship without rudder that never reaches its destination. Adibasi Kudmi Samaj, is very particular about its objective fixed while making its formation. Gradually, it is moving ahead with the joining of new members and extending its branches at different level. It has been observed that the organization in general and the office bearers in particular are leaving no stone unturned to generate awareness among its members about the glorious mode of traditional Kudmi life.

I feel proud to observe that even at this juncture of modernization and globalization, the people of Kudmi community in this region of West Bengal, Jharkhand and Odisha (erstwhile Chhotanagpur plateau Region) have preserved their age old culture and tradition intact. Although, the region have been divided from time to time and assigned different political boundaries by the government viz. 22nd March 1912 (Bihar and Orissa Province gets separated from Bengal Presidency), 1st April 1936 (Bihar and Orissa Province split up to form Bihar Province and Orissa Province), 1956 (Manbhum district, the heartland of Kudmi is divided into two parts with one added to Bihar and the other part merged with Bengal) and 15th November 2000 (Jharkhand is curved out from Bihar).

The irony of the fact is that in each division or separation, it is the Kudmi inhabited area that is being reshuffled most. Obviously, these separations have direct impact on the people as they are involuntarily forced to abide by the law of the state concerned and their actual identity of geographical isolation is lost when examined in contemporary period. The historians, researchers and the policy makers must take note of it. The Kudmi community bears a distinctive culture of their own. Undoubtedly, they have been continuing with age old mode of indigenous cultivation as their occupation. However, many people are forcefully displaced due to government policy of industrialization and they are bound to migrate involuntarily and engage themselves with low paid menial jobs. Thus, the community solidarity is challenged from different angles. The Adibasi Kudmi Samaj is trying its best to unite them for a common cause i.e. inclusion into the list of Schedule Tribe and cherish the hope that at one point of time, justice will be paid to them under the umbrella of largest democracy in the world. All the people marching shoulder to shoulder with Adibasi Kudmi Samaj deserve special thanks. I convey my best wishes to all the participants to make it a grand success.

With Regards
Dr. Sudhanshu Shekhar Mahato
Sociologist

सम्पादकीय

जोहाइर,

आपको मेरी ओर से और हमारे आदिबासि कुड़मि समाज परिवार की ओर से बहुत बहुत अभिनंदन है। यूँ तो मानव जीवन इस दुनिया के समस्त जीवन में सबसे श्रेष्ठ माना जाता है, पर इसे श्रेष्ठ बनाने में भी वैसे मानवों का सत्कर्म और त्याग समाहित होता है, जिन्हें दुनिया महामानव के रूप में जानती और मानती है। इस दुनिया में हर रोज लगभग 03,60,000 से भी ज्यादा बच्चे जन्म लेते हैं तो वहीं लगभग 01,50,000 से भी ज्यादा लोग मरते हैं। इनमें कई अमीर, रसूखदार, शक्तिशाली और लोकप्रिय व्यक्ति भी होते हैं। पर इनमें से कितने लोगों को यह दुनिया याद रखती है? और याद रखती भी है तो कितनों के प्रति सम्मान की भावना रखती है। यह दुनिया ससम्मान याद रखती है तो केवल वैसे व्यक्तित्व को जो निस्वार्थ निश्छल भाव से समाज के उत्थान के लिए कुछ अच्छा काम करके जाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया में तो लगभग सभी अपने लिए ही जीते हैं, अपने परिवार के भलाई के बारे में ही सोचते हैं। पर पारिवारिक कर्तव्य पूरन के साथ साथ सामाजिक दायित्व निर्वहन भी तो हमारी ही जिम्मेदारी है। स्वहित से ऊपर उठकर जो औरों के लिए या सम्पूर्ण समाज के लिए जीता है, दुनिया उसे ही तो महान बनाता है। इस दुनिया में आपको ऐसे बहुतेरे लोग मिलेंगे जो किसी ना किसी रूप में समाज का काम करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो यह सोचकर सामाजिक कार्यों में आगे नहीं आते हैं कि इससे उन्हें क्या फायदा होगा? कुछ लोग यह सोचकर पीछे हट जाते हैं कि मैंने समाज के लिए इतना किया इतना दिया, समाज ने मेरे लिए क्या किया मुझे क्या दिया? "सच्चा समाजसेवी वही है, जो ये नहीं सोचता कि समाज ने उसके लिए क्या किया? बल्कि ये सोचता है कि मैंने समाज के लिए क्या किया?" कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो समाज को केवल अपने मतलब के लिए, राजनैतिक महत्वाकांक्षा या निजी स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करते हैं। ऐसे लोगों को पहचानने और उनसे दूर रहने में ही भलाई है। गलत केवल गलत करने वाला ही नहीं होता है, गलत का साथ देने वाले गलत को प्रश्रय देने वाले भी समान रूप से दोषी होते हैं। इसलिए आँख मूँद कर भरोसा करने के बजाय सही और गलत का परख करना भी जरूरी है। क्योंकि जो खुद भटके हुए होंगे वो समाज को क्या सही दिशा दिखा पाएंगे!

"आदिबासि कुड़मि समाज" एक ऐसा संगठन है जो व्यक्तिवाद के बजाय सामूहिकतावाद के सिद्धांत को प्रधानता देता है। ये केवल एक संगठन नहीं बल्कि एक विचारधारा है। 1984 ई० में कुछ महान भाषा संस्कृति प्रेमी समाजसेवियों द्वारा इसका गठन किया गया था, जिसे कई विशिष्ट समाजसेवी आगे बढ़ाते रहे। मगर जिस तरह कोई भी महान कार्य बगैर अनुशासन के सफल नहीं होता है, वैसे ही बगैर अनुशासन के कोई संगठन भी सही उद्देश्य के साथ काम पूरा नहीं कर सकती है। देश के प्रहरी सेना भी कठिन अनुशासन का पालन करते हैं और देश की रक्षा करते हैं। शिक्षकगण अनुशासन के बल पर ही देश के भविष्यों का सही निर्माण कर पाते हैं। कोई भी बड़ी कंपनी बगैर मैनेजमेंट सिस्टम के आगे नहीं बढ़ती है। आदिबासि कुड़मि समाज संगठन का गठन भी अनुशासित ढंग से समाजहित के कार्यों को पूरा करने के लिए हुआ था। रांची विश्वविद्यालय में "कुड़मालि" भाषा का पठन पाठन शुरु करवाकर ऐसा ही एक महान ऐतिहासिक कार्य पूरा कर पूर्व माननीय समाजसेवियों द्वारा आनेवाली पीढ़ियों को एक तोहफा देकर कृतार्थ किया गया है। समाज हमेशा इसके लिए उनके ऋणी रहेंगे। उन्होंने समाज को दिशा दिखाने के लिए "कुड़मालि चारि" और "जनजाति परिचिति" जैसे पोथि (पुस्तक) समाज को देकर गये हैं। मगर वर्तमान में उनके दिखाये डहर (रास्ते) के विपरीत हो रहे कार्यों को अनुशासित ढंग से चलाने के लिए ही हमें कुछ कठोर निर्णय लेने की आवश्यकता पड़ी। जिस संगठन के साथ ऐसे महान समाजसेवियों का नाम जुड़ा है, जिन्होंने समाजहित में अपना सर्वस्व न्यौछावर किया है, वो संगठन किसी गलत मानसिकता वाले व्यक्तिवादी और महत्वाकांक्षी व्यक्ति के हाथों में जाकर अपने मूल मकसद से भटक ना जाये, इसलिए इसका निबंधन कराना पड़ा। दिनांक 22 जून 2021 को निबंधित होने के साथ ही यह संस्था नीति नियमों से बँध गया, जो कभी अपने पथप्रदर्शकों को अपने सिद्धांतों से भटकने नहीं देगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

तब से लेकर अब तक संगठन बिना शोर बिना दिखावे के लगातार समाजहित में अपना काम बखूबी अंजाम देने का काम कर रही है। अभावों और असुविधाओं के बावजूद क्या जाड़ा क्या गर्मी क्या बरसात क्या कोई अन्य दिक्कत–परेशानी, हर हालात झँझावात से जूझते यथाशक्ति यथासंभव निरंतर समाजहित का काम पूरी निष्ठा और समर्पण से पूरा करने में सतत अनवरत लगा हुआ है। हमारी विनती समाज से सिर्फ इतनी है कि वो अपने बारे में जानें। क्योंकि जो समाज अपना इतिहास नहीं जानता अपने भाषा संस्कृति परंपरा का सम्मान नहीं करता, दुनिया में उस समाज का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। हमेशा याद रखें कि "सशक्त समाज से ही सशक्त देश का निर्माण होता है"। "हम कौन हैं और हमारा क्या है" के अपने प्रमुख सिद्धांत के साथ हम समाज के बौद्धिक चेतना को जागृत करने का कोशिश करते हैं, ताकि वो सही और गलत को समझ सकें, सकें, वास्तविकता और काल्पनिकता के अंतर को जान सकें एवं समाज व देश हित में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

समय के साथ बदलाव और परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है। ऐसे बदलते परिवेश में अपने मूल अस्तित्व को बचाए रखना हमेशा चुनौती भरा होता है। अगर हम अपने इतिहास, भाषा, संस्कृति, धर्म, परंपरा के प्रति सचेत नहीं होंगे तो अन्य बाह्य संस्कृति को हमपर हावी होने में तनिक देरी नहीं लगेगी। यही वो वजह है जिसके कारण हमसे जुड़ी हमारे हर चीज का अतिक्रमण बड़े आराम से हो जाता है, फिर चाहे आप जल जंगल जमीन की बात करें या भाषा संस्कृति धर्म परंपरा की। हमें निश्चित रूप से आज बेहद ही गंभीरतापूर्वक सोचने की आवश्यकता है कि हम कैसे अपने आदि विशिष्ट भाषा संस्कृति को संरक्षित करके रख सकते हैं, इससे पहले कि वो आधुनिकता की चकाचौंध में कहीं गुम ना हो जाये। दूसरों के भाषा संस्कृति धर्म परंपरा का सम्मान करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। मगर याद रखें, दूसरों के खेत में खाद डालने से आपके अपने घर में धान (अनाज) नहीं भरेगा या दूसरों के गाड़ी में तेल डालने से आपकी गाड़ी नहीं चलेगी! इसलिए सबसे पहले अपने चीजों को अर्थात अपने भाषा, परब, नेग–नीति इत्यादि के बारे में जानें, उसकी विशिष्टता को समझें, मानें और उसी'का पालन करें। मसलन अपनी ऊर्जा, अपना समय, अपना अर्थ (धन) अपने ही चीजों में खर्च करें। यही वो बातें हैं जो आपको आपका हर अधिकार भी दिलायेगा। अन्य निरर्थक कार्यक्रमों के बजाय वैसे सार्थक सामाजिक कार्यक्रम जिसमें समाज के इन मूल तत्वों के बारे में जानकारी दिया जाता है, उनमें जरूर शामिल हों और अपने परिवार बाल बच्चों को भी शामिल करें। क्योंकि बिना सामाजिक ज्ञान के आपका बाकि हर हाइफाइ ज्ञान अधूरा है। सामाजिक पाठशाला को दरकिनार कर राजनैतिक प्लेटफॉर्म हो या सक्सेस लाइफ की बात, आप व्यक्तिगत लाभ के अलावे सामाजिक सम्मान कभी नहीं कमा सकते हैं। अपितु इस वजह से हमने कइयों को भटक कर समाज से ही दूर हो जाते हुए देखा है। इसलिए बड़े जरूर बनें, मगर किसी भी हाल में अपने समाज के भाषा संस्कृति धर्म परंपरा को ना छोड़ें।

यह स्मारिका समाज के उन प्रबुद्ध जनों को समर्पित है, जिनका अवदान समाज भूले से भी नहीं भुला सकता है। इस स्मारिका को तैयार करने में सबसे अहम भूमिका जिनका रहा है, वो महान शख्सियत कोई और नहीं बल्कि हमारे केंद्रीय मुख्य सलाहकार डॉ० बिद्या भूषण महतो जी हैं, जिन्होंने हमेशा इसके लिए मुझे प्रेरित किया। उनके आशीर्वाद की वजह से ही बेहद व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद आखिरकार मैं इस महत्वपूर्ण काम को पूरा कर पाने में कामयाब हो सका। इस प्रथम खेप स्मारिका के माध्यम से हमने पिछले कुछ वर्षों के कार्यो को आपके बीच साझा करने का कोशिश किया है, जिसे हम अपने तीसरे वार्षिक केंद्रीय अधिवेशन में प्रमोचन कर रहे हैं। हमने कोशिश किया है कि इस स्मारिका के माध्यम से कुछ महत्वपूर्ण जानकारियों को भी आपके बीच रख सकें। विभिन्न सम्मानित विशिष्ट जनों के कुछ लेख, कहानी, कविता और गीत को भी इसमें जगह दिया है जो आपको जरूर रोमांचित करेगी। इस स्मारिका को काफी मेहनत से तैयार करने में साथ देने वाले सभी विशेष करके भाइ सुरेश कुड़मि और प्रकाशित करने में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी महानुभावों को बहुत बहुत धन्यवाद और आभार प्रकट करता हूँ। साथ ही संगठन के सभी सम्मानित साथी सदस्यों और पदाधिकारियों का भी बहुत बहुत आभार। आशा करता हूँ आप सभी के आशीर्वाद और शुभकामनाओं के साथ हम अपने मकसद में जरूर कामयाब होंगे। धन्यवाद।

सम्पादक

विषय–सूची

- **Introduction of the Organization - 11**
- **3rd grade citizen,** ***Dr. Bidya Bhushan Mahato*** **- 12**
- कुड़मि शहीद और महापुरुषों की सूची - **13**
- कुड़मि समाज के नाम एक महत्वपूर्ण संदेश, *डॉ० बिद्या भूषण महतो* - **14**
- एसटी इन्क्लूजन और आकुस, *बैजनाथ महतो मुतरुआर* - **16**
- सिड़रि (हेंठि),(कविता), *गनेसर बंसरिआर* - **17**
- साद खाउआ आर जनम बेराक नेग निति, *गनेसर बंसरिआर* - **18**
- कुड़मालि झुमेइर गित, *जइपरकास बँसरिआर* - **20**
- मिछा सेखि (केहनि), *शंकर लाल बंसरिआर* - **21**
- चास (कविता) , *डाकतार सुधाँगसु सेखर माहतअ* - **26**
- कुड़मालि चारिंइ पुरखेनिआ सँउरन दिन, *समभुनाथ माहातअ* - **28**
- आदिबासि, जनजाति और अनुसूचित जनजाति, *प्रसेनजीत महतो* - **34**
- कुड़मि आदिबासियों की व्यथा, *प्रसेनजीत महतो* - **36**
- कुड़मालि भाखिक हुमदुमि, *सुरेश कुड़मि* - **43**
- मकरिक घारकनना (केहनि), *सकतिपदअ माहातअ* - **45**
- कुड़मि जनअजाति हेकिअ आदिबासि (गित), *डॉ० विभीषण महतो* - **53**
- **Khemta... Rag (Git),** ***Dr. Pratap Chandra Mohanta*** **- 53**
- कुड़मालि भाखिक धचअर नेतैं खेजान रित, *रामेश्वर महतो,* - **54**
- कुड़मालि जागरन गित, ***Dr. Shailesh Kumar Mahto*** **- 58**
- चंपा स्टेट का इतिहास, *डॉ. राकेश कुमार महतो* - **59**
- सास बहुक कड़ि, ***Sangeeta Kumari Mahto*** **- 62**
- गाछ रपा हमदुमि - **63**
- कुड़मालि (**KUDMALI**) भाषा कोड - **64**
- आदिबासि कुड़मि समाज : पिछले कार्यक्रमों की विवरणी - **68**
- महत्वपूर्ण जयंती एवं शहादत दिवस - **80**

Introduction of the Organization

Name :- ADIBASI KUDMI SAMAJ (आदिबासि कुड़मि समाज)
Registered under Society Registration Act XXI, 1860.
Registered Number :- 66/2021-2022.
Date :- 22nd June 2021.
Working Area :- All over India.
Registered/Central Office :-
NH-23, Shaheed Nirmal Mahato Chouk, Kothar, Ramgarh, Jharkhand - 825101.
E-mail :- ***adibasikudmisamaj66@gmail.com***
* **President** - Prasenjeet Mahato (9955596660)
* **Secretary** - Baijnath Mahto (7488353726)
* **Treasurer** - Ganeshwar Mahato (9934373421)

Objectives of the Organization :-

A) Main Objective :-

Social upliftment of Totemistic Adibasi Kudmi tribal community ; Preservation and Promotion of language, culture, tradition, history ; Apart from creating awareness for the attainment of constitutional rights, working for the development of all by establishing good relations with other communities.

B) Other Objectives :-

i) Academic / Educational
ii) Skill Development
iii) Environmental Protection
iv) Sanitation / Cleanliness
v) Health
vi) Social Welfare
vii) Agricultural Development
viii) Sports
ix) Art & Culture.

Social Media Accounts :-

Facebook :- ***@adibasikudmisamaj66***
YouTube :- ***@adibasikudmisamaj66***
Twitter :- ***@AdibasiKudmi***

Bank Account :-

A/C Name - Adibasi Kudmi Samaj
Bank Name - Canara Bank
Branch - Chetar (Kothar), Ramgarh, Jharkhand.
A/C No. - ***110032553255***
IFSC Code - ***CNRB0004621***

We are at present 3rd grade citizen in Jharkhand, West Bengal, Odisha and Assam

Dr. Bidya Bhushan Mahato
Chief Advisor,
Adibasi Kudmi Samaj, Central Committee.

It seems that there is great conspiracy to keep us out of the Schedule Tribe list -

1. to make Jharkhand (Greater Jharkhand) and Jharkhandis weak politically, socially, economically and educationally.
2. to grabe our land.
3. to displace us from our original settlement.
4. to keep us out of education, service and many other constitutional rights.
5. to conspiratorially finish our existence.

The division of our Original Settlement old Manbhum district (which was previously known as Jungle Mahal) in two parts - one part with West Bengal and other part with Bihar in 1912 (at present in Jharkhand from 2000). Later divided into Odisha also in 1936. This was also a conspiracy to make us more and more weak.

We are completely out of our provided constitutional rights.
Without constitutional rights we cannot survive.
You look at Parliament, Assembly, Panchayat etc. our presence is almost negligible.

Our presence is Central Govt. / State Govt. in Secretariate, Administrative, Defense, Railways, District Offices, Block Offices, Banks, LIC and other Govt. institutions and offices almost negligible.

Till now we are totally out of decision making process to run India.
Our presence in Central/State Govt., Engineering, Medical and other Technical and Management institutions is also almost zero.
Now we realize how we will survive in coming days.

For this miserable condition of our community who are responsible :

1. Conspirators?
2. Past and Present Central/State Govt.?
3. Our ignorance and our illiteracy?
4. Our past and present social and political leaders?

Now we all should sit together in villages, towns and in all other places and discuss this matter seriously and decide how to get back our Constitutional rights. So that we will survive in coming days.

We are Aboriginal Tribe.
We are Animist.
We are Worshipper of Nature.

Constitution of India has provided Special Rights for our survival, for our all round development in Social, Cultural, Economical, Educational, Service etc. etc.

Lastly for Peace, Prosperity and our Identity, we must observe our Agriculture based Traditional Festivals known as "Baro Mase Tero Porob" (Thirteen Festivals of Twelve Months) like - Akhain Jatra, Sarhul, Rohoin, Gomha, Korom, Bandna, Tusu etc. in our traditional way.

Our Birth Ceremony, Marriage Ceremony, Death Ceremony and Dhorom Puja Ceremony to be observed in our Traditional way making less expensive.

कुड़मि शहीद और महापुरुषों की सूची :

01) शहीद रघुनाथ महतो
(21-03-1738 – 05-04-1778)
02) शहीद चानकु महतो
(09-02-1816 – 15-05-1856)
03) पाँच शहीद – गोकुल महतो, गणेश महतो, मोहन महतो, शीतल महतो, सहदेव महतो
शहादत दिवस – 15 जनवरी 1931
i) शहीद गोकुल महतो
(23-08-1886 – 15-01-1931)
ii) शहीद गणेश महतो
(14-03-1887 – 15-01-1931)
iii) शहीद मोहन महतो
(04-11-1901 – 15-01-1931)
iv) शहीद शीतल महतो
(16-05-1896 – 15-01-1931)
v) शहीद सहदेव महतो
(07-11-1906 – 15-01-1931)
04) शहीद चुनाराम महतो – गोबिंद महतो
शहादत दिवस – 30 सितंबर 1942
i) शहीद चुनाराम महतो
(03-02-1924 – 30-09-1942)
ii) शहीद गोबिंद महतो
(07-07-1924 – 30-09-1942)
05) बिनोद बिहारि महतो
(23-09-1923 – 18-12-1991)
06) शहीद शक्तिनाथ महतो
(02-08-1948 – 28-11-1977)
07) शहीद निर्मल महतो
(25-12-1950 – 08-08-1987)
08) शहीद रतिलाल महतो
(03-01-1949 – 13-07-1999)
09) शहीद सुनील महतो
(11-01-1966 – 04-03-2007)
10) सुधीर महतो
(25-06-1956 – 22-01-2014)
11) टेकलाल महतो
(15-02-1945 – 27-09-2011)
12) ठाकुर दास महतो
(19-11-1917 – 07-01-1990)
13) बसंत बंसरिआर
(02-04-1929 – 22-09-2011)
14) केसब चंद्र टिडुआर
(05-01-1931 – 05-11-2003)
15) आनंद खुँटदार
(16-06-1931 – 23-09-2018)
16) लक्ष्मीकांत मुतरुआर
(22-04-1939 – 26-09-2012)
17) डॉ. पशुपति प्रसाद महतो
(29-10-1943 – 28-02-2019)
18) हरिप्रसाद कुड़मि
01–03–1959 – 21–03–2002

कुड़मि समाज के नाम एक महत्वपूर्ण संदेश

डॉ० बिद्या भूषण महतो जालबानुआर
मुख्य सलाहकार,
आदिबासि कुड़मि समाज, केंद्रीय समिति।
(15–12–2020)

जोहाइर

समाज के समस्त प्रबुद्ध जनों से निवेदन पूर्वक कहना है कि...

i) सारिगत ठाकुर दास महतो, चाकुलिया, पूर्वी सिंहभूम (आइएएस एवं भूतपूर्व शिक्षा निदेशक, बिहार सरकार),

ii) सारिगत प्रफुल्ल कुमार महतो, पूर्वी सिंहभूम (पूर्व सूचना आयुक्त, झारखंड सरकार),

iii) सारिगत डॉ० पशुपति प्रसाद महतो, पुरुलिया (नृतत्व शास्त्री / मानव विज्ञानी, भारत सरकार),

iv) सारिगत लक्ष्मीकांत मुतरुआर, बोकारो (शिक्षाविद),

v) डॉ० शशिभूषण काड़ुआर, राँची (सेवानिवृत्त प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, राँची विश्वविद्यालय) और

vi) मैं **डॉ० बिद्या भूषण महतो**,

हमलोग उपरोक्त छः व्यक्ति मिलकर विगत 50 साल से खोज रहे थे कि किस कारण से कुड़मि जनजाति समुदाय को सरकारी जनजाति सूची (एसटी) से अलग रखा गया और किस कारण से अभी तक अनगिनत प्रतिवेदन देने के बाद भी सूचीबद्ध नहीं किया गया? अंतिम 50 साल से विभिन्न माध्यमों से और विभिन्न अधिकारियों से मिलते जुलते उस कारण को खोजते रहे। अंत में अति–अति विशिष्ट सूत्रों से पता चला कि असल और मूल कारण क्या है?

1) सन् 1935 ई० के बाद भारत सरकार द्वारा एक कमीशन सरदार बल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में बैठाया गया था, यह देखने के लिए कि कौन–कौन समुदाय जनजाति हैं? इस दौरान सरदार पटेल ने जब छोटानागपुर पठार अंतर्गत 1913 और 1931 के गैजेट नोटिफिकेशन को देखा, तब उसमें अंकित 13 जनजाति समुदायों में से एक नाम Kurmi को पाया। उन्होंने उसे उच्चारणगत कुर्मी (कुरमी) पढ़ा। तब उन्होंने बोले कि कुर्मी (कुरमी) तो बहुत बड़ा बड़ा आदमी होता है – गुजरात का पटेल कुर्मी, बिहार का कुर्मी, उत्तर भारत का कुर्मी – ये लोग तो अति संपन्न होते हैं और ये लोग तो आदिवासी भी नहीं हैं। इसलिए उन्होंने बिना कुछ और सोचे जनजाति के सूची में उस Kurmi (कुर्मी या कुरमी) नाम को रखना दिग्भ्रमवश उचित नहीं समझा और काट दिया। सिर्फ इसलिए काटा क्योंकि उनके अनुसार उसमें कुर्मी (कुरमी) लिखा हुआ था। उस जगह पर अगर Kudmi लिखा होता तो वो नहीं काट सकते थे, क्योंकि इससे यह स्पष्ट हो जाता कि Kudmi यानि कुड़मि Kurmi यानि कुर्मी या कुरमी से पृथक एक जनजाति समुदाय है।

2) विभिन्न अंग्रेजी विद्वानों ने, जैसे कि एच० एच० रिजले, जी० ए० ग्रियर्सन, डब्ल्यू० जी० लैसे इत्यादि ने भी इस बात को प्रमाणित रूप से सत्यापित करते हुए कहा कि कुड़मि जनजाति है कुर्मी या

कुरमी नहीं।

अत: हमलोगों ने यह पाया कि हमारे समुदाय का नाम त्रुटिवश गलत लिखा हुआ था, जिसके तहत अंग्रेजी में Kurmi और उसके हिंदी रुपांतरण में कुर्मी, कुर्मि, कुरमी या कुरमि लिखा गया और उसी क्रम में लोग अब भी गलत लिखते आ रहे हैं। इस वजह से दिग्भ्रमित होकर सरदार पटेल तो काट ही दिये, साथ ही साथ रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया (RGI) भी बार–बार गलत नाम से पिटिशन देने के कारण अस्पष्ट नजरिये से उसे अस्वीकार करता रहा और एसटी कमीशन भी हमारे एसटी इन्क्लूजन पिटिशन को रिजेक्ट करता रहा।

इसके बाद हमलोग नई दिल्ली में आरजीआई से भी दो–तीन बार मिले, जब उन्होंने साफ–साफ शब्दों में यह कहा कि कुर्मी (कुरमी) जनजाति नहीं जाति है और इसलिए उसे अनुसूचित जनजाति (एसटी) की सूची में शामिल नहीं किया जा सकता है, क्योंकि एक जाति को कभी जनजाति की सूची में शामिल नहीं किया जा सकता है। फिर जब हमलोगों ने डॉक्यूमेंट्स दिखाया और कहा कि हमलोग कुर्मी या कुरमी नहीं बल्कि कुड़मि हैं, तब उन्होंने कहा कि ठीक है तब इसपर विचार किया जा सकता है।

हाल ही में 15 जून 2020 को महामहिम राष्ट्रपति महोदय को कुड़मि नाम से समूचे डॉक्यूमेंट्स के साथ एक मेमोरेंडम भेजा, जिसपर विचार हो रहा है। अत: हमारे छोटानागपुर पठार यानि कि झारखंड के कोल्हान, उत्तरी छोटानागपुर, दक्षिणी छोटानागपुर एवं संताल परगना प्रमंडल; प० बंगाल के पुरुलिया, बाँकुड़ा, मेदिनीपुर एवं झाड़ग्राम जिला; ओड़िशा के क्योंझर, मयूरभंज एवं सुंदरगढ़ जिला के अलावे असम एवं अन्य स्थानों पर माइग्रेट समस्त आपुस कुटुम स्व समुदाय गुसटिधारि (टोटेमिस्टिक) कुड़मि जनों से निवेदन करुँगा कि उपरोक्त तमाम तथ्यों पर बारिकी से विचार करते हुए अपने समुदाय का नाम कभी भी कुर्मी या कुरमी (Kurmi) ना लिखें, हमेशा कुड़मि (Kudmi) ही लिखें।

आपलोगों को बता दें कि हमलोगों के जाँच से पता चला कि 1913 के नोटिफिकेशन में जो हमलोगों का नोटिफिकेशन हुआ था, वो 'कुड़मि' नाम से ही हुआ था, लेकिन अंग्रेजी में 'ड़' अक्षर का विकल्प नहीं होने के कारण ड़ अक्षर के लिए r का प्रयोग करते हुए Kurmi लिखा, वैसे ही जैसे खड़िया को Kharia लिखा।

हमलोगों ने अब स्पष्ट रूप से पाया कि हम **'कुड़मि'** जनजाति समुदाय हैं और हमारी जनजातीय मातृभाषा **'कुड़मालि'** है। यहाँ भी स्पष्ट है कि जब हम कुड़मि हैं, कुर्मी या कुरमी नहीं, तो हमारे भाषा का नाम भी कुड़मालि ही होगा, कुरमाली कतई नहीं।

इसके अलावे हमने हमारे दस जेनेरेशन (10 पीढ़ी) के पीछे के लोगों को ट्रेस करने का कोशिश किये। इसमें सारिगत ठाकुर दास महतो 10 साल तक लगे रहे। विभिन्न माध्यमों से अवलोकन करने पर स्पष्ट हुआ कि हमलोग प्रकृति के पुजारी हैं, आकृति के नहीं और इसलिए हमलोग प्रकृति महाशक्ति को ही भगवान या ईश्वर मानते हैं। अत: हमलोगों का धर्म भी जाति या वर्ण व्यवस्था से परे प्रकृति धर्म है।

अंत में आप सबसे यही निवेदन है कि समाज के अस्तित्व और हक अधिकार की रक्षा के लिए उपरोक्त तमाम तथ्यों पर बारिकी से गौर करते हुए अपने पहचान को डिस्टिंक्ट करें और **हर हमेशा जाति (जनजाति) – कुड़मि (Kudmi), भाषा (मातृभाषा) – कुड़मालि (Kudmali) और धर्म (धरम) – प्रकृति धर्म को ही मानें, कहें और लिखें। धन्यवाद।**

एसटी इन्क्लूजन और आकुस

बैजनाथ महतो मुतरुआर
केंद्रीय सचिव
आदिबासि कुड़मि समाज

ज्ञात हो कि भारत आजादी के बाद एवं नये संविधान लागू होने के बाद जब 06 सितम्बर 1950 को कुड़मि समुदाय को अनुसूचित जनजाति की सूची से किनारे लगाया गया, तब से और इधर पिछले चार दशकों से छोटानागपुर पठारी क्षेत्र के कुड़मि समुदाय के लिए **ST INCLUSION** की मांग जोरदार तरीके से भारत सरकार एवं राज्य सरकारों से किया जाता आ रहा है। किंतु केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा इस संवैधानिक मांग को अभी तक नजरअंदाज ही किया जाता रहा है। हाल के दिनों में भी **ST Inclusion** के सवाल पर कई कुड़मि संगठनों द्वारा आंदोलन चलाया गया, किंतु ना तो राज्य सरकारों ने और ना ही केंद्र सरकार ने ही कोई सार्थक सकारात्मक पहल किया। ऐसी स्थिति में कुड़मि और कुड़मि संगठन अब करें तो क्या करें? ये एक कुड़मि समुदाय के लिये विचारणीय एवं सोचनीय गंभीर विषय बना हुआ है। इसलिए इस समस्या के निदान के लिए आदिबासि कुड़मि समाज (आकुस) ने झाड़खँड उच्च न्यायालय के रांची पीठ में "कुड़मि एबोरिजिनल पंच" द्वारा दायर याचिका की सुनवाई पूरी होने तक संयम बरतने और फिर निर्णायक रणनीति अपनाने का विचार किया है। तबतक जमीनी स्तर पर जनजागरण अभियान को चरम तक पहुँचाने का काम किया जायेगा।

चूंकि हमारी लड़ाई संवैधानिक है, इसलिए हम कुड़मि समुदाय के लोगों को रांची हाईकोर्ट में अपील रिट याचिका की सुनवाई का इंतजार करना चाहिए। साथ ही साथ कुड़मि समुदाय द्वारा अपनी पहचान को बनाये रखने के लिए कुड़मि की भाषा संस्कृति व नेग नीति पर आधारित कार्यक्रमों को निरंतर चलाते रहना चाहिए। इस दिशा में आदिबासि कुड़मि समाज ने झाड़खँड, प० बंगाल, ओडिशा, असम व दिल्ली एनसीआर में अपनी भाषा संस्कृति की मुहिम को बगैर कोई विकृत रूप दिये निरंतर चलाते रहेगी। कुड़मि समुदाय की भाषा संस्कृति पर साकारात्मक सोच रखने वाले तमाम कुड़मि भाईयों–बहनों एवं कुड़मि संगठनों से अपील है कि आदिबासि कुड़मि समाज के इस साकारात्मक सोच का साथ दें और समाज के बीच निरंतरता के साथ काम करते रहें। यकीन है कि कुड़मि समाज अपने मिशन पर बहुत जल्द ही कामयाबी हासिल करेगा।

कविता

सिड़रि (हेंठि)

सिड़रि करा एइसन, जेसे दुनिआ गलट हेइजाक।
सिड़रि एइसन हउक जेसे भमटाउ सहि हेइजाक।।
मरु (सहार) भुञएँ नदि बहे लागउक।
खिल खेत, बाइद हेरिहर हेउए लागउक।।
सिड़रि हउक एइसन, जेसे सभे भखा के झिके मिलउक।
सिड़रि हउक एइसन, जेसे कांदअताहार के हँसाइ देउक।।
भरसा देहाक एइसन, काकरअ नि भांगेक अकर आस के।
हाथें हाथ देहाक एइसन, काकरअ थकल गड़ेक धाँप के।।
सिड़रि हेउक एइसन, धुंधे टाउ बइठा बरि जाइक।
सिड़रि हउक एइसन, जेसे डहरेक पाखना हिलि जाइक।।
सभे काथाञ मुड़ नउआइ, मानि लेउआ बुजदिलि हेकेइक।
बारे बारे सिड़रि करा टाउ, बेजाञ जडुरि लागेइक।।
सिड़रि हेउक एइसन, जेसे साचा कबउ लुकाइक नि।
सिड़रि हेउक एइसन, सतइअ डहर कबउ थामभक नि।।
सिड़रि हेउक एइसन, हाइर जिते गलट हेइजाक।
सिड़रि करा एइसन, जाँक टाउ सुगम हेइजाक ।।
सिड़रि करा एइसन, बेजाञ टाउ उलार हेइजाक।
सिड़रि करा एइसन, जेसे बेसुरत टाउ सुधड़ हेइजाक।।
सिड़रि करा एइसन, जेसे रतनाकर ले बालमिकि हेइजाइ।
सिड़रि करा एइसन, जेसे आंधार ले आलअ भरि जाइक।
सिड़रि करा एइसन, जेसे तारिआ पाथिमें नाभे लागत
खिआल काकरअ पुरन करे, तहरे संग चनहा करे लागत।।
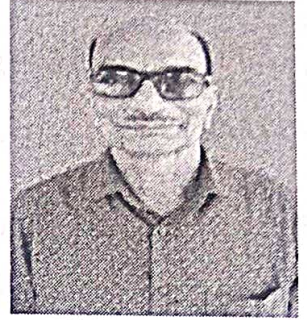
गनेसर बंसरिआर
केन्द्रीय कोषाध्यक्ष,
आदिबासि कुड़मि समाज
संरक्षक,
झारखण्ड कुड़मालि भाषा
विकास परिसद् चक्रधरपुर
9934373421

साद खाउआ आर जनम बेराक नेग निति

गनेसर बंसरिआर
केन्द्रीय कोषाध्यक्ष,
आदिबासि कुड़मि समाज
संरक्षक,
झारखण्ड कुड़मालि भाषा विकास परिषद् चक्रधरपुर
9934373421

कुड़मि सामाजें "साध खिआ" नेग आहेक ।
कुड़मि लकें सात मासें साध खाउआथिक ।
काँहु–काँहु आठ मासेउ खाउआजाक ।
कुड़मि नेग निति अनुजाइ तिन रकअमेक साद खउआएक दसतुर आहेक :–

i. आपन घारें सादखाउआ
ii. माञ घारेक लके सादखाउआ
iii. बंधु घारेक लकजनेक दुआरा साद खाउआएक ।

कुड़मि सामाजें असुसार मेहारारु के छउआ नि जनमाउएक तड़िक नउतन लुगा पिंधेक माना आहेक।
असुसार अबसथाञ जेनि–मरद दुइअ लक के कनअ जिउ मारेक, कनअ सासन बा मुरतिकाञ काकराअ घार जाउआ, केउ मरले अकर नामे घाट जाउआ, मुंडन, कनअ जाहिर थान बा गहाल घारेक पुजाञ उहाँ देउअल पुजाक भग बा मास खाएक टाउ माना आहेक ।
कनअ घारें छउआ जनतलें "छुतका" हेलेक कहा जाक ।
छुतका दुर करेक हतें जात करेक नेग आहेक। उटा के नारता कहा जाक। नअ दिनें नारता करेक नेग आहेक। बिसेस कारअने छह दिनेंउ करा जाक ।
छउआ जनमअ लें समाजें जात संसकारेक आपन बिधि बिधान आहेक ।
जन घारेक कुठरिञ छउआ जनमेइ, उ कुठरि टाके आँतुर साल कहथिक। इ कुठरिञ धाइ–माञएँ घारेक आरअ जेनि गिला के डाकि–हाँकि के आपन आपन काम करत जेसे भालअ भाबे छउआ जनमाउनि माञ दइ भाग हेइ के छउआ जनमाउतेक ।
जेसने छउआ जनमेइ काँसा थारि पिटिक बा घारेक छाइन ढाड़ाउएक नेग आहेक ।
पआति जेनिक बिसेस खिआल राखेक हिसाबे अकर काने सेइरसा तेल, रसुन दिआ मरल सेइरसा तेल बा रेहु माछेक पित कर बेबहार करा जाक। जेसे अकर गात–हाथ गरम रहतेक, नाड़ि–नाटिका भालअ भाबे चलतेक ।
जनम छउआक नाड़ि धाइ माञएँ काटेइ आर अकर नाड़ि के सुताञ बांधि राखेक नेग आहेक ।
सभे ले पहिल छउआ के मधु गुड़ खाउआएक नेग आहेक। मधु खाउले पेटेक सभे गारदा बाहिर हेइ जाक।
माञएक थन ले दुध नि बाहराले काँटा साग कर पतुआ सिझा, अल सिझा, कुड़थि दालेक पानि आर रसुन खाइलाइ देउएक दसतुर आहेक।

पआति के दिने एक बारेइ दुइ पहरे भात खाइलाइ देउअल जाक। संगें रहेक रसुन, अल सिझा आर पिउएक लाइ एक घटि पानि जाके कुड़मालिञ ''उतरह पानि'' कहा जाक। कनअ पउआति माञ जदि भुखे छटपटाइ हेले अके सांइझ बेरा भुजल चुड़ा बा खइ (लाउआ) खाइलाइ देउअल जाक। कुड़मालिञ खाना टाके '' हुँडग'' कहा जाक।

छउआ जनम हेल बा पाँच दिने ''पाँसबाढ़ा'' नेग करा जाक। इ नेग टाके जाइत संसकार कहा जाक। पाँसबाढा दिन बिहाने धाइ माञ आउएइ। पआति घारेक कुठरिञ आइग जराउएइ आर निझाउएइ। हुँआक सभे बानि, आध जरा काठ गिला के एकटा माटिक हांड़िञ भरि राखेइ। अकर परे कुठरि के गबर देइ के लिपि पति साफा करेइ। फिन छउआ/छउआनि के सिनाउअत। छउआक माञ कर चुइल अँचड़ि, सिंते सिंदुर आर आँइखें काजर लागाइ देक। पआति आर छउआक झडल चुइल, सिंदुर, काजर, कांकुआ, आरसि आर कुठरिक जबरा हेनतेन के हाँड़िञ भरि के उ हाँड़ि टाञ तिन टिका सिंदुर देइ के उहाँ एकटि भेलुआ भि देउएक नेग आहेक। इ सब भरल हाँडि बा आटिका के निधुम राइतें कनअ चक चउराहाञ बा बांस झाड़ बा कनअ गाछ तरें फेकि देउआ जाक ।

नअ दिनेक दिने सुइद हेउएक नेग टाके नारता कहा जाक काँहु–काँहु बिसेस असुबिधा हेले छ दिनेउ करत। बिसेस समइ लेइ के नाड़ि झड़ले जाञ एगारअ /तेरअ /पनरअ दिनेउ करल जाक। नारताञ छातार (नापित) आर धबा–धबिन के डाकेक दरकार हेक। अखरा नि हेले सुइद नि हेक।

बिसेस करि पहिल छउआ जनम हेले माञ घार लें, बेटि–जउआञ, जनमल सिसु छउआ आरअ आरअ घारेक सभे लकेक लाइ नउतन लुगा फाटा आनेक नेग आहेक ।

नारता दिने चुइल आर नक टुंगा करेक बादे छउआक माञ आर सभे बेटि छउआ सिनात । सिसु छउआकेउ मुंडरा करा जाक। मुंडरा करल चुइल गिला के धाइ बुढ़िञ पातेक दोनाञ राखेइ आर छउआ के सिनान कराउएक। अकर बादे तिन टा पातेइर हेठ उपर राखि के दुइटा पातेइरे उसना चाउर आर एकटा पातेइर आरुआ चाउर आर तिन गाठा हेरेइद आर किछु टाका राखेइ। अखर सभेले उपर एकटा गामछा बिछाउएक नेग आहेक। धाइ बुढ़िञ छउआ के उहाँ सुताइ देक। घारेक दादा, कुटुम बा गुरुजने छउआके उठाइ के बुढ़ा –बुढ़ि घारें भिरराइ के नमअ कराउएक नेग आहेक। अकर बादे खाटि बा बिछनाइ सुताउथिक। खाटि हेठें चुइल आर भेलुआ पड़ाइ के धुँगा करेइक नेग करत। कुड़मिक बिसास अनुजाइ छउआ के एसन करले कनअ नजर–बजर नि लागेइक।

छउआक माञएक सिनान करा नेग– छउआक माञएक सिनान कराउएक आगु सभे बेटि छउआञ नक टुँगाउथिन। आर धाइड़ के धाइड़ हेइ के आगु–आगु छउआक माञ, अकर पेछुञ आरअ सभे जेनि बाँध , पखेइर बा नदि सिनाइ जात। संगे मुंड़ घँसे साबन, तेल हरद लेगत। पुजाक जिनिस आंड़ा (डिम), सिंदुर , सेइलता, काजर हेनतेन लेगा जाइक। धाइ माञए मुंडरा करल चुइल, नाड़ि हेनतेन गिला के माटिञ तपि देक। पानि धारिञ बुसिनि /नाजिबुढ़ि पानि देबि कर पुजा करत। पआतिञ पुजा थाने तिन थर गड़ लागेइ । अकर बादे पआति के सिंते सिंदुर पिंधाइ के घार आनथिक। डहरे कइर काँटा बा गाछ तरे बा गबर उपरें तिन थर पआति के आपन थन ले दुध ढाइर देउए हेक।

आँख फुटा नेग– पआति भितर घारलें दुइ टा दनाञ हेंड़िआ रसि आर एकटाञ पानि लेइ के घार दुआर बाहिराके हेंड़िआ रसिक दना गिला धाइ माञ के पिउए देइक। एकटा दनाक पानि मुह धउए देइक।

काजर पिंधा नेग– नारताक घुरि दिन काजर पिंधा नेग फुफुञ करेइ। जनमल सिसु छउआ के काजर

पिंधाउएक हक कुड़मालि नेगाचारिञ आहेक। ऐहे नेगे फुफु के कनअ बकसिस देउआ जाक। **एकअइसा**–एसन तअ नारता दिने घार गुसटिक लक जनेक छुतका मेटि जाक मेनतुक पआति आर छउआक छुतका नि मेंटि थाकेक। **एकअइसा** नेग 21 दिनें करा जाइक। नारता दिनेक लेखनेइ धबि छातार के डाका जाइक। पआति के नारता दिनेक लेखनेइ सिनाइ लेगथिक आर पुजा पासा करि के घार घुरत। एकअइसाक घुरि दिन छउआ के बिहाने एकअइसा दाग देउअल जाइक। इ दाग टा चिड़ि काड़िञ बा सिहड़ि काठे दागेक दसतुर आहेक।

मुँ जुठान– एक बछर हेइते–हेइते कनअ सुभ दिन बाछि के छउआक मुँ जुठान करा जाइक ।

कुड़मालि झुमेइर गित

जइपरकास बँसरिआर
जिला उपाध्यक्ष,
आदिबासि कुड़मि समाज,
गोड्डा जिला समिति
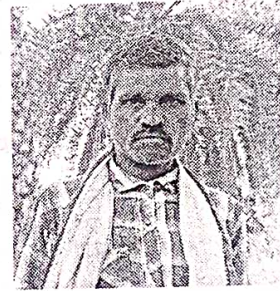
बनेञ के कँद मुल खाएञ, बनेहिं जिनगि बिताएञ – 2
पहिल बास करल झाड़खँड माटि रे, कुड़मि आदिबासि – 2

जँदे जँदे पानिक सत, तँदे तँदे कुड़मिक जत – 2
बन मइधें करल कुड़मि खेति रे, कुड़मि आदिबासि – 2

कल कुड़मि आरअ कड़ा, बेद सासतर छाड़ा छाड़ा – 2
आसाड़ मासें करअहइ पाँचाटि रे, कुड़मि आदिबासि – 2

करम पुजा धरम पुजा, बरद खुँटा सारहुल पुजा – 2
बाप दादाञ पुजल सारइ गाछि रे, कुड़मि आदिबासि – 2

कुड़मि हामे जंगलि दादा, पिंधअइ पिंधना सादा सादा – 2
जेनि मरद नाचेइ झुमेइर नाच साँगाठि रे, कुड़मि आदिबासि – 2

मिछा सेखि (केहनि)

शंकर लाल बंसरिआर
सदस्य,
आदिबासि कुड़मि समाज
अध्यक्ष, कला संस्कृति विभाग,
झारखण्ड कुड़मालि भाषा विकास परिसद् चक्रधरपुर
9661150695

गुजुड़ बने, एकटा बड़का बांदर, चिंपु रहेइ। उ आपन के बेजाञ बड़अ बुइधा आर दमगरिआ भाबेइ। अकर चाइल चलअने सेंखि फुटानिक ठेकान निहिं। एक दिन एकटा गाछें, इ डाइर लें उ डाइर लें उ डाइर कुदि बुलेइ हेलाक नअ, दस बारह टि रमि (मइना), चारा खजि खजि, अहे गाछ हेठें आर, फुदके लागला। चिंपु उपरे डाइरें डाइरें कुदेइत रहेइ न हटात अकर हात डाइर लें पुचकि गेलेइक, धड़ाम से भुञें गिरलाक। जेसनेइ उ खसलाक रमि गिला भदकि फुरर सें उड़ि पाराला। एक गठ रमि के उड़ि पारात थानाइ, चिंपु आकचाकाइ गेलाक। मने मने भाबलाक – 'आरे बाह ऽऽ, मञ कतेक बलिमान हेकअँ। मके देखि, एक गठ रमि उड़ि पाराला। ''मने मने बेजाञ रिझालेक।

चिंपुञ आपन बाँहि गड़ छाति के नजराइ, मचकाइ हेइ लागलाक। कहि उठलाक – ''बाह ऽऽ, मर बाँहि, गड़, छाति तअ, दारा सिंग जेसन मचड़ाइ उसकि उठअलाहेक। मके एखन आर केउ नि पारता।'' उ रिझें उदकि फुदकि घारेक डहर धरलाक। बाटें किछु खेड़िआ छउआ रा खेलाइ हेला। अखरा थानाउलेथिक जे, चिंपु रिझें उदकि आउएइ साहे। पास पहँचेतकेइ छउआ नि पुछलेथिक – ''आरे चिंपु दादा, आइज तअ बेजाञ रिझें जानाहिस? किना हेलेइक?'' चिंपुञ मचकाइ हेइ कहलाक – ''अरे छउआ नि, देखेइहा नअ, मर बाँहि गिला? सालला ऽऽ दस बारअ टि रमि (मइना), मके देखेइतके डरें उड़ि पाराला। हाऽऽहाऽऽहा।

छउआ रा अबाक! एकटा छउआञ कहलेइक – ''हँ, दादा, सतेइ तञ बेजाञ पहलमान लागअहस। हामरा कउ डर लागेइस।''

चिंपुञ छाति फुलाइ कहलाक – ''अरे बाबु नि, तहरा काहे डराइहा? तञ मर छटअ भाइ सारिक हेकिआ। तहरा के जदि केउ किछु करबअथुहुन, तअ मके कहिआ, अखर घानि घुराइ देबेञ।''

एक दिनेक काथा। चिंपु आपन मनेक गुमाने, बन भितरें गिरदि बुलेइ हेलाक, नअ बनुआ भुला कुकुरें थानाइ पाउलेक। अञ अके हालसि इड़काउलेइक। चिंपु डरें हाबड़ि काचड़ि इड़कअलाक। आगुञ आगुञ चिंपु, पाछुञ पाछुञ भुला। जिबन बाँचाउएक जहें, चिंपु एकटा आम गाछ के चड़हि गेलाक। भुला गाछ तरें अखड़ाइ भुके लागलाक नअ हटात, भेलकि भालुके, चाइरटि छउआ लेइ के अकर दिगेइ आउएइतके थानाइ पाउलेइक। भुला कुकुर लेंज चिपि उड़ि देलेइक। अखरा सभे गाछ हेंठ पहँचअला नअ, हेठें पाकल आम

छाइताड़। थानाइ, उपरलेइ चिंपुञ कहलेइक :– ''एहअ, भेलकि दिदि। जतेक मन पेट भरि झिका। मञ आम झिके चड़हअ रहअँ ना, धुर फाराक लेइ तहरा के थानाइ गटेक पाकल आम गिराइ देइ रहलिञ, तर छउआ पुताञ झिकता बेलि। ''भेलकिञ कहलि –''हँ बाबु तञ बेस धरअमेक काम करले। मर छउआ गिला भुखें आटुपाटु हेइ हेला। तरे देइके एखर जिबन घुरलेइक।'' गाछ लें नाभि चिंपुञ कहल – ''आरे दिदि, मञ रहेइतके भाभिस ना। जखन जेटा दरकार कहबे। मके सभेइ डरात आर मानत।

जेसे जेसे दिन जाइते लागलेइक, तेसे तेसे अकर मनेक गुमान बाड़हेइते गेलेइक। कनअ समइ आपन सेखि – बड़ताइ बाखनाउए नि बिसरेइ। एक दिन हरना–हरनि रा पानि ढके घाट जाइ हेला नअ भुखल बाघें थानाइ पाउलेन। उ चुपें चापें जाइ अहे घाट पासेक बुदाञ छुपि जहे लागलेइन। हरिन रा पानि ढकि उठेइ हेला नअ, भुखल बाघ झाँपें दाँड़ालाक। ठिक अहे बेराञ, उहाँ चिंपु जार पानि ढके पहँचलाक। अञ भुखल बाघ के थानाइ पाउलेक। कहलेइक – ''कि हअऽऽ बाघुत मामाऽऽ, तहराउ पानि ढके आइलाइहा?

बाघेक नाम सुनि हरिन रा चमकि, बासात बेगें, इड़कअलें पाराला। बाघेक नाम सुनि, हरिन रा चमकि, बासात बेगें, इड़कअले पाराला। बाघेक हेलेइक राग। गरजि कहलाक – ''साला हारामजादा माकड़, तरे देइके मर मुहेंक मांस पुचकअलेक, आइज तकेइ मचड़अबअँ। ''एतेक कहि अञ चिंपुक दिगे झाँपले आउलाक। चिंपु डरे थरथराइ लागलाक। जिबन बाँचाउएक खातिर उ, अहे पासेक एकटा ताल गाछ के चड़हि गेलाक। भुखल बाघ झपटि आइ उ गाछ के चड़हे चेसटा करलाक। मेनेक सजहअ सहलअ ढाँगा गाछ के उठे नि पारलाक। रागें गाछ टाके दुइ थापड़ देइ चलि गेलाक। चिंपु सुकुड़धुम, थर थर कापे लागलाक। जखन बाघ मामा बेजाञ धुर बन भितर ढुकि गेलाक, तखन उ सुगुमें सुगुमें, नाभि रिटपिटाइ के रिंगलाक। रिंगेइत रिंगेइत के थानाइ पाउलेइन जे, आगु बाटेक बन टाँइड़ें, हरिन, बाँदर, हनु, भालु, खेड़िआ हेनतेन जिउ रा गठालाहात। उ थुमालाक आर पासेक गाड़हिआञ, हात मुँह गड़ धइ के सासटम हेलाक आर आगु दिगे डहरअलाक। टाँइड़ पहँचेइतकेइ सभे जिउएँ घेरि लेलथिक आर घटन टा पुछे लागलेथिक। चिंपु खिटखिटाइ उठलाक आर **मिछा सेखि** फाँदलाक :– ''अरे भाइ रा, उ तअ मर मामा हेके, मञ अकर भेगना। हामरा मामा भेगना गबचि बेजाञ गाल मारलिहअ। सुख दुख देस मुलुकेक बेजाञ काथा। मेनेक अकर मने एतनेटाइ पसतान रहि गेलेइक, जे मर देइके अकर मुहेक मास पुचकि गेलेइक, नि हेले एक दुइ टि हरिन के धरेइतेलेइन।''

हरिन रा अकर गड़ तरे खसि कहला –''हँ, हँ, निसटाइ चिंपु दादा, तरे देइके आइज हामर जिबन बाँचलि।''

चिंपुञ बाँहि मचकाइ कहलाक –''अरे दादा भाइ, दिदि बहिन रा, मञ रहेइत के इ बनें तहरा के केउए किछु नि करबअथुहुन, मके सभेइ जानत आर मानत।''

सभे जिउ राञ अके बेजाञ साबाइस देलथिन। उ छाति फुलाइ बाँहि मचकाइ आपन वासा दिगे उजालाक। मने मने भाभलाक, ''एखरा सभे मुरुख हेकत, इहाँ मर जेइसन सिआन चतुर केउ निहिं।

एहे डुल बड़का बाँदर, आपन के बेजाञ सिआन आर चतुर भाभे लागलाक। गरब आर सेखिञ मुंड नि नएइ हेलेइक। अहे बन लागल एकटा गाँउ रहेइक जे ठिन गँझु चासाञ आपन बाड़िञ जनहाइर लागाउअल रहे। भादर मासें जनहाइर गादराइ–पाके लागलेइक देखि थानाञ बनेक छटअ बाँदर रा लालाइ मरला। खाइएक लभें जिब गिलाञ छेप दगदगाइ टिपके लागलेइक। मेनेक मसतअ तेल खाउआ ठेंगा लेइ गँझु बाड़ि अगरि रहेइ। अकर अहे ठेंगा भलि बाँदर राक हेकड़ि गुम रहेइन। सभे बाँदर रा एकटा गाछ हेंटें जँहड़ि गाल–साल करेइ हेला, नअ बड़का बाँदर पँहचल। अञ अखरा के पुछलेइन :– काहे तहरा इहाँ गठालाइहा? बाँदर राञ कहला :– "गँझुक बाड़िञ जनहाइर बेस गादरा लाहेइक, झिकेक तेहें लार टिपकेइसाहि, मेनेक अकर मसतअ ठेंगा थानाइ के करजि काँपेइसाहि। दादा तहिं पारबे किछु उपाइ बाट करें।"

बड़का छाति टा फुलाइ ढाम मारलाक :– "आरे इटा तअ मर कानि आँगुरेक खेइल! उ मर मिता हेके। तहरा रिचेक दम धरा, मञ जाइ के अके फेरिआउहेञ। मर नि घुरेइत तड़िक सुगुमे रहिआ, कनअ बाँदरामि ना करिहा।"

एतेक कहि बड़का गँझुक जनहाइर बाड़ि दिगे खँसरअलाक। फाराक लेइ थानाउएइस जे गँझु गाछ हेंटें मसतअ ठेंगा के टेंडराइ, तामुक मसटि–मसटि गबचअलाहे। ठेंगा थानाइ के अकर पिलहइ काँपि उठलेइक। आड़ालें हेसड़अ हेइ गबचअलाक। बुझे नि पारेइस जे किना करम किना नि। हेनअ–जगें गँझुक जेनि तर–तराइ के आउलि आर मरद के कहलेइक :– "समधि रा आउला बेगि चाला।" गँझु तर–तराइ के उठि ठेंगा धरि जेनिक पाछु–पाछु घार डहरअलाक।" बड़का बाँदअरेक नजर ठेइरकलेइक। अञ लुकि–लुकि जाइ पाँदाइड़ लेइ अखर टउआ लेइ लागलेइन। हिंदे दुइअ समधि भेंटा–भेटि, आँकड़ा–आँकड़ि, गिजड़ा–गिजड़ि। जेनिञ पानि घटि देइ आँगनाञ पिंड़हा बिछाइ देलेइन। समधि रा गबचअला। जेनिञ दुइ डुभा हेंड़िआ आर चाखना मुहाइ कहलेइन :– "मञ सिनाइ जाहँ, घारें आर केउ नेखत। तहरा नुड़ेइत रहा, बेगि घुरम।"

गँझु :– "बेगि घुरिस, उदिगे बाड़िञ काकउ ना थानाउले बनुआ जिउ राञ जनहाइर खाता।"

जेनि :– "हँ घुरम, एसनउ एखन केउ नि सामाता।"

हिंदे दुइअ समधि गपि–सपि हेंड़िआ रसें माताइ लागला। बड़का बाँदअरेक गेधि चटकअलेइक। बुझे पारलाक जे इ अमरित रसें एखरा आर उठे नि पारता। सुगुमें खँसरि हिड़कअलाक बाँदर गठें, आर कहलेइन :– "देखलेहे! मके कने नि जानत आर मानत? मञ गँझु बुड़हा के मानाइ आउलँ, अञ तहरा के जनहाइर झिके देतअहन, मेनेक जतेइक चाँड़े पारेइहा, जनहाइर तड़ि पाराइ आउआ। काहे ना बिलम हेले आन जिउ रा जार सामाता। असन हेले अञ आर काकउ के नि देतअहन।"

बाँदर रा रिझें उदकि उठला आर चाँड़े–माड़े तरतराइ के जनहाइर बाड़ि इड़कअला आर जने जतेइक पारला, जनहाइर तड़ि घुरि आउला। अखरा बड़का बाँदअरेक बेजाञ गुन गाउला। बड़काक सेखि आरअ चाइर–गुन बाड़हि गेलेइक। छाति मचकाइ–मचकाइ चले लागलाक।

एक दिनेक काथा, एकटा बड़अ महुआ गाछतरें बेजाञ गटेक जिउ राक छउआ गिला खेलाइहेला। हेनअ जगें उहाँ भुँडा सिआर बुइदा पँहचल। आर एक धाइर दिगे बेसि छउआ गिलाक खेइल भाले लागलाक। हटात गाछ उपर दिगे हुलकअलाक नअ आगटुहिञ एकटा बड़अ महु छाता थानाइ पाउलाक। अकर मुहें लार टिपके लागलेइक, मेनेक पाड़ताक कने? अहे बेराञ उहाँ चिंपु पँहचअलाक। बुइदाञ अके डाकलेइक आर कहलेइक :– "आरे चिंपु भाइ बेस आहिस न?"

चिंपु :– हँ दादा बेस भालअ आहँ।

बुइदा :– एखन काम–धाम किना चलेहेइक?

चिंपु :– आरे दादा, मके तअ जानिस, आइज एकर सेबा, काइल अकर सेबा।

बुइदा :– हँ रे, महुँ तर नाम बेजाञ सुनले आहँ। तके सभेकाइ मानथु आर माइन देथु। काथा पदें परेक उपगारें दउड़ि जाइस।

चिंपु (छाति टा फुलाइ) :– "ठिकेइ सुनले दादा, मञ जे ठिन रहम उहाँ सगुनेइ–सगुन। मर बिना काकरअ काम फेरिआक निहिं।

बुइदा :– हँ बाबु, तर लेखेन चालाक–चतुर, बलिमान इहाँ केउए नेखत, जेञ साराखन परेक कामें एकतिआर रहत। हँ तअ भाइ परसु दिन मञ गधि दिदिक घार गेले रहलँ। अञ मके एक बारे निरला नउतन महुगुड़ ढके देलि। बेजाञ सउआद लागलेइक।

मञ अके पुछलेञ :– "हें दिदि एतेक निरला सउआद महुगुड़ काहाँ पाउले?

तखन अञ कहलि :– "आरे बाबु, अहे साल गाछ लें चिंपुञ पाड़ि देइ रहलाक। उ बेचरा बेजाञ भालअ उपगारिआ हेके। जखन जेञ कहथिक, सट ले अकर काम फेरिआइ देइक।

चिंपु :– सते दादा मर छाड़ा आर काकर बुता आहेइक, छाता पाड़ेक? तहुँ कहें ना एखनेइ महुं छाता पाड़ि देहँ। कतेक लक के देलेआहेन।

(अकर काथा सुनि सभे छउआ रा गठाइ गेला)

बुइदा :– आछा चिंपु भाइ, जखन तञ छाता तड़िस महुमाछिराञ किछु नि करथु?

चिंपु :– आरे दादा, मर ठिन मनतर–जनतर सभे आहि, एसन मनतर फुँकि देञ नअ, अखरा एकबारे निचड़ हेइजात, हिले–डुले नि पारत।

बुइदा :– सते ?

चिंपु :– हँ दादा, एकदम सतेइ। तञ देखेँ नअ। एखनेइ पाड़ि देहँ।

(अञ जानेइ नि जे अहे मउहा गाछें महुछाता आहेइक)।

तखन बुइदा सिआरें उपर दिगे अँ।ुर देखाइ कहलेइक :– चिंपु भाइ अहे आगटुहि दिगे थानााउएँ।
(सभे उपर दिगे हुलकअला नअ आगटुहिं एकटा बड़अ महुछाता देखालेइक, सभे छउआ रा रिझें उदके लागला।)

एकेइ संगे कहे लागला :– चिंपु काका चिंपु काका, तञ तअ बेजाञ बलिमान आर उपगारिआ हेकस, छाता टा पाड़ि दे ना, महुगुड़ खाइएक बेजाञ साद आहि।

बुइदाञ जार पाग देलेइक :– हँ रे चिंपु भाइ छउआ भगबान समान, एखरा रिझालें बेजाञ धरम हेइक। जाञ चड़हें, पाड़ि देहिन।

चिंपुक सुकुड़धुम, करताक किना? एखनेइ निजेक बड़ताइ करले आहे। बड़अ–बड़अ गाल मारि सिराउलाहे, छाता नि पाड़ले सभेकाइ अके छि–थु करबेथिक।

भितरें डराइ, उपअरें सेखि मारि कहलाक :– हँ हँ सबुर करा एखनेइ पाड़ि आनि देहन।

(मन मारि गाछ चड़हि गेलाक। डराइ–डराइ छाताक पास पँहचि गेलाक, जेसनेइ छाता टा छुँञ देलेइक रागें माछि रा भिन–भिनाइ उड़ि उठला। गाछेक हेंट उपर छपरि गेला। हेंटें रहल छउआ गिला चिलचिलाइ के दउड़ि पाराला। बुइदा सिआरेक देखा–दरसन निहि। उ दिगे चिंपुक गड़ा गातें लटकि एइसन बिंधे लागलेथिक जे अकर करजि पिलहइ जलि उठलेइक। इ डाइर उ डाइर हाबड़ाइ थाबड़ाइ डेगि नाभलाक। चाइरअ दिगे हाचड़ाइ काचड़ाइ रिंगे लागलाक। हेले आर छाड़ेहेथिक? जँक जेइसन लटकि रहअ लाहथिक। आर कनअ दिसा नि पाइ एकटा गाड़हिआञ कुदि पानिञ डुबि देलेइक।माछि रा टुएक बिलम पानि उपरें उड़ि–उड़ि जहलेथिक, मेनेक अके थानाइ नि पाइ पाराला। चिंपु उठलाक नअ थर–थर काँपे लागलाक। गटा गात कँहड़ा जेसन फुलि जले लागलेइक। आइग जेइसन ताति जर आइ गेलेअक। एक मास तड़िक उठे नि पारलाक। धिरे–धिरे भालअ हेलाक, मेनेक अकर **मिछा सेखि** उड़ि गेलेइक।

चास (कबिता)

डाकतार सुधाँगसु सेखर माहतअ बानसुआर,
समाजसासतिरि,
साँउताहार,
आदिबासि कुड़मि समाज, केनदिरिअ समिति।

राढ़ माटिक मानुस हेला, खाटि–खाउआ पुरखेइनि चासा ।
सैंइति के चास–आबाद, बाँचि थाकाइ हेलेन एखर आसा ।।
माघ मासेक आखाइन जातरा के, राखथिक एखरा जहि ।
आढ़ाइ आँतअरे हारपुनहा केरत, सलअ–आना बुझि ।।

इ खेते उ खेते हार जड़त, खिल छटकाउअत खेते।
रहिन दिने ठेकान केरत, मुइठ लेउएक तँते ।।
रपा मासे जाबड़ देथिक, पानि सँधरि खेते।
जेनि मरद भेदाइ थाकत, निजेक निजेक पाँइते ।।

आइड़–कदरा आर हार–कारहा, जगाउअत खालि मरअदे।
बिहिन–मारा आँटि–झिँटा रपा–रपि, पुरेइक बेटि छउआक लहअरे ।।
पेहिल रपा–रपि उचराउथिक, तेल सिँदुर नाँभाइके ।
छटअ–छउआ गिलाइ जहि राखथिन, रपा–भातेक आस लागाइके ।।

भात–तिअन आर नुन–मरिचे, मेटाइअन अखराक भुख आर थकान।
एतेइक टुकुइ जिआइ राखेइन, खाटुआ चासाक आन आर सान ।।
आइड़े–टाँइड़े गबचिके, फिँकाइ देथिक टान।
कादा–खेते पाचाउइआ चासाक, एहेटाइ हेलेइक मान ।।

भिनसारले माँछि–आँधरा तड़िक, लटकि थाकत खेते।
खाटानिक डरे चासा मानुस, नि पेछुआत कनअ मते ।।
रपाक खातिर निकान देथिक, बुनाइ देथिक गाछि।
असने केरि सुसराउथिक, घाँस पात के बाछि ।।

कादा–माटिञ काम केरि, कमर जाइन टाटाइ।
दुइ चाइर टि घँघि–खाँखड़ा, पाउलेइ आपने जाइन सँटाइ ।।
अकर परेउ थकान थाकले, उपाइ लागाउअत आपन बाटेले।
निम कचड़ाक तेल मालिसे, टनटनाइ उठत घुरिदिन बिहाने ।।

बिहान–साँइझ बेड़हाउअत खेत, जगाइ राखेइ पानि।
खेतेक काथा साझा केरत, चुलहा दुआइरे बसि ।।
बागाल समेत छउआ–पुता माँइ–बाप, सभेइ थाकत लटकि।
सभेकाइ कर एकटाइ आस, धान ना जाइहक सटकि ।।

धान जखन झलके लागेइक, मन एखर मलके लागेइक।
गेलेइक जखन पाकि धान, हाँसुआक दाँते देथिक सान ।।
रेतिके नारा गछा गछा, बनाउअत धानेक बिंड़ा।
कुँबा बाँधि अघरा केरत, सहि अगहन–पुसेक ठाँड़हा ।।

टुएक आधेक सुखलेइ नारहा, बाँधत बिंड़ा हुमचिके ।
झिंकनाउथिक अरजल धान, मुड़े–गाड़िञ आर भेरिआइके ।।
ढुकलेइ धान खेरेइए, रिझे हेउअत सभेकाइ ।
लागि पड़त जिअँ–मरअँ, धानेक चाकि सैंइतेलाइ ।।

जिराइ करि उचरन केरत, धान झाड़ा झाड़िक काम ।
मेइजि पिटि माड़ा देइके, झिनगाउथिक आउड़ि आर धान ।।
बेड़े कसटक अरजल धान के, जतनाउथिक डिमनि बाांइधे ।
साबाइसि जानाउथिक डिनिमाँइ के, अगहन–साँकराइतेक राइते ।।

टाँइड़–टिकर बाइद–बेइहारे, सभेटाइ चलेइक चासाक हार।
माटि पाछनाइके केरत चास, हार चलेन दार दार ।।
असने केरिके चलि आउएहेइक, खाटुआ चासि कर चास।
बेजाँइ कसटे दिन काटत, खाटि खाटि बारअ मास ।।

कुड़मालि चारिँइ पुरखेनिआ सँउरन दिन
(Historical Remembrance days in Kudmali Culture)

समभुनाथ माहातअ (बँसरिआर),
साहितकार।
Secretary, West Bengal Kudmali Academy.

हड़रा एसअन दिनगिलिनके सँउरन करि राखअत जन दिनगिलिनँ हड़राक समाजँ कनअ निहि कनअ एसअन बाछनिक घटअना घटअरहेइक जन घटअनाँइ हड़ जिनगानि सुघअड़ आर सुसरँगखले चले साहाइ करअरहेइक। हालँ जेसअन भारत देस इँगरेजराक ठिनले साधिन हेरअहेइक अहे दिनटाक सँउरनँ पालअन करअत, तेसने रेलगाड़ि आबिसकारेक दिन, उड़ागाड़ि आबिसकारेक दिन, पालअन करअत। आरअ देखाइक जँइ रेलगाड़ि आबिसकार करअरहे, जँइ कमपिउटार आबिसकार करअरहेइक, जँइ रेडिअ आबिसकार करअरहे, जँइ टेलिभिसन आबिसकार करअरहे अखराके सँउरन करथिन। एहे सँउरन करेक दिन आर आबिसकार करअइआ हड़गिलिनके सँउरनँ राखे अहे दिनगिलिन आर आबिसकार करअइआराक नामगिलिन पँथिँइ चिसि राखअत। मेनेक आदिकालँ हड़रा जन खनँ चिसापढ़ा करे निहि सिखअरहत उखनँ हड़ जिनगानिक उबगारि निहितअ आबगारि घटअनागिलिन केसअन करि सँउरनँ राखेतेला, एहेटा एकटा डागअर खँच हेकेइक। ससागराक आदिबासि जनजाइतगिलिनँ एसअन चारि पालअन करअत जनगिलिन भेउराउले आदिकालेक कनअ निहि कनअ घटअनाक टअउआ पाउआइक। तेसने कुड़मि जनजाइतँ आपअन चारि माहान बहुत एसअन रिति–निति आर परअब तिहार पालअत जनगिलिन कनअ निहि कनअ आदिकालेक घटअनाक साकखि हेकेइक, काहेनअ एहे चारिक ठेहअड़गिलिन सुघअड़ हड़ समाजेक आदिकालले कुड़मि जनजाइतँ पालि आउअहत। कुड़मालि चारि भेउराइ खदिनदि करले आदिकालेक अहे घटअनागिलिनेक लसिँद हामरा पाइअ, जन घटअनागिलिन हड़ जिनगानिँइ अजगअइबि बदअल आनअरहेइक आर हड़रा हालेक सुघड़ समाज थापना करे पारअरहत। तँइ कुड़मालि चारि भेउराइ देखले हामरा आदिकालेक घटअनाक आदिकथा जाने पारअब।

आमेरिकाक नामजाइजका Anthropologist (नृबिज्ञानी) Melville J. Herskovits ,एँ अखराक Cultural Anthropology (1955) पँथिँइ चारिक धचअर निखराउए जाइ कहअलाहात – हड़ जिनगानिँइ, परकितअ मनेक भाभना आर इतिहासेक ठेहअड़ (उपादान) ले चारि सिरजालाहेइक। तँइ कुड़मालि चारिँअ हड़ जिनगानिक परकितअ साँचा घटअनागिलिन सँजड़ालाहेइक। हेले तअ हामरा सुघअड़ हड़ समाजेक थापनाक ठेहअड़गिलिन चारि भेउराउले खजि पाउअब। बुढ़ा पुरखारा जन घटअनागिलिनँ हड़रा साँगि उबगार पाउएहेला, अहे घटअनागिलिन पँथि निहितअ खाताँइ चिसि राखे तअ निहि पारेहेला – अखरा अहे पुरखेनिआ घटअनागिलिन सँउरे बछअरि समाजेक सभे लकँ जेसअन जानि, देखि सिखे पारअत अहे तँहँ आखड़ा निहितअ टाँइड़ँ घटअनागिलिन दहराइ देखाइ देउएहेलथिन।

हड़रा आगु डाबके डाब घुरेहेला, पेछु पाखनाक खहअड़ैं, गाछेक ढँढ़अरैं बसकअइत करेकले घारैं बसकअइता हेला। चासबास केसअन करि सिरजालाहेइक? कन कामटाक सिरजनेक तँहैं हड़रा उतरे पारअलाहात? एहे निअर खँचेक जबाब अलअटैं पाउआइक निहि। आरअ, केसे चासबासेक कामैं बनुआ जनुआर ठेसाइ सुघअड़ हड़ समाजेक उतरअनिक दिसाँइ डेग देलथिक ? एहे खँचगिलिनेक जबाब अलअटे निहि पाउआइक। चासबासेक कामैं बनुआ जनुआरके कामे ठेसाइ केसअन करि सुघअड़ हड़ समाजेक उतरनिक डहअर फइरछाउला, एहे खँचेक जबाब ढुँढ़े हामराके चारिक पछड़अन निछड़नैं ठेघ लेउए हेउएइ। आर एहे कारअनैं आदिबासि हड़राक चारिक खदिनदि करेक दरकार हेउएइक।

जिउ सिरजनेक पहिल खेप :– हालुक बिगगानैं जेसअन जिउ सिरजनेक इतिहास इँचराउएइते एहे बसमताक सिरजनेक आदिकथा जानाउअहत। बिगगानेक मतैं एहे ससागराटा आगु आइगेक ढेला रहअरहेइक। बहुतदिन बादैं पानिंइ भरलेइक। आरअ बहुत दिन बादैं एहे भुँइ–माटिक सिरजन हेलेइक। आर एहे बसमताक पानि सुरुजेक ताइतैं भाफ हेइकुन फुँदैं उठि पानि बरसे लागलेइक। एकअर बादैं सैंउआल, एक कसेक जिउ सिरजन हेला आर थिरैं थिरैं जिउ जनुआरेक सिरजन हेलेइक। बिगगानिरा बहुत परअख करि कहला – आइझअ सिरजनेक एहे चाइलटा चलेहेइके। बिगगानेक खदिनदिंइ हामरा कहे पारिअ जिउ सिरजनेक पहिल खेप हेलेइक पानिंइ डुबअल बसमताँइ भुँइएक सिरजन। पहिल जन भुँइटा पानिले उठलेइक अहेटाइ हेकेइक पिरथिमिक सभेले उँचअ भुँइ, इटा ठानाक जुकति आहेइक। एहे उँचअ भुँइटाँइ जे पहिल जिउ सिरजनेक निअर हालचाल बनअरहेइक, इटा सिंकार करेइ हेउएइक।

कुड़मि जनअजाइतेक लकैं बड़अ पाहाड़के सिरजनेक पहिल दसाटाके इससर मानिकुन पुजा करथिक। एहे बड़अ पाहाड़ेक पुजा कुड़मि जाइतेक लकैं सँहरअइ परअबैं गहाइल घारैं माटिक ढुला पाहाड़ निअर बनाइकुन पुजा करअत। सँहरअइ परअबैं गरअइआ पुजाक खनैं बाँधअन दड़ि, छाँदअन दड़ि, बड़अ पाहाड़, गअरअइआ आर गअसँइआ राइएक पुजा करअत। कुड़मि जनअजाइतेक पाहाड़ पुजाक आरअ एकटा परमान हेलेइक बुढ़ाबापेक पुजा। कुड़मि कबिलाँइ मड़अपैं एहे पुजाटा करअत। मड़अप भितअरैं पाहाड़ेक ढबैं एकटा पाखना थापना करथिक आर उपअरैं एकटि माटिक हाँड़िंइ पानि भरि टाँगि राखथिक, अहे माटिक हाँड़िटिले बुँदा बुँदा पानि अहे पाखनाक मुड़ैं गिरेइक। मड़अपेक एहे पुजाटा इँचराइकुन देखले पाउआइक – अहे पाखनाटा पाहाड़ेक ढबैं आहेइक, पाखनाक मुड़ैं टिपका पानिटाक सँग पाहाड़ैं बरसअल पानिक ढेसना देउए पाराइक आर गमभिराक सँग पानिंइ भरअल बसमताक ढेसना देउए कुलाइक।

एहे निअर खदिनदि करले देखाइक बुढ़ाबापेक पुजाटाइ हेलेइक सिरजनेक पहिल खेप आर पाहाड़ैं पानि बरसेक घटनाक सँग समफला मिल आहेइक। तँइ एहे पुजाटाइ हेकेइक पाहाड़ पुजा। एहे पाहाड़ पुजाक ढेसनिआ ढबेक सँगैं बसमताक जिउ सिरजनेक पहिल जुइत हालचाल बनेक ठेहअड़ेक मिल पाउआइक, जनटाँइ बुझाइक कुड़मालि चारिक खदिनदि करले बसमताक जिउ सिरजनेक आदि कथा जाने पाराइक।

चासबासके उचरअन दिन :– बसमताँइ जिउ सिरजनेक उचरअनि खनले बहुत दिन बितअल बादैं थिरैं थिरैं बहुत जिउ, जनुआर, पानिक जिउ, खेचअर हेनतेन जिउएक सिरजन हेलेइक, तेसने हड़ेकरअ सिरजन हेलेइक। हालेक समइएक जिउ, जनुआर आर हड़रा तअ आचकाइ एतना उतरअले नेखअत। सभे जिउएक गढ़अन आर धँचअर बहुत दिनले थिरैं थिरैं बदलअलाहेइन। जेसअन हड़रा आगु दसअर बनुआ

जनुआरेक निअर रहअरहत, माने परकितिले अखरा खाइएक जहड़ाउएहेला आर परकितिहिँ ठेहअड़ लेइ बास करेहेला। उखनैं हड़रा परकितिंइ सिरजाइल फुल, फर आर दसअर पाखुड़ आर जनुआर सिँकार करि भुख मेटाउएहेला। अखरा खाइएक बेनाउए निहि जानेहेला, तेसने चासबासेक काम निहि सिखअरहत। बिगगानेक एहेटाइ मत। मेनेक हड़रा दसअर जनुआरेकले बुइधगर हेउएक तँहैं अखरा परकितिक ढब – धँचअर गमला, परकितिके बुझे सिखलेथिक आर अहे तँहैं अखरा गाछेक बिहन आँकराइएक घटअना, आँकरानले गाछ बनेक घटअनाटा बुझे पारला – तँइ उचराउला चासबास। मेनेक हड़रा कामटा रिझैं निहितअ सखैं निहि करला, अखरा खाइएक अभाबेक ताड़अनिंइ चासबास करे सिखअरहअत।

हड़ैं एकसमअइ बने–झाड़ैं सिँकार करि खाइएक जहड़ाउए जाइ सिँकारेक पाइख–पाखुड़ आर जनुआरेक अभाबैं गाछेक काँदा, पात, फुल, आर फर खाइकुन भुख मेटाउला, तेसने अखराके गाछेक काँदा, पात, फुल, आर फरेक अभाब गुचाउए चासबास करे हेलेइन। एहे ठानअनटाँइ बिगगान जुगति आहेइक। आर एहे चासबास हेलेइक सुघअड़ हड़ समाजेक थापनाक गाड़ामु। चासबासेक उचरनेक तँहैं हड़रा गाछेक ढँढ़अर आर पाखनाक सुँइध छाड़ि पातपालहा आर डाइरेक कुँबा बेनाउला, आर कुँबा छाड़ि घारैं बसकअइता हेइ उतरअल सुघअड़ समाजेक थापना करलाह। तँइ कहे पाराइक जे एहे चासबासेक सिरजनैं हड़ जिनगानिंइ बेजाँइ बदअल हेलेइन। एहे भेउरनिंइ बुझालेइक हड़राक उतरअनिक मुले हेलेइक एहे बिहनि आँकरानेक घटअना।

एहे बिहअन आँकरानेक घटअनाटा कुड़मालि चारिंइ एकटा डागअर परअब रुपैं कुड़मि गठेक लकैं आइझअ पालअन करअहत। पुरखेनि कुड़मालि गितैं एहे कथाटाइ कहेहेइकः–

एति एति जाउआ किआ किआ जाउआ
जाउलँ मँइ, जाउलँ माँइ दाना बहु रे।
.... (पुरखेनि गित)

एहे गितटाँइ कहेहेइक माँइ गअ एहेतअ एतनागिलिन बिहअन आँकराउलिअन। मानैं अखरा जे निजैं बिहअन आँकराउरहअत, एहे कथाटाइ गितैं कहालाहेइक। बिहअनेक आँकरानैं अखरा कतेक जे रिझाला, गितटाँइ पसटअ बुझाहेइक। रिझाइएक कारअन हेलेइक – पेटेक भुख मेटाउएक रिझ। हालैं कनअ नउआ आबिसकार करले उटा मनैं राखेक तँहैं जेसअन कागअज, कलअम निहितअ पँथि आहेइक, आगु एहेनिअर कनअ उपाइ नेखलेइक। तँइ उखनैं हड़ जिनगानिंइ साँगि कामैं लागेक निअर घटअनागिलिन दसअर हड़ दँहगिक सभे लकके जानाउए कामटा करि देखाउए लागला। आँखिरैं अहे बिहिन आँकराइ पहागाछ बेनाउएक कथाटा बछअरि सभे लकके जानाउएइतके चारि हेइ डाँढ़ालेइक। आर एहे आँकरानेक घटअनाटा हड़ जिनगानिके बदलाउए दमाट साहाइ करअरहेइक – जनटा कुड़मालि चारिक सभेले डागअर परअब हेइ डाँड़ालाहेइक करअम परअब नामैं।

चासबासेक कामैं पहिल हारेक चलअनः– हड़रा चासबास तअ सिरजला। हड़रा साँगि बुइध गर हेउएक तँहैं बहुत किछु जानेक आस जागलेइन, चासबासैं गतअरेक खाटालि कमाउएक कसनि करे लागला। अखरा पहिल चासबास उचराउएक खनैं जनुआरेक डाँठअ हाड़ निहितअ डाँठअ गाछेक डाल देइकुन भुँइ कड़ेहेला आर बादैं अखरा गाछेक ढाँगअ गाछेक डालेक सँगैं हाड़ बाँधिकुन हड़रा निजैं हाँथैं टानेहेला आर आबाद अरजेहेला, इटाँइ अखरा निजेक गतअरेक खाटालि कमाउरहअत। हाँथैं भुँइ–माटि

कड़ि चासबास करेक खाटालिटा गाछेक डाँठअ झाइल डाइरेक सँगेँ जनुआरेक हाड़ बाँधि हाँथेँ टानि माटि कड़े लागला। पेछु बनुआ जनुआर गरु काड़ा ठेसाइ एहे माटि कड़ेक कामटा करे लागला।

एहे गाछेक डाइरेँ हाड़ बाँधेक तेँहैं चासेक कामेक एहे सानाफानाटाक नाम हेलाहेइक हार (हाड़झहार)। हड़राक सभे दँहगिक लकँ जेसअन देखि सिखे पारअत अहे तेँहैं बछअरि माघ मासेक पहिल दिनटाँइ चासबासेक कामँ साहाइ करअइआ सानाफाना हारेक साहाइएँ माटि कड़ि देखाइ देथिन। एहे नेगटाँइ चासबासँ पहिल हार बाहेक घटअनाटाइ मने कराउएइक। कुड़मालि चारिँइ एहे नेगटाके हारपुइनहा कहि पालि आउअहत।

चासबासँ बनुआ जनुआरेक पहिल चलअनः– हाँथेँ हार टानि माटि कड़ले गतअरेक खाटालि बेजाँइ साँगि हेउएइक, तेँइ कुड़मि जनजातिक पुरखारा आपअन गतअरेक खाटालि कमाउए बनुआ जनुआर (गरु आर काड़ा) फाँइसँ बाझाइ आनि पसिकुन चासेक कामे ठेसाउलाहेथिन। एहे कथाटा मुहेँ कहाटा बेड़े आउसान मेनेक काम कराटा दमाट बाझाइड़ा काम हेकेइक – टुइएक ठानलेइ इटा बुझाइक। मानँ एहे कामटा निपटाउए हेले जेसअन दरकार गतअरेक खाटालिक तेसने दरकार हेउएइक बुइध–गिआनेक। एकाइ कनअ लकँ एहे कामटा करे निहि पारता, एहे कामटा निपटाउए हेले ढेइर लकेक दरकार हेउएइक। तेँइ इटा ठानाटा जुगतिक हेकेइक जे, दलबाँधि बनुआ जनुआर गरु आर काड़ाके बन–झाड़ले बाँधि आनि अखराक गतअरेक ताखअड़ कमाइ दाँहिंकुन चासबासेक कामे लागाउएक घटअनाटाँइ चासबासेक कामेक धँचअरेक बेजाँइ बदअल हेलाहेइक।

एहे घटअनाटा कुड़मालि चारिँइ एकटा डागअर परअब नेतेँ पालअन करि आउअत – जनटा सँहरअइ परअबेक नेग आर रिति–नितिक खदिनदि करले पाउआइक। सँहरअइ परअब माहान बाँदनाक दिन कुड़मि कबिलाक लकँ गरु–काड़ाके कनअ टाँइड़ँ डाँठअ खुँटिंइ दड़िंइ बाँधि ढल–नागड़ा बाजाइ खेलाउथिन। मानँ आदिकाले कुड़मि कबिलाक लकँ जे दलबाँधि बनुआ जनुआरके फाँइसे बाझाइ आनि डाँठअ खुँटिंइ बाँधि गरु–काड़ाक गतअरेक ताखअड़ कमाइकुन चासेक कामँ लागाउरहथिन – बाँदना हेलेइक उटाक जिँअत परमान। आर अहे घटअनाटा मने राखे आर दसअर लकके जानाउए, सिखाउए टाँइड़ँ गरुखुँटा निहितअ बाँदना परअब नामे पालि आउअहत। कुड़मि कबिलाक सभे लकँ एहे निअमटा मानि पालअन करि आउअहत आपअन चारिँइ। एकटा कुड़मालि पुरखेनि सँहरअइ गितेँ उटाक उरबुकार हेलाहेइक। जेसअनः–

अहिरे कनेहि गे गाइइ सिरिजलउ बाबु हउ
कनेँ तके आनअलउ नाभाइ।
कनेहि गे गाइ घारेँ घारेँ बाँटअलउ
गटा बसमताँइ देलअउ छपलाइ।
अहिरे इससरेँ गे गाइइ सिरिजलउ बाबु हउ
आजा बुढ़ाँइ आनलउ नाभाइ।
आजि बुड़िइ गे गाइ घारेँ घारेँ बाँटअलअउ
गटा बसमताँइ देलअउ छपलाइ।

.... पुरखेनि सँहरअइ गित

एहे गितटाँइ कहालाहेइक – परकितिक (ईश्बरे) सिरजअल गरु, पुरखारा बनले नाभाउलाहेथिन आर गटा बसमता (पृथिबी) छिरिआइ देलाहेथिन। निछु उटाइ नहेइक, सँहरअइ परअबैं गरअइआक दिन गहाइलैं गरअइआ पुजा करेक खनैं छाँदअन दड़ि, बाँधअन दड़ि, गअरइआ (गोमाता), गअसँइआ राइ (साँड़गरु) आर गजा लढ़ि (पाहाड़) कर तँहैं फुल आर पिठा चघाउअत। तँइ चासबासैं पहिल बनुआ जनुआरके ठेसाउएक घटअनाटा कुड़मालि चारिँइ धरि राखअलाहात, जनटा हालुक जुगेउ धरि राखअलाहात सँहरअइ परअबैं बाँदना नेग पालिकुन।

आदिकालैं पहिल राँधा सिखनअइतः– चासबास करे पारिकुन हड़रा समाजके सुघड़अनेक डहअरैं डहराउए पारअलाहात। मेनेक चासबासेक उचरअनेक खनैं हड़रा तअ आइझ – कालुक निअर राँधि खाइ सिखले नेखला, एहे राँधि खाइएक खातिर हड़राके बहुत मगअज खाटाउए हेलाहेइन। चासेक अरजल बिहअन दाना, फुल, फर आर काँदा काँचाइ खाइहेला, मेनेक उटाँइ बुढ़ा आर छअउनाराक बेजाँइ बेजुइत हेउएहेलेइन। अहे खातिर अखरा पानिँइ भिजाइ खाइ सिखला।

चासबासेक अरजल बिहअनगिलिन एहे पानिँइ भिजाइ फुलाइ खाउआक उचरअनैं हड़राक भुख मेटाउए एकडेग देलथिक। एहे भुख मेटाउएक घटअनाटा कुड़मालि चारिँइ धरि राखअलाहात। तँइ कुड़मालि भाखिँइ दिनेक पहिल पहअरेक खाइएकटाके चारभिजा कहअत। आरअ कुड़मालि चारिँइ एहे भिजाइ आँकराइ खाइएक घटअनाटा जितिआ परअबैं एकटा नेग करि धरि राखअलाहात। जितिआ परअबैं बिहअन दानागिलिन पानिँइ भिजाइ थापना करि आँकुर करेक नेग पालअन करेक रित आहेइक। जितिआ परअबेक एहे बिहअन आँकराइकुन खाइएकटाइ हेलेइक आदिकालेक सभेले पहिल राँधि खाइएक घटअना, जनटा आँकुर करि आपअन आपुस कुटुम भाइ भेइआदके देइकुन देखाइ देथिन, जेसे सभे लकैं भुख मिटाउए आँकुर करि खाइ सिखे पारअत। एहे जितिआ परअबटा गाँउएक सदअर ठानितैं आखड़ा बाँधि नेग, रितिनिति पालअन करअत जेसे समाजेक सभे लकैं देखि सिखे पारअत। सभेकाइ खाइएक बेनाउएक काइदाटा सिखे पारअत एहे आखड़ाँइ।

चासबासैं बिहिन दानाँ जहड़ाउएक काइदाः– चासबासेक उचरअनेक ताइएँ हड़ जिनगानि सुघअड़ डहअरैं डहरे पारला। कुड़मि कबिलाक लकैं बहुत निअर आबाद अरजे लागला, मेनेक सभे आबाद माहान धान एसअन अरजन हेलेइक, जनटा भुख मेटाउएक मुल आबाद कहि बाछनिक करला। पहिल पहिल अखरा परकितिँइ जनमअल (मानैं नदि आर जेबजेबि भुँइए जनमअल) बिहनि जहड़ाइकुन आबाद अरजे बिहनि बुनेहेलथिन आर चासेक काम करेहेला। उखनैं अखरा बिहनिगिलिन हालेक निअर बिहअन नेतैं जगाउए निहि सिखअरहअत, अहे तँहैं अखरा चासबासैं उबजअल धानेक एक खेजा नदिक पानिँइ निहितअ दलदलि, जेबजेबि भुँइएँ सदधाक सँगैं भासाउएहेला, काहेनअ बछअरि परकितिक ठिनले बिहअन ढुँढ़िकुन चासबास करले एक समअइ सिरातेइक आर अखरा बिहअन पाउता निहि – हेलेतअ चासबास करा अटकि जातेइक। तँइ चासबासेक काम जिआइ राखेके तँहैं अखरा दलबाँधि नदि आर दलदलि भुँइए भासाउएक कामटा हड़रा आपअन दरकारेक तँहैं करेहेला।

कुड़मालि चारिक टुसु परअबेक खुँटिनाटि बिचार करले हामरा देखे पाइअ – खेतेक धान खेरअइएँ आनि आर खेरअइएक धान घारैं आनअल बादैं कुड़मि कबिलाक लकैं पुस मासेक साँकराइत दिनैं पाकअल धानेक एक खेजा (बेटिछअउआक लढ़अल सिँसेक धान) सदधा भगतिक सँगे दलबाँधि जुड़िआ निहितअ

बाँधेक पानिंइ भासाउअत, जनटा टुसु भासान परअब कहि कुड़मालि चारिंइ मानि आउअहत। पेछु हड़रा घार बेनाइकुन रहे लागला, उखनैं बिहअन दानागिलिन जगाउएक काइदाटा जानला, ताउ अखरा आगुक सटअरैं परकितिकले बिहअन जहड़ाउए आर परकितिंइ घुराइ देउएक काइदाटा टुसु भासान नामैं चारिंइ धरि राखअलाहात।

हड़राक दँहगिंइ दँहगिंइ लिआइ:– परकिति माहान बहुत निअर दुरजग (ठेर, झअइड़, बान, भुँइकाँपान) आर बनुआ जनुआरेक ठिनले निजेके बाँचाउएक तैंहें हड़रा दलबाँधि जिनगानि बिताउएहेला आर निजेक जिउ बाँचाउएक काइदा सिखेहेला। बनुआ जनुआरेक ठिनले रेहाइ पाउले हेतेइक किना, परकितिक रागले रेहाइ पाउले किना हेतेइक। आपअन दँहगिंइ दँहगिंइ लिआइ, झगड़ा हेउएतेलेइन – खाइएक आर रहेक ठानितेक तैंहें। लिआइ हेउएतेलेइन आर सभेले साँगि लिआइ हेउएतेलेइन एक गठेक बेटिछउआके जबअरि लुटि दसअर दँहगिंइ आनेक तैंहें। बेटिछअउआके लुटि आनि सँगसार पातेहेला आर एहे कारअनैं दँहगिंइ दँहगिंइ लिआइ लागेहेला आर एहे लिआइ झगड़ाक तैंहें बहुत लकेक मरअन हेउएहेलेइन। एहे लिआइ सिराउएक तैंहें बुढ़ा–पुरखारा मत करला आर अहे लिआइटाके निपटाउलेथिक बिहा नामेक रितिक चलअन करि।

कुड़मालि चारिंइ बिहा नेगटाँइ पाउआइक – आगु कुड़मिराक बिहाँइ गाछेक डालैं छामड़ा बेनाउअत आर अहे छामड़ाँइ बिहा हेउएइक। मानैं बिहाक चलअन हेलाहेइक घार बेनाइ बसकअइत करअरहत ताकअर आगुले। बिहाँइ दँहगिक लिआइएक परमान नेगैं नेगैं देखि पाउआइक, केनिआइएक भाइएक सँगैं बरेक सालाधति लुटा, बरेक काका आर केनिआइ काकाक लिआइटा बेहाइ बजअड़, सनापितअरैं केनिआइके पातखाढ़ु देउआ, बिहाक सैंसैं बर केनिआइ बिदाइएक खनैं बर आर केनिआइएक लुगाँइ गाँइठ बाँधेक नेग, बरघारैं आनि लहाक खाढ़ु पिंधाउएक नेग, दुआइर छैंका नेग हेनतेन बिहाक नेगगिलिनैं दँहगिक दँहगिक लिआइएक निमुद पाउआइक। लिआइएक चिनहा एहे रिति–निर्तिंइ रहि गेलाहेइक। आर एहे निअर लिआइएक सिरान करे हड़रा बिहाँइ सिंदुरेक चलअन करला। एहे बिहा रितिक चलअन हेउआँइ एकबाटैं जेसअन गुसटिक लिआइ सिरालेइक तेसने दसअर बाटैं सुघअड़ समाज थापना हेलेइक। बिहाक ताइएँ एकटा दँहगिक सँग दसअर दँहगिक नाता सिरजन हेलेइक। समाजेक सभे हड़ नाताँइ बाँधाला। आँखिरैं बिहा नामेक रितिंइ सुघअड़ समाज बाँधालेइक।

तैंइ कहे पाराइक, सुघअड़ हड़ समाज थापनाक कामे साहाइ करेक निअर घटअनागिलिन आदिबासि कुड़मिराक चारिंइ गुँथाइ आहेइक। कुड़मालि चारिंइ एसअन बहुत नेग, रिति–निति गुँथाइ आहेइक जनगिलिन कनअ निहि कनअ एसअन पुरखेनि घटअनाक सँउरन करेइते जाइ सिरजालाहेइक जन घटअनागिलिनैं हड़राक जिनगानि उतराउए आर सुघअड़ हड़ समाज थापनाक कामे साहाइ करअरहेइक। समाजके सुघअड़ डहअरैं डहराउए साहाइ करअइआ घटअनागिलिन दसअर लकके जानाउए बछअरि बाचिक दिन थिर करि दहराइ घुराइ करि देखाउए लागला – अहे मुल घटअनाटाके सँउरि बछअरि करि देखाउएइते जाइ चारि आर रिति–नितिक सिरजन हेलाहेइक – चारिके जुइतसिर भेउराउले एहे ठेहअड़गिलिन फइरछाइक।

भारत की जनगणना के भाषा सूची में जनजातीय भाषा के तौर पर स्वतंत्र रूप से कुड़मालि (KUDMALI) भाषा कोड लागू करना होगा। – आदिबासि कुड़मि समाज।

आदिबासि, जनजाति और अनुसूचित जनजातिः समन्वय एवं पार्थक्य

प्रसेनजीत महतो
केंद्रीय अध्यक्ष,
आदिबासि कुड़मि समाज

जोहाइर,

विश्वभर में प्रत्येक वर्ष 09 अगस्त के दिन को "International Day of the World's Indigenous Peoples" अर्थात "विश्व के देशज जनों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस" के तौर पर मनाया जाता है। भारत देश में इसे हम "बिश्व आदिबासि दिवस" के रूप में मनाते हैं। इतिहास की बात की जाय तो यूएनओ द्वारा 23 दिसंबर 1994 को संकल्प संख्या 49/214 के माध्यम से लिये गये फैसले के आलोक में वर्ष 1995 से यह महत्वपूर्ण दिवस मनाया जाता आ रहा है। इस उद्देश्य के साथ कि आदिबासियों के मौलिक और संवैधानिक हक अधिकारों के संरक्षण और संवर्धन के प्रति सरकार और लोगों को सचेत रखा जाये। साथ ही पर्यावरण संरक्षण जैसे वैश्विक मुद्दों पर आदिबासियों के महत्वपूर्ण योगदान के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए भी यह दिवस खास महत्व रखता है।

बहरहाल यहाँ बात है कुछ ऐसे शब्दों के बारीकियों के बारे में, जिनपर अमूमन आम और खास द्वारा कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है या फिर जानबूझकर नजरअंदाज किया जाता है। इंडिजेनस जिसका तात्पर्य "देशज" (या स्वदेशी) लोगों से है, अर्थात उस देश के मूलनिवासियों से। मूलनिवासी अर्थात उस देश के मूल बासिंदे। मगर ये मूल बासिंदे कौन हैं? यकीनन जो वहाँ के आदि बासिंदे हैं, अर्थात आदिबासि। जबकि आमतौर पर यहाँ मूलनिवासी और आदिबासि को अलग अलग समझने की भूल की जाती है। मगर स्पष्टतया जो आदिबासि हैं वही मूलनिवासी हैं और मूलनिवासी वही हैं जो आदिबासि हैं। बिल्कुल एक दूसरे के समानार्थक शब्द।

हालांकि यह आदिबासि (आदिवासी) शब्द किसी भी आदिबासि समुदाय के भाषा का शब्द नहीं है। यह अन्य बाहरी समुदाय के लोगों द्वारा यहाँ के देशज लोगों को संबोधित किया गया एक सामूहिक नाम है। यहाँ आदिबासि का तात्पर्य जंगली या वनवासी नहीं है। आदिबासि का बिल्कुल स्पष्ट और सामान्य शाब्दिक अर्थ है – आदि काल से बसोवास करने वाले। आदिबासि कुड़मि जनजाति समुदाय के स्वायत्त कबिलावाची जनजातीय मातृभाषा कुड़मालि में इसे "आदि बोसकोइता" कहते हैं। पद्मश्री डॉ. रामदयाल मुंडा जी ने प्रकृति पुजक आदिबासियों के प्रकृति धर्म को "आदि धरम" के रूप में व्याख्या की थी। इस प्रकृति धरम को आज हम "सारना" के नाम से जानते और मानते हैं। इसके अलावे सभी आदिबासि समुदायों में एक कॉमन शब्द मिलता है – होड़, जिसका अर्थ है मानव और इसी से एक समय आदि होड़ शब्द प्रचलित था। कुड़मालि में कहा जाता है – हामरा हिंआक आदि होड़ (बा आदि बोसकोइता) हेकिओ। अर्थात हम यहाँ के आदि काल से बसोबास करने वाले लोग (मानव) हैं। ये अपने आप में ही एक बेहद गर्व की बात है।

यहाँ जिन बिन्दुओं की ओर मैं ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूँ, वह यहीं से शुरू होती है। भारत देश में आज इस "आदिबासि" शब्द के क्या मायने रह गये हैं? देश आजाद होने के बाद जब संविधान बना तब इस देश के लोगों को कई श्रेणियों में बांटा गया – एसटी, एससी, ओबीसी, सामान्य इत्यादि। इनमें

से कुछ आदिबासि समुदायों को एसटी यानि अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रखा गया। कुछ इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इसमें सभी आदिबासि समुदायों को शामिल नहीं किया गया। इनमें से कुछ को एससी तो कुछ को ओबीसी में डाल दिया गया। पूरे भारत देश में ऐसे सैकड़ों आदिबासि समुदायों को उनके मूल संवैधानिक अधिकार से वंचित कर दिया गया। तत्कालीन माननीय सांसद डॉ. हृदयनाथ कुंजरु जी ने इसी संबंध में "भारतीय आदम जाति सेवक संघ" द्वारा तैयार किया गया एक ज्ञापन तत्कालीन माननीय प्रधानमंत्री महोदय को सौंपा था।.......

बहरहाल तभी से इस देश में एक अलग ही सोच व मानसिकता विकसित करती चली गई कि जो अनुसूचित जनजाति (एसटी) हैं, वही आदिबासि हैं। मगर ऐसा ही है क्या? क्या वो सभी आदिबासि समुदाय जिन्हें एसटी सूची में शामिल करने से छोड़ दिया गया, वो अचानक से आदिबासि नहीं रहे क्या? ये सही है कि जो अनुसूचित जनजाति हैं वो सभी आदिबासि हैं, मगर सिर्फ वही आदिबासि हैं यह अवधारणा संपूर्ण रूप से गलत है। इसे इस एक वाक्य में समझ लीजिये कि अगर आज किसी आदिबासि समुदाय को किसी कारणवश अनुसूचित जनजाति की श्रेणी से बाहर कर दिया जाय तो क्या वो आदिबासि नहीं रहेगा? क्या उसके लिए आदिबासि शब्द के मायने बदल जायेंगे? जी नहीं, जो कल आदिबासि था, वो आज भी आदिबासि है और कल भी आदिबासि ही रहेगा, चाहे वो अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रहे या ना रहे। इस संबंध में सरकार और आदिबासि व जनजातीय विभागों को भी स्पष्ट नजरिया रखने की आवश्यकता है। वहीं इस देश के असल मूल बासिंदा होने के नाते यह हर आदिबासि समुदाय का जन्मसिद्ध अधिकार है कि उसे उसका संवैधानिक अधिकार और मूल पहचान हर हाल में मिले। हाल ही में इसी संबंध में सुप्रीम कोर्ट का भी एक बेहद सकारात्मक जजमेंट सामने आया है, जिसके अनुसार – if ... he belongs to a tribal community, there is no reason to discard his or her claim as prior to 1950, ...

इस देश में ब्रिटिश शासनकाल में भी यहाँ के लोगों को दो खास श्रेणियों में विभक्त किया गया था – कास्ट (Caste) और ट्राइब (Tribe)। जाति व वर्ण व्यवस्था आदि के अंतर्गत चलने वाले समुदायों को 'कास्ट' और अपने पारंपरिक स्वशासन व्यवस्था, प्रथागत नियमों एवं आदि विशिष्ट भाषा संस्कृति धर्म परंपरा इत्यादि के साथ चलने वाले आदिबासि समुदायों को 'ट्राइब' की श्रेणी में रखा। इसी कास्ट और ट्राइब शब्द को हिन्दी में क्रमशः जाति और जनजाति कहा गया (हालांकि ट्राइब शब्द का भावार्थ कुछ अलग होना चाहिए था)। 1901 से लेकर 1931 तक उन आदिबासि समुदायों को एबॉरिजिनल ट्राइब व प्रिमिटिव ट्राइब (आदिबासि जनजाति व आदिम जनजाति) की संज्ञा दी गई। देश आजाद होने के बाद इन्हीं आदिबासि समुदायों में से कुछ को अनुसूचित करते हुए अनुसूचित जनजाति (शिड्युल ट्राइब) की श्रेणी में रख दिया गया, जबकि बाकि भोले भाले सीधे सादे आदिबासि समुदायों के साथ एक ऐसा अनहोनी हो गया जिसका कि उन्हें वर्षों तक आभास भी ना हो पाया। जो आज भी अपने ही देश में अपने ही मूल पहचान को पाने के लिए संघर्ष करने को मजबूर हैं।

इसके बाद का समय तो जैसे उन आदिबासियों के लिए एक अभिषाप एक काल ही बन गया। ना सिर्फ उनके जल जंगल जमीन का ही अतिक्रमण हुआ, बल्कि उनके भाषा संस्कृति धर्म परंपरा सभी के साथ घोर अतिक्रमण हुआ। शोषण, पक्षपात, भेदभाव की क्या कहा जाये, उनके विकास की गति ही अवरुद्ध हो गई। उनसे उनका मूल परिचय ही छिन गया। इसलिए जरूरत है सोच और नजरिये को बदलने की। जरूरत है एक दूसरे की भावनाओं को समझने की। देश आजाद होने के बाद जिस तरह

आदिबासि और मूलनिवासी के मायने बदल दिये गये, वैसे ही झाड़खंड राज्य अलग होने के बाद झाड़खंडियों को आदिबासि और मूलबासि में बांट दिया गया।

निष्कर्षत: यहाँ आदिबासि, जनजाति और अनुसूचित जनजाति शब्दों की उपरोक्त अलग–अलग व्याख्या से इनके मायने और इनके बीच के समानता और पार्थक्य को भी स्पष्ट रूप से हम देख व समझ सकते हैं। इसलिए हमें उन तमाम चक्रांतों और गलत अवधारणाओं से बाहर निकलना होगा और 'एक तीर एक कमान, सभी आदिबासि एक समान' के कहावत को चरितार्थ करना होगा। सरकार समेत सभी को यह भी समझना होगा कि आदिबासि पर्यावरण संरक्षण, सामूहिकता और सहिष्णुता के मिसाल हैं। इनके संरक्षण और संवर्धन मात्र से ही एक साथ देश व बिश्व भर के कई सारी समस्याओं का निदान स्वत: संभव है।

कुड़मि आदिबासियों की व्यथा:

प्रसेनजीत महतो
केंद्रीय अध्यक्ष,
आदिबासि कुड़मि समाज

पूर्वी भारत में स्थित छोटानागपुर का पठार, जिसके अंतर्गत झारखंड (झाड़खँड) के अलावे ओड़िशा के क्योंझर, मयूरभंज व सुंदरगढ़, पश्चिम बंगाल के पुरुलिया, बांकुड़ा, मेदिनिपुर व झाड़ग्राम एवं छत्तीसगढ़ के सुरगुजा व रायगढ़ जिला आते हैं। "छोटानागपुर की पथरीली परतों के भूवैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार इसमें अतिप्राचीन गोंडवाना महाद्वीप की चट्टानें हैं, यानि इस पठार का विकास बहुत ही पुराना है। यह दख्खन पठार का पूर्वोत्तरी खंड था, जो दख्खन तखघ्ते के साथ–साथ गोंडवाना के खंडित होने पर आज से लगभग 12 करोड़ साल पहले अलग होकर 5 करोड़ वर्षों तक उत्तर दिशा में चलता रहा और फिर यूरेशिया से जा टकराया। (संदर्भ : विकीपीडिया)"

छोटानागपुर पठार आदि काल से आदिबासियों का निवास स्थान रहा है, जहां हो, मुंडा, खड़िया, पहाड़िया, संताल, उरांव आदि जनजातीय समुदायों के साथ कुड़मि जनजाति भी आदि काल से साथ–साथ आपसी सामंजस्य के साथ रहते आ रहे हैं। मगर आज के वर्तमान परिस्थिति में टोटेमिक कुड़मि आदिबासि चौतरफा पक्षपात की नीतियों के बीच पिसते अपने पहचान व अस्तित्व की लड़ाई में जूझ रहे हैं। दु:खदायी बात ये है, कि इस कृषिजीवि मेहनतकश आदिबासि समुदाय को जाने किस वजह से हमेशा उपेक्षित किया जाता रहा है। कुड़मि आदिबासि थे, हैं और रहेंगे, इसमें कहीं कोई शक नहीं। मगर यदा कदा इन्हें गैर आदिबासि साबित करने की नापाक कोशिश किया जाना एवं इसके लिये तरह–तरह के छोटी–मोटी गलतियां ढूंढ़ने और उसे येन–केन–प्रकारेण सही साबित करने की पुरजोर कोशिश करना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। कई बार तो इसका अनर्गल तरीका बेहद निराशाजनक होता है। अफसोस कि इनकी व्यथा को समझने वाला कोई नहीं, सभी पूर्वाग्रह व एकतरफा विचारधारा से प्रेरित हैं। "आदिबासि या आदिवासी मतलब आदिम अधिवासी यानि आदिकाल से बसोवास करने वाले मूलनिवासी", इस परिभाषा को समझने की जरूरत है।

पूर्वाग्रही भावनाओं से लैस कुछ लोग कुड़मियों को मूलवासी कहते हैं तो कुछ सदान कहकर सम्बोधित करते हैं। मगर इन दोनों शब्द की उत्पत्ति कब, कहां और कैसे हुई? झारखंड अलग राज्य बनने

से पहले झारखंडियों के बीच मूलवासी शब्द का प्रचलन नहीं था, अपितु वृहद झारखंडी मूल के लोगों को यूपी, बिहार, बंगाल, ओड़िशा व अन्य गैर–झारखंडी मूल के लोगों द्वारा 'जंगली' कहकर संबोधित किया जाता था। झारखंड अलग होने के बाद झारखंडियों को बांटो और राज करो की नीति के तहत 'झारखंडी' कहने के बजाय 'आदिवासी और मूलवासी' के रूप में बांटकर अलग कर दिया गया। रही बात 'सदान' की तो डॉ० राकेश कुमार महतो के अनुसार – "इस शब्द का पहला प्रयोग श्री बी पी केसरी जी और उनके गुरुजी, जिनके नेतृत्व में केसरी बाबु ने पीएचडी की थी, ने की। केसरी जी ने अपने गुरुजी का सहारा लेकर 'झारखंड के सदान' नामक पुस्तक लिखकर कुड़मि को भी जबरदस्ती सदान नामक काल्पनिक समुदाय में ठूंस दिया। बाद में केसरी जी के इस कोशिश को श्री बीर बीरोत्तम, श्री बलवीर दत्त आदि महाशयों ने सदान शब्द को स्थापित करने में काफी मदद की। इससे कुड़मि जैसे झारखंड के सबसे बड़े आदिबासि समुदाय को आदिबासि परिचय से हटाकर अपने साथ मिलाने का बढ़िया मौका उन्हें मिल गया था। इससे उन्हें दो फायदा हो रहा था, एक झारखंड में कुड़मि को गैर आदिबासि जताकर आदिबासि की संख्या कम दिखाया जा सकता था और दूसरा नव कल्पित तथाकथित सदान समूह को बड़ा और प्रभावशाली बनाया जा सकता था। इसके अलावे बाहरी समुदायों को सदान के नाम पर झारखंडी परिचय के साथ स्थापित करना भी एक मूल मकसद था।"

मूल बात यह है, कि कुड़मियों में लिखने वालों की कमी रहने के कारण इनके बारे में बिना उचित शोध के सुनी सुनायी बातों के आधार पर सही–गलत कुछ भी लिखा जाता रहा है। इसके अलावे जहां कुड़मियों की स्थिति–परिस्थिति व कुड़मि महापुरूषों व शहीदों की चर्चा या जिक्र करनी या होनी चाहिए, वहां भी इन्हें नजरअंदाज किया गया (उदाहरण : झारखंड सम्बन्धी कई पुस्तकें)। हालांकि हाल में कुछ स्थानों पर कुछ हद तक इन बातों को सुधार करने का कोशिश किया गया है, जिसके हम आभारी हैं। परन्तु अब भी सफर बहुत लंबा है।

सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात जो कुड़मियों के साथ घटित हुई, वो थी छोटानागपुर (तत्कालीन) के कुड़मियों को उत्तर भारत के कुरमियों के साथ जोड़ा जाना। ये सारा दिग्भ्रम शुरू हुआ 1894 ई० में उत्तर प्रदेश में गठित 'ऑल इंडिया कुर्मी क्षत्रिय महासभा' के द्वारा फैलाये गये भ्रमजाल से। 1915 में इस संगठन ने भारत के सभी कुर्मियों के लिये क्षत्रिय स्टेटस की मांग की। चूंकि छोटानागपुर पठार के कुड़मियों को भी अंग्रेजी में Kurmi लिखा जाता था, तो समान नाम लगने के कारण इन्होंने ब्रिटिशों के साथ मिलकर 1922 में इनके लिये भी क्षत्रिय स्टेटस की मांग की। 1929 व 30 में राज्य सरकार व केन्द्र सरकार को इस सम्बन्ध में मेमोरेन्डम दिया, मगर जिसे साक्ष्य व प्रमाण के अभाव में खारिज कर दिया गया (संदर्भ : 1931 सेन्सस)। ये मांग बाहरी टिट्युलर कुर्मियों की थी, ना कि छोटानागपुर पठार के टोटेमिस्टिक कुड़मि जनजातियों की, ये सबसे अधिक ध्यान देने वाली बात है। मगर कुड़मि आदिबासियों के साथ हुए इस गहरे षडयंत्र को समझने के बजाय पूर्वाग्रह से प्रेरित सभी इसे दरकिनार करने में लगे रहते हैं।

एच० एच० रिजले के 'द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ बंगाल, 1891' में साफ उल्लेख किया गया है, कि छोटानागपुर पठार के कुड़मि बिहार के कुर्मियों से अलग नस्ल के आदिवासी समुदाय के लोग हैं। सर जी० ए० ग्रियर्सन ने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, 1903' में इसे और स्पष्ट करते हुए लिखा है, कि प्रिंट/प्रोनाउनसिएशन मिस्टेक के वजह से छोटानागपुर के कुड़मि और बिहार के कुर्मी, जिन्हें दोनों को अंग्रेजी में 'Kurmi' लिखा गया, लेकिन यहां छोटानागपुर के जनजाति कुड़मियों के लिये Hard 'r' यानि 'ड़' (चूंकि अंग्रेजी में 'ड़' अक्षर का सब्सटिच्युट लैटर नहीं होता और उसे भी 'r' से ही डिनोट किया जाता

है) और बिहार के कुर्मियों के लिये Soft 'r' यानि 'र' का प्रयोग किया गया है। कुमार सुरेश सिंह ने तो अपने 'पिपुल ऑफ इंडिया' के बिहार इन्क्लुडिंग झारखंड वॉल्यूम में 'KUDMI' और 'KURMI' दोनों को सेपरेट चौप्टर देकर पूरी तरह अलग कर दिया है। इससे साबित होता है, कि छोटानागपुर के कुड़मि शेष भारत के कुर्मियों से पूर्णतया भिन्न हैं। इनके भाषा, संस्कृति, परंपरा, रीति रिवाजों एवं अन्य किसी भी प्रकार से कोई मेल नहीं है। सबसे बड़ा फर्क इनके गुसटिधारी (कुड़मि) और गोत्रधारी (कुर्मी) होने में है। इसलिए छोटानागपुर पठार के कुड़मियों का शिवाजी महाराज और सरदार पटेल से भी एक भारतीय के अलावे किसी भी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं है, जो बात हर किसी को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए।

कालांतर में झारखंड के कुड़मियों के लिये भूलवश लिखे गये Kurmi (कुर्मी) शब्द में सुधार कर Kurmi Mahto (कुर्मी महतो) किया गया, ताकि अन्य स्थानों के कुरमियों से इनकी पृथक पहचान की जा सके। झारखंड सरकार द्वारा मार्च 2012 में नोटिफिकेशन जारी कर कुर्मी महतो के स्थान पर कुड़मी/कुर्मी (महतो) ; Kudmi/Kurmi (Mahto) किया गया। मगर फिर भी कुर्मी या कुरमी शब्द जुड़ा होने के कारण दिग्भ्रम जस के तस बना हुआ है। त्रुटिपूर्ण कुरमी शब्द के कारण ही जनजाति कुड़मि (Tribal Kudmi) को कुरमी जाति (Kurmi Caste) के साथ जोड़ दिया जाता है। इसलिए अपने पहचान को डिस्टिंक्ट करने के लिए केवल कुड़मि (Kudmi) शब्द नाम का ही चयन करना होगा। पूर्व में दूसरों के द्वारा की गई गलती को ढोते रहने के बजाय, जिससे हमारे मूल पहचान और अस्तित्व के साथ संवैधानिक अधिकार भी खत्म हो गये, हमें हमारे असल परिचय को स्थापित करना ही होगा।

कुड़मि आदिबासि समुदाय को 1950 ई० में बिना किसी नोटिफेकशन के अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल करने से छोड़ दिया गया, जबकि वो पूर्व की जनगणना में आदिम जनजाति की सूची में शामिल थे। मगर एक नोटिफाइड ट्राइब को क्यों छोड़ दिया गया, इसके कारण अज्ञात हैं। देशभर में ऐसा अनेकों और जनजातियों के साथ भी अन्याय हुआ। इसी गंभीर समस्या पर तत्कालीन माननीय सांसद पं० ह्रदयनाथ कुंजरू की 12 सदस्यीय कमेटी के सवाल के जवाब में गृह मंत्रालय के रिपोर्ट (1951) में स्पष्ट उल्लेखित है, कि 1950 में उन्हीं जनजातियों को एसटी सूची में शामिल किया गया, जो पूर्व की जनगणना में प्रिमिटिव ट्राईब की सूची में शामिल थे। फिर आखिर कुड़मि जनजाति के साथ ऐसा अन्याय क्यों किया गया? यकीनन ये एक बहुत बड़ी साजिश का हिस्सा थी, जिसका मकसद आदिबासियों की जनसंख्या प्रतिशतता कम करना एवं कुड़मियों के जमीनों का हस्तांतरण करने की एक सोची समझी चाल थी।

उदाहरणस्वरूप इस शांतिप्रिय कृषिजीवि समुदाय को अन्यायपूर्वक विकास के नाम पर अपने जमीनों से नाना प्रकार से बेदखल किया गया एवं यह परंपरा आज भी बदस्तूर जारी है। यह बेदखल कल–कारखाना, जलाशय (डैम), भूगर्भ (माइन्स) खनन, शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थान, ताप–विद्युत संस्था एवं महानगर निर्माण आदि के नाम पर किया गया है। इसका ज्वलंत उदाहरण हैं – जमशेदपुर, बोकारो, धनबाद, रांची, हजारीबाग, पुरूलिया, रायरंगपुर, राउरकेला आदि नगरें एवं चाण्डिल, हीराकुंड, मैथन, तिलैया, कंसावती आदि जलाशय तथा टाटा, बीएसएल आदि जैसे प्लांट, जहां सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं तो कुड़मि समाज के लोग और बदले में मिला है तो उन्हें सिर्फ और सिर्फ विस्थापन का दंश। सवाल उठता है, इन 73 सालों में इस समुदाय का जो हर क्षेत्र में नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई कैसे होगी और कौन करेगा?

बहरहाल तब से लेकर अब तक निरंतर अविराम कुड़मि आदिबासि समुदाय को अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल कराने के प्रयास जारी हैं। जाने कितने मेमोरेंडम दिये गये कितने आंदोलन

किये गये, मगर धोखा, छल व ठगी के अलावे अब तक कुछ नहीं मिला। कुछ लोग इसे आरक्षण से जोड़कर देखते हैं, मगर ये सिर्फ आरक्षण के लिये नहीं, वरन हमारे खोये हुये असल पहचान को वापस पाने मूल परिचय को हासिल करने उसे बनाये रखने व अस्तित्व को बचाये रखने के लिये भी है। ये किसी के हक छीनने के लिये भी नहीं है, ये तो हमारा संवैधानिक और जन्मसिद्ध अधिकार है। इससे किसी का हक किसी रूप में नहीं छिनेगा, बल्कि आदिबासियों की शक्ति व सामर्थ्य और बढ़ेगी, पांचवीं व छठवीं अनुसूची की ताकत और मजबूत होगी। कई बार चतुर बाह्य शक्तियों द्वारा कुड़मि आदिवासियों एवं अन्य आदिवासियों को एक ना होने देने और इन्हें कमजोर बनाये रखने के मकसद से इनके बीच दरार पैदा करने के उद्देश्य से कई तरह की गलतफहमी फैलाई जाती है। जैसे, अन्य आदिबासियों से कहा जाता है, कि ये आपका हक आपसे छीनना चाहते हैं और कुड़मि आदिबासियों से कहते हैं, ये आपको आपका हक देना नहीं चाहते हैं। पूर्वाग्रह व राजनीति से प्रेरित ऐसे षडयंत्र के उद्देश्यों को भी समझने और निष्फल करने की महती आवश्यकता है।

समय समय पर कई आदिबासि बुद्धिजीवियों एवं नेताओं ने भी कुड़मियों को अनुसूचित जनजाति में शामिल ना करने को अनुचित करार दिया है और कुड़मि समुदाय को अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल करने की वकालत की है। इसमें डॉ० रामदयाल मुंडा से लेकर डॉ० निर्मल मिंज, सर्वश्री शिबू सोरेन, सूर्य सिंह बेसरा, बागुन सुम्बरूई, कृष्णा मार्डी, बहादुर उरांव, सी० आर० मांझी आदि प्रमुख हैं। जेएमएम पार्टी की मेनुफेस्टो में हमेशा ये मुद्दा शामिल रहा। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास (भाजपा) ने भी 2009 लोक सभा चुनाव के दौरान ये बात कह चुके हैं। अर्जुन मुंडा सरकार (भाजपा) दो बार केंद्र से अनुशंसा कर चुकी है। जमशेदपुर के दिवंगत सांसद शहीद सुनील महतो (झामुमो), जमशेदपुर की पूर्व सांसद आभा महतो (भाजपा), ओड़िशा के पूर्व सांसद रवींद्र कुमार जेना (बीजेडी), प० बंगाल के सांसद अधीर रंजन चौधरी (कांग्रेस), पुरुलिया के सांसद ज्योतिर्मय महतो (भाजपा), जमशेदपुर के सांसद बिद्युत बरन महतो (भाजपा), ओड़िशा के राज्यसभा सांसद ममता मोहन्ता (बीजेडी) आदि ने संसद में आवाज उठा चुके हैं। इसके अलावे कई विधायकों (गुरूचरण नायक, जगरनाथ महतो, रामचंद्र सहिस, जे पी पटेल, लंबोदर महतो आदि) ने भी समय–समय पर विधान सभा में भी इसके समर्थन में बात रखी है। प० बंगाल सरकार ने केंद्र सरकार को सकारात्मक अनुशंसा किया है। मगर फिर भी 73 साल बीत जाने के बाद भी कुड़मि समुदाय को अब तक एसटी सूची में शामिल ना कर इसपर सिर्फ राजनीति करना बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण है और सम्पूर्ण कुड़मि समुदाय को उसके वाजिब हक से महरूम रखकर उनके विश्वास पर कुठाराघात है। मगर ये अन्याय सिर्फ कुड़मि आदिबासियों के प्रति नहीं, बल्कि गौर से सोचा और समझा जाय तो सम्पूर्ण आदिबासि समुदाय के साथ है।

ज्ञातव्य हो, कि बिहार एवं ओड़िशा सरकार द्वारा जारी अधिसूचना संख्या 3563–J दिनांक 08 दिसंबर 1931 के द्वारा उक्त अधिसूचना संख्या नोटिफिकेशन नं. 550 (दिनांक 02 मई 1913) में दर्ज जनजातीय समुदायों (मुण्डा, उरांव, हो, संथाल, भूमिज, खड़िया, घासी, गोंड, कान्ध, कोरवा, कुड़मि, माल–सौरिया और पान) को भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम 1865 एवं 1925 के प्रावधानों से मुक्त रखा गया है। इस आधार पर कि ये सभी भारत में लागू हिन्दु लॉ के बजाय आदिबासियों के अपने पारम्परिक सामाजिक स्वशासन व्यवस्था "कस्टमरी लॉ" (प्रथागत नियमों) से संचालित/शासित होते हैं, जिसके अंतर्गत कार्यपालिका, न्यायपालिका व व्यवस्थापिका तीनों शासन तंत्र अंतर्निहित हैं। यहां तक कि "झारखंड मामलों से सम्बन्धित समिति की रिपोर्ट मई 1990" जो 30 मार्च 1992 को तत्कालीन गृह राज्यमंत्री एम. एम. जैकब

ने संसद के दोनों सदनों में पेश की थी, में झारखंड के कुड़मी/कुरमी (महतो) समुदाय को "गैर सरकारी आदिवासी" के रूप में नामित/चिन्हित किया गया है। यहां उल्लेख करना आवश्यक है, कि आदिवासी तो आदिवासी ही होते हैं, सरकारी और गैर सरकारी का कोई आशय नहीं होता है। यहाँ कुड़मि आदिवासी को सरकारी सूची यानि एसटी सूची में शामिल ना होने के कारण ही उक्त रिपोर्ट में गैर सरकारी आदिवासी कहा गया है। इस बात से उन महानुभावों को भी सबक लेना चाहिए जो गाहे बगाहे कुड़मि आदिबारि नहीं हैं का अनर्गल राग अलापते रहते हैं और कुछ तो असली आदिबासि और नकली आदिबासि का लकीर ही खींच देते हैं। ऐसे लोगों को सबसे पहले जाकर उस रिपोर्ट को खारिज करना चाहिए, जिसके बदौलत झारखंड राज्य अलग हुआ है। कुड़मि आदिबासि नहीं होते या कुड़मि को आदिबासि का आधार ना माना गया होता तो झारखंड राज्य भी अस्तित्व में ना आया होता! और इस इतने बड़े सच्चाई को स्वीकार करने के बजाय इसे गलत साबित करने की कोशिश में लगे रहने वाले वैसे झारखंडी लोगों को तो शर्म आनी चाहिए खुद को झारखंडी कहने में भी जिल्लत महसूस होनी चाहिए।

कुड़मि जनजातियों की सभ्यता, संस्कृति, परंपरा, रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा, पर्व–त्योहार, पूजा–पाठ, नारता, शादी–बिहा, घाट–कामान आदि वैसे ही हैं, जैसे अन्य जनजातियों के हैं। छोटानागपुर पठार के कुड़मि समुदाय और अन्य जनजातियों में व्याप्त समानता निम्नलिखित है :–

1) कुड़मि समुदाय और अन्य जनजातीय समुदायों मे सबसे बड़ी समानता है उनका गुसटिधारी (Totemistic) होना। प्रत्येक जनजाति या आदिबासि समुदायों की पहचान उनके टोटेम से ही होता है, जो उनके आदि–पुरखों ने समाज को वर्गीकृत करने के लिए पेड़–पौधौं, पशु–पक्षियों, जीव–जन्तुओं या अन्य प्राकृतिक आधारित नामों पर रखा था। उदाहरण के लिये जिस प्रकार संताल में सोरेन, मुर्मु, टुडु आदि गुसटि होते हैं, वैसे ही कुड़मि जनजाति में नागुआर, काडुआर, हिंदअइआर, बंसरिआर, काछिमा, केसरिआर, बानुआर, पुनअरिआर, डुंगरिआर, केटिआर, डुमरिआर आदि 81 मूल गुसटि पाये जाते हैं तथा कुछ के उप–गुसटि मिलाकर लगभग 130 से भी अधिक टोटेम हैं। प्रत्येक गुसटि का एक गुसटि चिन्ह (Totem) एवं उनका विधि–निषेध (Taboo) होता है, जैसे – काछिमा गुसटि वालों का टोटेम कछुआ होता है एवं ये कछुआ को मारते या खाते नहीं, कहीं मिलने पर तेल सिंदुर लगाकर वापस पानी में छोड़ देते हैं। उसी तरह नागुआर का नाग साँप, काडुआर का काड़ा (भैंस) इत्यादि। अन्य जनजातियों की तरह इनमें भी समान टोटेम में रिश्ता (शादी–बिहा) वर्जित है। स्व समुदाय और भिन्न गुसटि में ही बिहा मान्य है, अन्यथा वालों को सामाजिक निष्कासन के तहत 'बिटलाहा' की संज्ञा दी जाती है।

2) अन्य जनजातीय समुदायों की मांझी–महाल, मुंडा–मानकी, पड़हा–राजा व्यवस्था की तरह कुड़मि समुदाय की भी अपनी अलग सामाजिक शासन व्यवस्था होती है, जिसे महतो–परगनैत व्यवस्था कहते हैं। गांव के मुखिया को महतो और परगना के मुखिया को परगनैत कहते हैं, इसके ऊपर मड़ल, देस मड़ल और माहामड़ल होते हैं। समाज के किसी भी प्रकार के सभी समस्याओं का निष्पादन व निबटारा इन्हीं पदाधिकारियों द्वारा ही किये जाने की आदिम परंपरा रही है। जिस प्रकार संताल में 'मांझी', हो में 'मुंडा', भूमिज में 'सरदार' का 'गाँउ प्रधान' के रूप में महत्व होता है, उसी प्रकार कुड़मि में 'महतो' का स्थान होता है।

3.) कुड़मि जनजातियों की पूजा पद्धति भी अन्य जनजातियों के समान ही है। ये प्रकृति पूजक समुदाय अपने सभी पारिवारिक पूजा (जैसे – गरइआ पूजा, धरम पूजा, जितिआ पुजा आदि) स्वयं द्वारा ही

करते हैं तथा सामूहिक पूजा (जैसे – जाहिरा पूजा, आसाड़ी पुजा, बारि पूजा आदि) पारंपरिक पुजारी लाया/पाहन/देहरि द्वारा ही सम्पन्न करते हैं। ये किसी आकृति (मूर्ति) के नहीं बल्कि प्रकृति के ही विभिन्न वास्तविक स्वरूपों यथा पेड़, नदी, पहाड़, सूरज, चाँद आदि एवं आदि पुरखों (पूर्वजों) का उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए सरन करते हैं। ये देवता के रूप में निराकार गड़ाम, धरम, बसमता, बड़अपहाड़ आदि की सैंउरन आराधना करते हैं और सभ्यता–संस्कृति का ज्ञान देने वाले आदिपुरूष व आदिमाता बुड़हाबाबा और माहामाञ को अपना आराध्य मानते हैं। मान्यता के अनुसार संतालों के प्रथम पुरुष–स्त्री पिलचु हड़ाम व पिलचु बुड़हि की तरह कुड़मियों के प्रथम पुरुष–स्त्री रेंगहा हड़ाम या रेंगहा बुड़हा और रेंगहि बुड़हि हैं। संताल में बुरूबोंगा यानि मरांगबुरू, जिसे कुड़मि बड़अपाहाड़ कहते हैं, उसी प्रकार हातुबोंगा जिसे गाँउआ देउता (गड़ाम ठाकुर), सिंगबोंगा यानि धर्मेश जिसे सुरजाहि यानि धरमराइ एवं सारना व देसाउलि थान को सारना/जाहिरा/गड़ाम थान कहा जाता है। जाहिरा–सारना में प्रकृति महाशक्ति और आदि पुरखों का सरन किया जाता है व बसमतामाञ के रूप में धरती माता की आराधना की जाती है।

4) प्रत्येक जनजातीय समुदायों की अपनी कबिलावाची भाषा है, जैसे – संताल की संताली, मुंडा की मुंडारी, हो की हो, उरांव की कुडुख आदि। उसी तरह कुड़मि (Kudmi) जनजाति समुदाय की भी अपनी स्वायत्त कबिलावाची जनजातीय मातृभाषा है – कुड़मालि (Kudmali)।

5) कुड़मि जनजातियों की संस्कृति भी अन्य जनजातियों के समान है, जो पूर्णतया व विशुद्ध रूप से कृषि एवं प्रकृति पर ही आधारित है, जिन्हें "बारअ मासेक तेरअ परब" के नाम से जाना जाता है। इनमें पहला माघ को आखाइन जातरा से लेकर सिझानअ, सारहुल, चइत परब, रहअइन, मासंत परब, चितअउ परब, गोमहा परब, करम परब, छाता, जिहुड़, बाँदना (सेहरेइ) और पुस साँकराइत तक टुसु परब (पुस परब) सभी विशिष्ट आदि संस्कृति के परिचायक हैं।

6) कुड़मि आदिबासियों के रीति–रिवाजों में भी शादी–बिहा जैसे मौके पर विशिष्ट आदि परंपरा का अनुपालन किया जाता है, जो बिहा में केनिआ देखा से शुरू होकर बर देखा, दुआइर माड़ा, लगन धरा, माड़ुआ पुजा, छामड़ा घुड़ा, साजनि साजा, नख टुंगा, आम बिहा, महुआ बिहा, आमलअ खाउआ, गड़ धउआ, गुआ टिका, पितर पिंधा, डुभि खाउआ, थुबड़ा (हांड़ी) बिहा, सिनअइ फेरा, माला बदल, सिंदरादान, चुमान, बिदाइ, खाड़ु पिंधा, घोटि लुका से लेकर समधिन देखा आदि तक के नेग में दृष्टिगोचर होता है। पारंपरिक रूप से बाहिर भितरि का काम भोजि (भाभी) और पुरोहित का काम भाटु (बहनोइ) ही पूरा करते हैं। उसी प्रकार मरखि में तेल–खइर से लेकर घाट–कामान तक में भी कुड़मालि नेगाचारि का अनुपालन किया जाता है और पारंपरिक लाइआ/पाहन की देखरेख में भेइगना (भांजा) ही पुरोहित का काम पूरा करते हैं।

कुड़मि आदिबासि समुदाय, जो पूरे छोटानागपुर पठार में दो करोड़ से भी अधिक की जनसंख्या में निवासरत हैं, पिछले 70 सालों से भी अधिक समय से एक भी उच्च प्रशासनिक पदाधिकारी (आईएस) का ना होना (केवल 02 अपवाद), साथ ही अन्य महत्वपूर्ण शैक्षणिक, प्रशासनिक, कानूनी इत्यादि क्षेत्रों के उच्च पदों पर ना होना एवं आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक हर स्तर में अत्यंत पिछड़ा होना इनके 'पिछड़ापन' को दर्शाता है। इसके अलावे देश व प्रदेश के प्रति कुड़मि समुदाय के बलिदानों और योगदान को भूले से भुलाया नहीं जा सकता है। मगर जमींदारीध्मालगुजारी प्रथा व ब्रिटिश हुकुमत के विरूद्ध हुए

प्रथम संगठित जन विद्रोह 'चुआड़ विद्रोह' के महानायक अमर शहीद क्रांतिवीर रघुनाथ महतो (आंदोलन रू 1767 से 1778 तक) को भी भुला दिया गया एवं इतिहास में कहीं कोई स्थान नहीं दिया गया, जो अत्यंत खेदजनक है। इसके अलावे चानकु महतो, बुली महतो, कालिया मोहन्ता, चुना राम महतो, गोविंद महतो जैसे सैकड़ों कुड़मि वीर शहीद स्वतंत्रता आंदोलन इतिहास के पन्नों से गायब हैं। झारखंड आंदोलन के पुरोधा बिनोद बिहारी महतो, क्रांतिदूत शहीद शक्तिनाथ महतो, क्रांतिवीर शहीद निर्मल महतो जैसे अनेकों ज्ञात अज्ञात कुड़मि आंदोलनकारियों के योगदान और शहादत को उचित सम्मान दिये जाने की महती आवश्यकता है।

इस तरह से देखा जाय तो स्वाभिमानी मगर भोली–भाली कुड़मि आदिबासि समुदाय शुरू से षडयंत्र का शिकार रही है और वर्तमान हालात में हर क्षेत्र में पिछड़कर एक दयनीय स्थिति में पहुंच चुकी है। ऊपर से सरकारी उपेक्षा का दंश इन्हें लगातार गर्त में धकेलने का काम कर रही है। इनके उत्थान व बहुआयामी समस्याओं यथा – भाषाई, सांस्कृतिक, सामाजिक, पारंपरिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, रोजगार, कृषि, खेलकूद एवं स्वास्थ्य आदि संबंधी समस्याओं के समाधान के लिये एवं संवैधानिक हक–अधिकार की रक्षा के लिए आवश्यकता है, तो सिर्फ और सिर्फ राजनैतिक सोच, पूर्वाग्रह व एकतरफा विचारधारा की मनोभावनाओं को त्यागकर इनके लिये न्यायोचित कदम उठाने की, जिसकी मैं सभी जनप्रतिनिधियों, महानुभावों एवं बुद्धिजीवियों से नम्र निवेदन करता हूं।

कुड़मालि भाखिक हुमदुमि

सुरेश कुड़मि,
Chief Secretary
Assam Kudmali Sahitya Sabha

मइध भारत देसेक छटअनागपुर, उड़िससा, पछिम बाँगाल राइज कर आदिम कुड़मालि भाखिटा दमे पुरना आर दड़ह भाखि हेकेइक। एहे भाखिक आदिम हेउएक चिनहाप, एकअर पुरखेनि गित, आहना, पुरखेनि काथा गिलाँइ टुमे टुमे झबअरलाहेइक। कुड़मालि भाखिक बहुत आहना आहेइक। जनगिलिन कुड़मालि भाखि कहअइआ लकेक माझेँ पिड़हिक पिड़हि चलि आउएहेइक। ताकअर भितर "सिख सिखर नागपुर आधाआधि खड़अगपुर" एहे आहनाटाँइ कुड़मालि भाखिकर चाइरअसिमाक निमुँद पाउआइक।

'सिख' माने सिखभुम बा मइउरभँज (मयुरभञ्ज) राइज, जनटा हालुक उड़िससा राइजेक बड़अ जेला।

सिखर माने सिखरभुम बा पाँनचेइत बा पनचअकुट (पञ्चकोट) राइज।

नागपुर माने नागपुर राइजटा हेलेइक छटअनागपुरेक पुरना नागराइजअ।

खड़अगपुर माने पछिम बाँगालेक पछिम मेदिनिपुरेक १८ टा परगना, बाँकुड़ा जेलाक खातड़ा साबडिभिसनेक भेलाइडिहा, फुलकुसमा, राइपुर, सुपुर, अमबिकानगर, सिमलापाल, कुइलापाल, छातना एहे ८टा परगना आर झाड़गेराम साबडिभिसनेक झुँटिबनि, जामबनि, खालाड़, बलरामपुर, मललअभुम, कइलानपुर, भँजभुँइ (सालबनि), भाटभुँइ, रुहिनि , साऱँगा एहे १०टा परगना । सभेमिलिकुन १८टा परगना।

एहे चाइरअटा राइजके लेइकुन भुगअलेक चारिअखुँटेक माझेँ कुड़मालि भाखि कहअइआ जाइत कुड़मि जनजाइतरा बसकअइत करअहत।

सिख सिखर नागपुर आधाआधि खड़अगपुर, एहे कुड़मालि आहना माहाने कुड़मि जनजाइत कर बसकअइत करेक ठेकान पाउआइक। एकर सँगे सँगे पछिम बाँगला कर मालदा, दिनाजपुर, आर आसाम राइज, त्रिपुरा राइजेँ कुड़मालि भाखिँइ फदरअइआ लक पाउआइक। कुड़मालि भाखिक बिहिन सभेबाटे छितअरल आहेइक।

हामरा कुड़मालि भाखिक हुमदुमि १९५० सालेक बादेले मानेइहअ मेनतुक एकर हुमदुमि बहुत आगुलेइ हेलाहेइक। जेटाक हामरा कुड़मालि साहितेक मइधकालिन जुग कहिअ। अहेखनेँ कुड़मालि भाखिक कबिरा आपअन हुब गुमानेक कलिहाला, बारअमासेक परबेक गित झुमअइर चिसेतेला आर गाहेतेला। कबि दिना ताँति, बरजुराम, बिनअनदअ, आरअ आरअ दमेँ कबिराक चिसअल गित झुमइरेँ हालुक कुड़मालि सँगअत (साहित) दड़हअ हेलाहेइक। एकर बादे साधु सिसटिधरेक चिसअल गितेँ कुड़मालि भाखिटा बाँचाउएक तेँहे काम करअलाहात। अहे खनेँ कुड़मालि भाखिक लेइ कनअ हुमदुमि निहिं हेलअउ अहे कुड़मालि कबि, झुमरिआराक कसनि हामरा बिसरे निहिं पारब।

पुरखेनि गित लेइ हालुक गितेक जनअम। कुड़मालि भाखिक पुरखेनि गित जेसअन बारअ मासेक परअब– तिहारेक गित, टाँइड़ टिकअरेक गित, छउआ भुला, खेइल गित, कामपाइटेक गित, बिहा गित, पुजा पासा, नेग नेगाचारेक गितगिलाँइ हालुक कबि, गाहुकराक साहाइ हेलाहेइन। भिनु भिनु जुडुआहि, सेमिनार

, नाच गितेक आखड़ागिलाँइ कुड़मालि भाखिक कबि गाहुकराँइ साहिटाके झबरअन पसरअनेक खातिर गितेँ रेगेँ हुमदुमि करअहत। अखराक गित झुमअइर ससेल मेडिआ, रेडिअ, टिभि चेनेल माहानेँ पसरनेक काम करेहेइक। कुड़मालि भाखिक हुमदुमिँइ ससेल मेडिआकरअ साँगि साउता देखे पाइअ। ससेल मिडिआ कहेइतके फेसबुक, हआटसएप, इउटुब हेनतेन गिलाँइ मुल कहे पारिअ। एहे ससेल मिडिआँइ समाज दँहगिगिलाक जुड़ुआहिक आनार बानार गिला पाइअ। कबि साहितकारराक लेख, कबिता, केहनि पढ़े आर सुने पाइअ। नाच झुमअइर देखे आर सुने पाइअ।

भिनु भिनु समाज दँहगिगिलाँइ कुड़मालि भाखिक हुमदुमिँइ साहाँइ करअहत। कुड़मालि भाखिँइ पढ़ासुनाक तेँहे कलेजले इउनिभारसिटि तड़िक डेपुटेसन देइकुन हुमदुमि करअहत। ताकर तेँहे झाड़खँडेक ५ टा इउनिभारसिटिँइ आर पछिमबाँगलाक २ टा इउनिभारसिटिँइ आर सँगे सँगे कलेज ले पाराइमारि तड़िक पढ़ासुना चलेहेइक।

इउनिभारसिटि आर कलेज, पाराइमारिगिलाँइ पढ़ासुना चालु करलेइ निहिँ हेतेइक। कुड़मालि भाखिँइ पढ़ासुनाक खातिर पँथिक दरकार, आर जनटा चिसअइआराक ताइएँ समफला हेतेइक। कुड़मालि भाखिक हुमदुमिँइ पँथि, पतअइर, बानार पतअइरगिलाक काथा कहे पारिअ। चिसअइआरा कुड़मालि भाखिके बाँचाउएक तेहेँ भिनु भिनु पँथि, लेख, कबिता, गित, छेइब, छितरन, पतअइर चिसि आर निखरान करि भाखिक हुमदुमिँइ साहाइ करअहत। चिसअइआरा कुड़मालि भाखिटाक झबरअन पसरअनेक खातिर भिनु भिनु लेख, पँथि चिसेक कसनि करे हेतेइक। हेलेगानि कुड़मालि भाखि बाँचतेइक। भाखि बाँचले एकटा जाइत बाँचतेइक।

मकरिक घारकनना (केहनि)

सकतिपदअ माहातअ (बँसरिआर)
साहितकार, पुरुलिया

बनता पाहाड़ेक ले आनदाज आड़हाइ तिन कउस धुरैँ एक गाँउ। गाँउटाक नाम हेलेइक सुरुघुँटु। गाँउटा जेसन दमे बड़अ नहेइक तेसने दमे छुटुअ नहेइक। सुरुघुँटु गाँउएँक घँसैं पुब बाटैँ बहेहेइक एकटि जुड़िआ। जुड़िआटाक नाम सरसि जुड़िआ। बारअमासैँ जुड़िआटा कनअ दिन सुखाइक निहि। निरन दिनअ सुपलि भइड़ डुबा पानि बहबे करेइक। सुरुघुँटु गाँउएँक सभेकाइ सरसि जुड़िआँइ नाहात। गरु, काड़ा,छागइर,भेड़ि आदि करि जुड़िआ धारिँइ धारिँइ चरअत ,पानि पिअत आर बेराडुबाँइ घार घुरअत। एहे जुड़िआक धारिँइ डाँड़ि कड़ि पेनहरिरा पिएक पानि लेइ जात। अहअ खातिरेइ बदहइ जुड़िआटाक नाम सरसि जुड़िआ हेलाहेइक।

एहे सुरुघुँटु गाँउएँ हरखु माहातअ नामे एक बसगतिआ रहे। छटअखाटअ एक चासा। अकर बहुक नाम सँजअति रहेइक। दुइ बेटा आर तिन बेटि लेइ अराकर सँगसार।बेटिगिलाक ले बेटागिलाइ बड़अ हेकथिक। बड़अ बेटाक नाम भँदु आर छुटु बेटाक नाम गैँदु। बड़अ बेटिक नाम मकरि, मेझलि बेटिक नाम सुमि आर छुटुबेटिक नाम रहेइक बिरअति। बड़अ बेटि मकरिक जनअमेक खनलेइ देहेइना ठैँगटा टुएक छुटु रहेइक। अहअ खातिर लेड़चाइ लेड़चाइ चले हेलि। आर गातेक बरनटाउ रहेहेलेइक केरिआ। बाकि दिअ बेटि दमे रुपेक ना हेलउ दुसेक निअर नाइखेलथिक।

माँइ बापेक आदअरैँ पाँचअ भाइ बहिन बड़अ हेउए लागला। हरखुक सँगसार तेसन चलतक रहेइक निहि ,तबे खाटालिक दउलतैँ बारअमासैँ माड़पानिक टान निहि रहेइक। छउआपुता बड़अ हेउहत देखि हरखु आर सँजअति दिअ लकैँ सलहा करत। सँजअतिँइ कहलेइक एकरबादैँ छउआगिलाके एकलक एकलक करि बिहा देउए हेतेइक। तिनअ बेटि तअ अमान समान बाड़हअहत।तखन देखबेहे दमे हपअसटँइ गिरे हेतअहन। तिरिआक कथा सुनि हरखुँइ कहलेइक, देखैँ छउआ मानुसमान हेउआ माने तअ बिहादान देउएइ हेतेइक। मेनेक आगु बेटाराक बिहा देबसिन नअ बेटिराकर बिहा देबसिन ? सँइआँक कथा सुनिकुन सँजअतिँइ कहलेइक, आगु मकरिक बिहा देबेइक। तेसन हेले इ बछअरेइ बिहाघार करअब। बिहाघार करेक खरचापातिअ तअ टान निहि हेतेइक। घारैँ दुइटा खासि आहात, भाति खरचटाउ तअ कुलाइ जातेइक। घारबाड़िँइ सबजि पातिअ तअ आहेइक। मन तिनेक बिरहिअ तअ जगाल आहेइक। आर बिहाघारेक सामानपाति किनेक खातिर हाजार पाँचेक टाका तअ आहि। आर ताउ जदि टानटान हेउएइक तखन साँउनि गाइटिके बेचि देलेइ तअ हेतेइक।

सँजअतिँइ कथागिला जतेक हरहराइ कहि सुनाउलेइक मकरिक बिहा हेउआटा जे ततेक आसान कथा नहेइक, उटा हरखु आर सँजअतिँइ बुझे पारला जखन कुटुम बाटुमेक ठिन मकरिक बिहाक कथा उठाउलेथिन। जे कुटुमेक ठिने मकरिक बिहाक कथा सुनाउएथिन अहिँ मुँ टा किचअकाचअ करेइस। मुँ फुटि कनअ ना कहलउ, आड़ कथाँइ बुझाइ देहेथिन मकरिक बिहा हेउआटा मुँहैँक कथा नहेइक। काहे नअ मकरि एके तअ लेड़हि ताकर उपर गातेक रँग केरिआ। आर ढँगढाँग देखि चिकन चाकन चलअनेक बरगिला तअ आपने भिड़कि पाराता। बर पाउआ मसकिले हेकेइक। एहे समाजैँ मकरिक मनेक लेखे बर पाउआ माने आकासेक चाँद हाँथैँ पाउआ ।

मकरिक बर भालि भालि दुइ तिन बछर आरअ बिति गेलेइक। मेनेक कनअ बरेइ आर हरखुक घार आउअहत निहि। बाहारे बाहारेइ बानार लेइ पाराहात। कनअ बर आर पास भिड़अहत निहि। जदि केसउ अजान लक आउअहत तअ मकरिक बहिनगिलाके पसँद करेहेथिन। आर अहअ खातिर कनअ गाँउएक लक मकरिके केनिआइ देखे आउले, सुमि आर बिरअतिके दसर घारैँ लुकाइ राखेहेलथिन। मेनेक असन चाइलअ खाटाबाड़हा हेलेइक निहि। एहेदिगैँ हरखुक

आरअ दिअ बेटिहुँ बिहाक लाइग हेइ गेलथिक। मेनेक बड़अ बेटिक बिहा नि हेले छुटुगिलिनेक बिहा केसे हेतेइन। हरखु आर सँजअति गिरि गेला माहाफेरैँ। इ कुटुम उ कुटुमके कहि कहि मुँ थेथलाइ गेलेइन। एसन किना गाँउ घारेक लकैँ जेठिन सेठिन चइ करअहत उटाउ बुझे पारअहत।

मकरि आइज घारेक भारि , माँइ बापेक मुँड़ैंक बझ। अकर खातिर बहिनगिलाक बिहा हेउएहेइन निहि, हाँसि फुरतिक सँगसारटा दिने दिने निझुम हेइ जाहेइक। मकरिँइ सभे बुझेइस, मेनेक करति किना। लुकाइ लुकाइ काँदा छाड़ा आर अकर करेक कनइ नेखेइक। आँड़सिक पासैँ डाँड़हाइकुन निजेक गटठइनटआ देखेइ आर काँदि काँदि भगबानके कहेइक, हे भगबान, काहे मके एसन रुपैं पाठाले ? हामर खातिर मर माँइ बाप, दादा, बहिनरा आइज दुखैँ भाँसअहत। मके मरन दे भगबान। कखनअ भाभेइस जिउटा बधि देबैँइ, मेनेक मरि देले पिड़हिक पिड़हि एकटा लकहाँसि रहि जातेइक । माँइ बाप , दादाराक मुँड़ैं एकटा कलैंक चापि जातेइन । जिउबधि करा माने अराके जिँअतेइ मराइ राखा हेतेइक । जिउटाउ तअ आर लतपात नहेइक ,जे चँथि देलेइ चँथातेइक।

एहे सभे भाभि भाभि मकरि दिन दिन सुखाइ जाइ लागलि । आर गातेक बलनटाउ बेछँद हेइ जाइ लागलेइक। अकर खातिर सुमि आर बिरअतिक बिहाक उमइरटाउ बिति जाहेइन। भँदु आर गँदुकेरअ अहे एके हाल। बहिनेक बिहा ना देइकुन अराकेरअ माथा ठिक नेखेइन। एकदिन मकरिँइ अकर माँइएक ठिन मेहेनाइ लागलेइक,"माँइ जिबअने मर बिहा हेति निहि। हामर बिहाक आस छाड़ि देइकुन तर बाकि बेटाबेटिराकर बिहाक कथा भाभैँ। हामर खातिर अराकर जिबनगिला बेरबाद करि देसिन ना" । मकरिक मुँहैं एसन कथा सुनि सँजअतिक चइख ले लर टसटसाइ गिरे लागलेइक। मुँहैं कनअ कथा उसरहेइक निहि । बुझे पारलि बड़ि दुखैँ मकरिँइ एहे कथाटा सुनालि। आपन माँइएक लर देखि मकरिअ निजेक चइखेक लरके सामहाल करे पारलेइक निहि। माँइ बेटि धराधरि हेइकुन काँदे लागला।

एकदिन मकरिक बड़अ मामा पालहान अकर सालाक बेटिक बिहाक नेउता लेइकुन मकरिराकर घार आउलाहे । आपन बड़अ दादाक ठिन सँजअतिँइ नेहेराइ नेहेराइ कहलेइक – हैं दादा , तर भेगनिगिला किना घारैँ बुड़हालेइ भालअ हेतेइक ? मकरिक एकटा बर जुटाइलाइ निहि पारेहेसिक ? बहिनेक मनेक दुख बुझि पालहाने सुनाउलेइक – मँइ तअ सुगुम नेखँ रे । मेनेक मकरिक बर खजि खजि मर खाइल माँड़टा पानि हेइ जाइसाहि। अरा दिअ दादा बहिनेक कथाक माझैँ भँदु आइकुन मामाके कहलेइक – मामा मकरिक खातिर मँइ बदल बिहा करेइते सिकार आहँ। तँइ बदल बिहाक बर केनिआइ देखिहिन। मेनेक बदल बिहाउ आर हेलेइक निहि। उ बछरटाउ बिति गेलेइक ।

मकरिक उमइरेक अकर सभे सँगअतिरा एखन ससुरघारैं। केहु एक छउआक माँइ, तअ केहु दुइ छउआक माँइ हेलाहात। काकरअ काकरअ छउआ डागर हेइ गेलाहाथिन। मकरि छागइर बागाल जाइ। अकर छागइर बागालेक सँगि रेबअतिकरअ इबछर बिहा हेइ गेलेइक। मकरिक ले रेबअति उमइरैँ ढेइर छटअ रहेहेलि । एखन मकरि एकाइ एकाइ छागइर चराउएइन। जे मकरि रपामासैं रपागित ,करम परअबे करम गित ,बाँदना परअबैं सँहरइ गित ,टुसु परअबैँ टुसु गित, बिहाघारैँ बिहागित गाहि सभेक मन लुटे हेलेइन ,आइज अहअ गितेक रेग आर अकर ठिन नाइ। काँहाँ हेराइ गेलाहेइक ,उटा मकरिँइ निजअ जानेइ निहि।

एकदिन बिहानेइ मकरिक बड़अ मामा पालहान अराक घारैं हाजिर। हरखु आर सँजअति आँगनाइ बसि झुड़ि भाँगे हेला। बिहानेइ बड़अ सालाके देखि हरखु हाँथेक काम छाड़ि एकटि खाटि बिछाइ दिअ साला बहनइ बसला। ताकरबादैं आनार बानार पुछापुछि करे लागला। कथाक माझैंइ पालाहाने सुनाउलेइक – मकरि भेगनिक एकटा बरेक टउआ पाउलाहँ। तबे बाबुराइ दजबर हेके सँजअतिँइ बरेक नाम सुनेइते माहान हाँथेक काम छाड़ि अराक पासैँ आइकुन बसलेइक। पालहाने सुनाइ देलेइन, बरटाक तिनटि बेटि आहथिक। तबे बेटिगिलाक बिंहा हेइ गेलाहेइन। माने, छउआक खातिर बिहा करे खजेइस । तरा किना इटाँइ हँ सिकार आइहा ? ताहेले कथाटा चालाउअम। हरखुँइ कहलेइक – सुने ,हामरा बुड़हा बुड़हिक एकक कथाँइ कनअ काम आर निहि हेतेइक भाइ। तर भेइगनारा एखन मानुसमान हेलाहात । अराक मतटाइ रहतेइन। अराके लेइकुन बुझामाता कराटाइ ठिक हेतेइक।

पालहाने कहलेइक – हँ तउ अहउटाइ करउब, डाकिहिन भेइगनाराके। सभेकाइ बसि सात पाँच भाभिगनि दजबरटाके लेइ आनेक कथा हेलेइन। बाचिक दिने दजबर आउलाक केनिआइ देखेलाइ। बरेक उमइर तिनकुड़ि डेगि गेलाहेइक। मुँड़ें एकटाउ केरिआ चुइल नेखेइक। सिपसिपा गात, गाल मुँ बसि गेलाहेइक। बर देखि घारेक तउ काकरउ पसँद हेउएहेइक निहि। मेनेक करेक कनउ नाइ । लारिपारि सभेकाइके मानि लेउए हेलेइक। बर देखेक दिन बाचिक हेलेइक। नेग सारा बर देखे गेला आर बिहाक दिनखन धारिज करि हरखुरा चलि आउला। मकरिक एसन बरेक सँगेँ बिहा लेउएक मन नेखेइक , मेनेक कनउ रगड़ ना करि मानि लेलेइक। मने मने कहेइस ,एहेटाइ मर जखन भाइगे आहि तखन आर मन करलेइ पाउअम काँहाँ ।

रेबाइड़ ,लगन हेइ गेलेइक। कुटुम बाटुमके नेउता देउआ, बिहाघारेक सारभार मुँहाँमुँहिँ करेइते बिहाक दिन आइ गेलेइक। बिहान लेइ सभेकाइ आपन आपन काम बाचिक करि ठेसि गेला । छामड़ा बाँधा ,माडुआ पुजा, आरउ जतेक नेगिजगिक काम चले लागलेइक। भइआदराउ कामे ठेसि गेला। एकटि दुइटि करि कुटुम आउए लागला। घार आँगनाइ बिहाक गित खेलि बुलेहेइक। गाँउएक माहातउ आइकुन आँगनाइ बसलाहात। मकरिँइ आइकुन माहातउके गड़ लागलेइक। देखेइते देखेइते बेरा डुबि राइत हेलेइक। एकरबादेँ तउ बर बरिआत आउता। सभेकाइ बर बरिआतेक डहर भालि आहात। बर टेनु माहातउ बरिआत , बाज बाजना लेइ गरुक गाड़िँइ चधि बिहा करेलाइ आउएइस । मने हुबेक लहर। बिहाक उमइर नहेइक ,ताउ बेटाक लाइए घुरि बिहा करेलाइ छाँदालाहे। निरनमासेक चाँदानि राइत। आचक भाँड़ारकना बाट ले एकटा पाहाड़ निअर धुँधकुड़ि उठेलेइक। धुँधकुड़ि देखि सभेकाइ डरेँ किना करम किना करे लागला । देखेइते देखेइते गटा आकासटा बेड़हि आँधार करि देलेइक। निहँइगगा फाँका डहर। धाइर पासेँ कनउ गाँउभुँइउ नेखेइक। हाउआ ,पानि ,ठेठठेरि, बिजलानि उचरअलेइक।

बरिआत सभे जेजाहार जिबन बाँचाउएक खातिर पाराला । बरेक सँगेँ दुइ एक लक गरुक गाड़िगिला डाँड़हाइ देइ गरुगिला खलि देइकुन बरके लेइ गाड़ि पैँदाइ सटि रहला। मेनेक हाउआ, ठेठठेरिक सँगेँ सँगेँ पाखर पानि हेउए लागलेइक। बर जे गाड़ि पैँदाटाँइ रहे हेलाक उ गाड़िटाके हाउआँइ घलटाइ देलेइक। एखन आर करेक कनउ नाइ । धुँधकुड़ि थामेइक निहि। एहे समइ कने काके देखतेइन। कने काँहाँ आहात केहु जानअत निहि। गाछापालहा भाँगि उँपड़ाइ बहुत खन बादेँ धुँधकुड़ि चलि गेलेइक। जाखरा हिँदे हुँदे जिबन लेइ पारारहत केहु काहिल, केहु भिजि सरअसपउ हेइ काँपिझाँपि एके एके बाट टमड़ि टमड़ि आउअहत। आइकुन देखेहेथिन गाड़िक पैँदाइ जाखरा रहेँ हेला अखरा अचेठाइ गिरि आहात। एसन हालेँ कने काके सुसराउबेथिन। टुएक आइग काठि करि जे सेँखासेँखि करा जातेइक ,उटआकरउ कनउ उपाइ नेखेइक। एकर अकर नाम धरि हाँकाहाँकि हेउअहत । एक दुइ लक करि साड़ा देहत। मेनेक बर टेनु माहातअके तउ देखा पाउआ जाहेइक निहि। आर अकर कनउ साड़ाउ पाउआ जाहेइक निहि। बहुत कसटेँइ एकटा मसाल धराइकुन एक बरिआतेँ देखि पाउलेइक बर टेनु माहातअके । निछु मुँटा हापुसहापुस करेइस । कथा कहेक निअर हाले नेखे। मसाल आउलाइ बाकि लकगिलाके एहे बाटेँ "चाँड़े आउआ, चाँड़ेँ आउआ" कहि डाकलेइन। सभेकाइ जाइकुन छुइछाइ देखहेथिक बर टेनु माहातअँइ तातके चइख नुबि देलाहेइक। फेरेक उपर फेर । एकरबादेँ किना करा जातेइक, केहु आर थिर करेलाइ पारअहत निहि। माथाटाके थिर करि टेनुक काकाक छउआ चेपुँइ कहलेइन, बिहान हेउएइते एखन दमे डेरि आहेइक।हामराके एहे राइतेक भितरेइ काम करे हेति। निहितउ आरउ बेज बाड़हि जातअहन। ताकर ले किछु लक केनिआइघार जाइकुन खभरटा दाहाक । किछु हामराक गाँउ जाइकुन खभरटा देइ , आरउ लक डाकि आनेक आड़ापाटा कराहान। आर पासेक गाँउ खिरटाँइड़ ले किछु लकके नेहर बिनति करि डाकि आने हेतेइक। अराके देइ दलि करि एहे अचेठाइ गिरल लकगिलाके डाकतरघार लेगे हेतेइक । हामरा एहेठिन कइ लक रहेइहउ। एराके आइगकाठि करि सेँकेक उपाइ करेइह। चेपुक कथा सुना तड़िक सभेकाइ भाग हेइकुन दिगादिग चलि गेला। इ बाटेँ केनिआइघारेँ बर बरिआतेक डहर भालि आहात। चाँड़ेइ आउएइक कथा रहेहलेइक , मेनेक एतेक डेरि हेउएहेइक केसे ? इठिन उठिन 'इ' 'उ' मेहेनाहात ,बुड़हा बर नउ थिराइ थिराइ बिहान तककउ आउबे करताक। सुरुघुँटु बाटेँ धुँधकुड़िटा आइरअहेइक तबे हुलका सुलका। तेसन कनउ खति निहि हेलाहेइक। हरखुक घार आँगना कुटुम बाटुमेँ भरि गेलाहात। पहिल

बिहा कहि कथा। आचक सड़सड़ दाड़लाम करि एकटि सबद आउलेइक। सभेकाइ चमकि गेला। हरखुक बाड़िक आमगाछटाक एकटा मटा डाइर भाँगि गिरि गेलेइक। हरखुक मनटा काँदि उठेलेइक। आमगाछेक डाइर भाँगाटा किना कनअ कुलचछनेक इसारा हेकेइक । काकरअ ठिन फुटि ना कहलउ भितरेँ भितरेँ एकटा डर हरखुक मने खेलि बुलेहेइक। एकरमाझेँइ तिनटा अचिनहा लक सुधिआइ सुधिआइ हरखु माहातअ आँगना ढुकि गेला । गातेक पिंधन भिजि सरअसपअ ,जाड़ेँ कापअहत । अराके देखि सभेकाइए घेरि लेलथिन । काँहाँक हेकिहा , किना बानार हेनतेन सुधिआउथिन। अचिनहा लकगिलाँइ कहलेथिन सभे कहब ,आगु हामराके टुएक आइग तापेलाइ दे। लकगिलाक हाल देखि भानअस ले आइग आनि तापेलाइ देलथिन। ताकरबादेँ खजपुँछार उचरअलेइक । आइग तापि सान घुरअल बादेँ अचिनहा लकगिलाँइ गटा घटनटा सुनाइ देलथिन। घटन सुनि सभेकाइ 'काठ नअ कापास' हेइ गेला। बिहाक हुबेँ गहगहअ घारटा सुगुम हेइ गेलेइक। हरखुक मुँड़ेँ जेसन आकास भाँगि गिरलेइक। हेसड़अ हेइ आँगनाटाँइ बसि देलाक। दिअ हाँथेँ मुँड़ थापड़ाइ थापड़ाइ काँदे लागअल । सँजअतिक तअ दाँत लागि गेलेइक। तुरतातुरति चइखेँ मुँहेँ पानि देल बादेँ गिआन घुरलेइक। अचिनहा बानारिआ लकगिला धिरेँ धिरेँ हरखुक घार ले बाहाराइ आपन गाउँ बाटेँ उजाउला। मकरि पाँचदिन ले हरइद तेल माखि केनिआइ साजेँ हाँथेँ कजरअठि लेइ आहि । एकरबादेँ किना करति बा अकर किना हाल हेतेइक उटा निजअ आटकाल करेलाइ पारेइस निहि। 'काँदम नअ भाभम दसा' हेइ गेलेइक। हरखु , पालहान ,आरअ आरअ कुटुम बाटुम इठिन उठिन जुबका जुबका बसि कहाकहि हेउअहत लगन धरा केनिआइ ,आइज राइतेक भितर बिहा ना हेले आर तअ मकरिक जिबअने बिहा हेतेइक निहि। किना करा जातेइक। सभेकाकर मुँड़ेँ एहे एकेटाइ भाभना। आर एहे राइतेक भितर बर जुटाउ तअ मुँहेँक कथा नहेइक। टेनु माहातअकेइ कतेक गसतिगासति पाउआ गेरअहेइक। गटा बिहाघारटा ससानेक निअर देखाहेइक। हाँसि, फुरति, रिझ, रँग कँदेँ उड़ि गेलेइक। भानअस गेलेइक निझाइ। बेनाअल सबजिपाति सभे छड़िआइ बुलेहेइक। एसन समइ हरखुक फुफुक बेटा फागुँइ हरखु, पालहान, भँदु, गँदु आरअ कइटा कुटुमके डाकि बसाइकुन कहलेइन – सुना इ बिहाटा जदि ना करेलाइ पारिअ ताहेले एकटा लकहाँसि तअ हेतेके ताकर उपर मकरिक जिबनटाउ माटि हेइ जातेइक। आर सेहअ खातिर कहहँ, एकटा हामर जानअल आमडिहेँ एकटा छउआ आहे।

तबे एकदम गरिब घार हेकेइक आर छउआटा लेलहाभँदा हेके। आर छउआटाक माँइ आहेइक ,अकर बाप नाइखेइक। अराक दुइ माँइ बेटाक सँगसार। खाटिलुटि कनअ रखअमे दिनअपात करत। आर चासबाड़ि निहि कहलेइ चलेइक। अकर हाँथेँ किना मकरिके देबाहाक ? फागुक कथाटा सुनि हरखुँइ कहलेइक – हामर तअ हँ आहि। मेनेक छउआटाँइ किना मकरिके बिहा करेलाइ माथाताक ? फागुँइ कहलेइक – आरे दादा, बुझाइबुझुइ देखब। तबे हामर सँग जाना चिनहाप आहि आर हामराक गाँउएइ छउआटाक मामाघार हेकेइक। पालहाने कहलेइक – चाला तबे आर डेरि ना करि आमडिकेइ जाब । आपन भेइगनाराके कहलेइन ,तरा इटाँइ राजि आइहा बअ ? भँदु आर गँदु दिअ भाइएइ मुँड़ लाड़ि हँ करला। फागुँइ कहलेइक – तबे पाँच छ लक चाला। तेसन हेले छउआटाके लेले आनबेइक। पालहान ,फागु, भँदु , आरअ कइटा कुटुम आमडि डहरअला।

साँइसाँइ राइत, सिथलि हाउआ बहेहेइक। बाटेँ ठेँगा बाजड़ाइ बाजड़ाइ एरा डहर चलअहत। बाटेक उपर पातपालहा बिरबिथान हेइ आहेइक। इठिन उठिन गाछेक डाइर भाँगल गिरि आहेइक।धुँधकुड़िँइ बहुत गाछके उँपड़ाइअ देलाहेइक। गालमारि मारि फागुरा चलते आहात। बहुत खन बादेँ आमडि पँहचअला। तखन पहिल खुखड़ाक डाक सुने पाउला। गाँउटाँइ काकरअ साड़ा सबअद नाइ सभेकाइ आपन आपन घारेँ निचिते घुमाहात। गनुकर घार पँहचि फागुँइ 'गनु' 'गनु' कहि डाके लागलेइक । फागुक हाँक सुनि गनुक माँइ मुगिक घुम भाँगलेइक। धिरेँ धिरेँ बिछना ले उठि कहि उठलेइक – कने हेकिहा।

फागुँइ कहलेइक – मँइ डुबकिडिहेक फागु हेकँ । आगुड़टा खलिहिँ । 'डुबकिडिहेक फागु' नामटा सुनि घुमेक आलिसेइ चइख केचटि केचटि आगुड़ खलि मुगिँइ देखेहेइन दमे लक । लक देखि सँचेइस, किना बेउरा एतेक रातिँइ हामर घारेँ एरा काहे आउला। फागुके कहलेइक – किना बेउरा रे फागुआ ? एतेक रातिँइ हामर घार आउलाहिस एतेक लकजन लेइके ? एरा कने हेकअत ?

फागुँइ कहलेइक – डरेक कनअ नेखेइक। एरा हामर गतिआ लागअत। एकटा मारमार कामे एतेक रातिँइ तर घार आउलाइह। गनु घारेइ आहे नअ ?
मुगिँइ कहलेइक – घारेइ आहे कोँहाँ जाताक।
फागुँइ कहलेइक, अके टुएक डाकिहिँ नअ दिदि।
मुगिँइ कहलेइक , एखन उठाउए गेले दमे चैँचाताक। जेटा कहेक मकेइ कहैँ । फागुँइ कहलेइक – ठिक आहेइक , मँइ उठआउबैँइ। कनठिन आहे कहि दे। एहे कहि फागु घार ढुकि गनुक ठिन गेलाक आर 'गनु भेइगना' 'गनु भेइगना' कहि डाके लागलेइक। गनु तखन घुमे अघर हेइ आहे। एक करअटे ठेलले आर एक करअट हेइकुन घुमाइस । एसन गाधा घुम जे , खाइट समेत एके उठाइ लेगलउ निहि जाने पाउताक। मुगिँइ डिबुटि जराइकुन कहलेइक – मँइ जानँ रे फागुआ गनुआ बिहान ना हेले उठाताके निहि। किना बानार मकेइ कहैँ।

फागुँइ कहलेइक –एके तअ उठाउएइ हेतेइक दिदि। निहितअ कथाटा कहेलाइए बनतेइक निहि। तबे उठाबे करिहिँ । एहे कहि मुगि सेरिआइ डाँड़हालि। फागुँइ एबेइर बुदधि करि भँदुक सँगैँ गनुक खाटिटा धरि उठाइ देलेइक। गनु भुँइएँ गिरि गेलाक। तखन टुकु कुँसकाँस करलाक आर मटा निकास छाड़ि छाड़ि घँड़र पिटे लागलाक। पालहाने कहलेइक – एसे एकर घुम निहि भाँगतेइक । काने नाखैँ पानि दाहाक । कथाटा सुनि डेरि ना करि फागुँइ गनुक काने नाखैँ पानि देउआइ गनुक चिलचिलाइ उठि बसलाक । चइख खलि देखेहेइन दमे लक। लक देखि डराइ गेलाक।काँपा काँपा राउएँ कहे लागअल तरा कने हेकिहा ?
फागुँइ कहलेइक – भेइगना मके निहि चिनहे पारेहिस? मँइ तर मामा गाँउएँक फागु मामा हेकँ आर एरा मर गतिआ लागअत। एकटा कामे तराक घार आउलाइहअ।
गनुइ कहलेइक –किना काम कहा।
सभेकाइ माइझा घारैँ बसला। फागुँइ कथाटा उचराउलेइक । कहलेइक – सुने दिदि ,मर मामाघार सुरुघुँटु गाँउएँ इटा तअ जानबे करिस। माने बानारटा हेलेइक, मर मामाक बेटिक आइज बिहाक दिन हेकेइक। मेनेक बर आउएक खने आधा डहअरैँ धुँधकुड़िक खाभअले गिरि बरटा मरि गेलाक ।आर लगन धरा केनिआइ आइज बिहा ना हेले अकर जिबनटाइ माटि हेइ जातेइक। अहअ खातिर हामर मामाक बेटिक बर गनुके ठानिकुन आउलाइहअ। एसन माहाफेर ले तराइ पारबेहे हामराके बाँचाउएलाइ। एहे कहि हाँथ जड़ करि मुगिक गड़तरैँ फागु गिरि देलेइक। मुगिँइ कहलेइक –हैँ रे फागुआ हामरा जे दमे गरिब लागिअ भाइ। ताकर उपर हामर गनुआ तअ लेलहाभैँदा छउआ। सँगसारेक मरम एँइ एखनअ कनइ बुझेइ निहि। मँइएँ एके छुटु छउआक निअर पसैँइ।
पालहाने कहलेइक – सुने, हामरा तराक सभेकिछु जानिबुझि आउलाइहअ । तरा हैँ सिकार हेले कहा । माने ,एखन हामरा डेरि सहेलाइ पारेइहअ निहि। गनुइ फागुके कहलेइक – हैँ मामा ,तर मामाक कन बेटिटिक बिहाक कथा कहेहिस? फागुँइ कहलेइक – बड़अ बेटिटिक भेइगना।मुगिँइ कहलेइक – बड़अ बेटि माने मकरि? जे छउआटिक एकटि ठैँग छुटु आहेइक , लेड़चाइ लेड़चाइ चलेइ अहअटि?फागुँइ कहलेइक – हैँ दिदि ।तखन मुगिँइ फागुके सुनाउलेइक जे अहअ छउआटि हामर घारैँ खाटि खाइलाइ पारति रे फागुआ?पालहाने हलेइक मकरिँइ सभे काम जानेइ। आर खाटि खाउआक कथा कहेहिस तअ ? मकरिँइ तर बेटाके खाटि खाउआउतउ। उटाक लेइ तर कनअ भाभना नेखउ।

मुगिअ आपन मने सँचि देखेइस जे गनुके केउ तअ बेटि देउएलाइ मानअहत निहि। आर एरा आउलाहात मके गसतेलाइ। ताकर उपर फागुआक मामाघार माने हामर ले अरा दड़हइ हेकत। केनिआइटि लेड़हि हेकेइक तअ किना हेतेइक। काम पाइट तअ भालइ करेइ। मेनेक एतेक तुरतातुरति काकअ ना जानाइ बिहाटा केसन हेतेइक । हामरअ तअ भाइ भइआद , कुटुम बाटुम आहात । लुकाइ छापाइ बिहाघार करले अरा किना कहता। एहे भाभि मुगिँइ अराके कहलेइन, सुना बाबुराइ ,हामर तराक कथाटा मानेइते कनअ बेज नेखि। मेनेक काकअ ना जानाइकुन बिहाघार कराटा केसन हेतेइक, तराइ कहा।

फागुँइ कहलेइक –सुने दिदि ,तर एहे बिहाघारेक भजकाजेक सभे खरचापाति देबउ । एखन डेरि ना करि निछु तर छउआटा हामराके दे। हामरा बरके साजाइ लेबेइक। तँइ तर बेटा पुतहुके चुमाइ भितराउएक खातिर बिहाने साजि रहबे।

एहे कहि आरअ बुझाइ सुझाइ , गनुके लेइ फागुरा सुरुघुँटु पँहचअला। गनुके तुरतातुरति बर साजे साजाइ छामड़ातरैं बसाइ देलथिक। मकरिक सँगेँ गनुक बिहा पाइराइ गेलेइक। सभेकाइ हुबेक सँगेँ बिहाक भज खाला। हरखु आर सँजअतिक मुँड़ ले पाहाड़ निअर बझ जेसन नाभि गेलेइक। बिहान हेउएइते माहान फागुँइ बाज बाजना डाकि आनि आरअ लकजन लेइ बर केनिआइके आमडि पँहअचाइ राखलेथिन। बाज बाजनाइ गटा आमडिके उठाइ आर बसाइ देलथिक। बर केनिआइ देखि गटा गाँउएक लकेक हाइचकि लागि गेलेइन। बर केनिआइ देखासुना नाइ गाँउएक केहु जानला निहि आर बिहा करि गनुआ घार ढुकि गेलाक, सँगेँ एक गरुगाड़ि जइतुक लेइकुन। मुगिँइ बेटा पुतहुके चुमाइ घार भितराउलेइन। मकरिँइ सिँथिँइ सिँदुर पाइकुन ससुरघारैँ गड़ राखलि। जइतुकगिला राखेक लेखेअ मुगिक तेसन घार नेखेइक। अहअ लेखेइ ,कुँड़िआटाक एककनाइ जइतुकगिला जपअथपअ करि राखि देलथिन । फागुँइ मुगिके कहलेइक , एकरबादैँ कुटुम बाटुम, गाँउघार सभेके तअ भज देउए हेतउ। निहितअ समाजेक लकैँ ध्‌ारबथु । भज ना देले एकघरिआ करि देबथु। उटाक तअ एकटा सलहा करे हेतेइक। मेनेक मुगिक घारैँ तअ थिति पुँजि कनइ नेखेइक ।भजेक नाम सुनि मुगिँइ मुँ टा काँचुमाचु करेइस देखि फागुँइ कहलेइक, डराइस ना । एहे फागुआ रहेइते तर कनअ भाभना नेखउ। भजेक सभे खरचापाति हामरा उभब। तँइ निछु एकटा दिन धारिज करैँ । मुगिँइ कहलेइक ,उ सभे मँइ कनइ जानँ निहि ,जे पारबेहे तराइ करा। फागु तखन गाँउएक माहातक ठिन गेलाक आर दिन धारिज करि मुँगिक भाइ भइआद ,आड़ पड़सि सभेकर साउताँइ बिहाक भज पाइराइ देलेइक। गटा आमडिहेक छउआ ले बुड़हा , कुटुम बाटुम , भाइ भइआद सभेकाइ लुलुहा चाटि आमभापुरुन करि भज खाला। बिहाक भजेक सभे खरचापातिटा हरखुँइ देरअहेइक।

मकरि आइज आमडि गाँउएक बहु। मुगिक भाँगअल फाटअल घारैँ नउआ जिबअनेक उचरन हेलेइक। एककुँड़िआ एकटि टिनेक आगुड़ेक घार, चाइरअबाटैँ भदरभँग। कापाड़ेक लिखअल मने करि मकरिँइ मनटाके बउध्‌ा देइ, सँगसारटाके साजाइ गुछिआइ केसे राखा जातेइक अहअ बुइध ठाने लागलि। मेनेक सभेक ले बड़अ बेज हेलेइक आगु पेटेक चिनताटा गुचाइ हेतेइक। काहे नअ भुखा पेटैँ कनअ काम उसरअतेइक निहि। सास तअ बुड़हि हेइ गेलाहि आर सँइआँ तअ लेलहाभैँदा। सँगसारटाक जिबन एखन मकरिक हाँथैँ । हरखु आपन बेटिक ससुरघार आउलाक मकरिके लेगेलाइ। एहे पहिल बेहाइघारैँ गड़ राखलाक हरखुँइ। बेहाइघार देखि तअ अकर मन काँदि उठलेइक। घार दुआइरेक जुइत नाइ। आकराइएँ सँगसारटाके आँकड़ाइ राखलाहेइक। एसन हालैँ मकरिँइ जिनगानि पुहाति केसे करि। देखलेइक , मकरिँइ घारेक दुआइरटाके माटि देइ लेसेहेइक। पानि झँकरि इठिन उठिन पसलि गेलाहेइक। "बड़अ मिँआ" कहि डाकेइतेइ मकरिँइ आपन बापके देखि मुच करि हाँसि हाँथेक कामटा छाड़ि चाँड़माँड़ हाँथ धइकुन एकटा खाटि आँगनाटाँइ बिछाइ देइ बसेलाइ कहलेइक आर घार ढुकि एक लटा पानि आर एकटा काँसाक थारि लेइ बाहाराइकुन हरखुक गड़ धउआइ देइ गड़ लागलेइक । हरखुँइ सँगेँ आनअल सनदेस पिठाक गाँइटटा मकरिके धराइ देलेइक । पिठाक गाँइटटा घारैँ राखि आपन बापके घारेक खजपुँछार लेउए लागलेइक । भाभेइस, बेटिक मुँड़ैँ सिँदुर गिरि थुबड़ि नामटा तअ गेलाहेइक। आर लकैँ कनअ कहे निहि पारता। मँइ मकरिके लेले जाम। उहाँइ जेसन पारति खाटिखुटि खाति। एहे सँचिकुन हरखुँइ आपन बेटि मकरिके कहलेइक, बेटि तँइ एसन ससुरघारैँ खाटेलाइ निहि पारबे। मर सँगेँ तँइ सुरुघुँटु चाल, उहाँइ रहबे। बापेक कथा सुनि मकरि चमकि उठि कहलेइक, तँइ किना कहेहिस बाप! एकमास मर बिहा हेल निहि हेलाहि, आर तँइ छाइड़बेइड़ेक कथा कहेहिस ! मँइ एहे ससुरघार छाड़ि आर काँहुँ निहि जाम बाप। कापाड़ैँ मर जे आहि, अहटाइ हेति। हामर लेइ आर तके भाभे निहि हेतउ। आर तँइ जे कहेहिस, तर घारैँ जिनगानि पुहाउएलाइ, उ आस तर पुरुन नेहि हेतउ बाप। काहे नअ बेटि छउआक नइहर आस माँइ बाप जतेक दिन। ताकरबादैँ दादा भउजाइरा राइतदिन छिटछाट करेइते रहता। हामर

बिहाक खातिर तके बहुत जहत पाउए हेलाहउ बाप। आर तके कसटअ देउएलाइ चाहँ निहि। तँइ निछु एहे आसिस दे, जेसे मँइ आपन ससुरघारेँ सुखेँ सँगसार करे पारँ। बेटिके बुझाउएक निअर भाखि आर हरखुक मगअजे आउलेइक निहि । मकरिक कथाक ठिन हाइर सिकार करि कहलेइक, तर भालइ मर भालअ बेटि। तके मँइ पहिल लेगेलाइ आउलाहँ । कइदिनेक खातिर चाल। तर सासेक ठिन बिदाइ लेइ हामरा एखने जाब।

मकरिँइ कहलेइक, सासरा झुड़ि लाइ गेलाहात। आर तर जामाइराउ घारँ नेखत । आउए दिहिन, ताकरबादेँ जाब। बेरा घुरि आड़बेरा खने मुगि आर गनु घार घुरला । हरखुँइ बेहाइन आर जामाइएक ठिन बिदाइ मागि मकरिके लेइ सुरुघुँटु उजालाक।

छ दिन बादेँ गनु आपन ससुरघार गेलाक, सँगेँ बाखइरेक एकटा काकाक बेटाक सँगेँ। बिहानेइ बाहाराल दिअ भाइ चलि चलि जाइएइतके ससुरघार पँहअचअला खरअ दुपहरेँ। नउआ जामाइएक आदर जतअने कनअ कमति हेलेइक निहि। ताकर घुरिदिन मकरि आपन सँइआँक सँगेँ ससुरघार डहरअलि। हरखुँइ आपन तिरिआ आर बेटाराक सँगेँ सला करि एक गाड़ि रलाकाठ , एकगाड़ि पँआर आर धाने चारेँ मिलाइ भतति एकटा गाड़ि, घार छारा मिसतिरि अराक सँगेँ सँगेँ पाठाइ देलेइन। भँदु अराक सँगेँ गेलाक। मकरिक ससुरेक ढिँड़हाटा छाराछारि करेइते आर जतेक सामानपाति लागतेइक सभेटा भँदुइ मुहाजहा करि, मिसतिरिराक सँगेँ रहि घार छारा, जुइतजाइत करि तबे घार घुरताक। आमडि जखन अरा पँहचअला तखन साँझबेरा हेइ गेलेइक।

घारेँ चार धान भिभर करि, बाकि गाड़िगिलाक सामानपाति नाभानाभि करि आँगनाइ राखि देलथिक। एक दुइ करि कुलहि डाँड़िक लक आइ आइ देखि जाहात। एतेक छुटु आँगनाइ लक आँटाहात निहि। मुगिँइ बेहाइघारेक पिठा सभेके बाँटि देहेइन। पिठा खाइ खाइ सभेकाइ गालमारअहत। केहु मुगिके साबाइस देहेथिक तअ केहु मकरिके। आरअ केहु हरखु माहातअके साबाइस देहेथिक। धान चार देखि मुगिक मन हरअखे भरि गेलेइक। मकरिँइ भात राँधेइस। आर आपन नइहर ले आनअल डाकरउआ खुखड़ाटा काटि मास तिअन राँधलेइक। हाँसि फुरति करि सभेकाइ मास भात खाइकुन फिँग फुटा निरन रातिँइ आँगनाइ सुतला। बिहानेइ मुँ हाँथ धइकुन मिसतिरिरा घार छारेलाइ ठेसि गेला। पुरना पेला बाता जतेक रहेहेला सभेके ताड़ि फँकि देलथिन। नउआ पेला, बाता, मुधइन लागाइ मनेक जखे घारटा करेक आड़ापाड़ा करे लागला । टाना पाँच दिन काम करि घार छारा आर घारटाक चाइरअबाटेँ आड़चाला बनाइ देलथिक। भँदुक सँगेँ मिसतिरि आर लकजन सभेकाइ काम निपटाइ आपन गाँउ चलि गेला। मुगिक घारेक साजान देखि गाँउएक लकेक चइख थिराइ गेलेइन। जाइएक खने भँदुइ मकरिके कहि राखलेइक, बन ले कइ बझा झाँटि लेइ आउबे। मँइ कइदिन बादेँ एकटा लक लेइ घुरि आउअम आर एहे भदरभँग आँगनाटाक चाइरअबाट घड़ि महरमुँद करि देबेइक। देखबे घारटा आरअ मानातेइक।

मकरिँइ एखन आपन घारेक सामानपातिगिला गुँइचगाँच करि राखि निजेक मन जखे साजाइ लागलेइक। जे घारटाके देखि गाँउएक लक एतेक दिन नाख चिपि पाइराइ हेला अहअ घारटाके देखेक खातिर एखन सभेकाइ काम छाड़ि रगदाइ आउअहत। जे मेहेरारुगिलाँइ मकरिके लेड़हि ,बेसँद देखि पहिल पहिल इरखा करि हाँसि देइ हेलथिक, आइज अराइ मकरिक सँगेँ सँगजड़ि बसअहत। अराइ एखन जाँहाँ ताँहाँ मकरिक नाम गाहि बुलअहत। मकरि लेड़हि हेलउ सभे कामे जे पाखुआज हेकि उटा एकर काम, हुनर देखि गाँउएक सभेकाइए बुझि गेला। फुहड़ घार दुआइरके साफा करि राखा, बुड़हि सासेक सेबा सुँसार करा, लेलहाभँदा सँइआँके हाँथेँ धरि धरि काम सिखाइ, ठानि ठानि काम करि कइमासेक भितरेइ मकरिँइ सँगसारटाक चेहेराटाइ बदलाइ देलेइक। मकरिक छुटुलेइ एकटा धँचर आहेइक, अँइ देखेइते सुनदर नि हेलेउ सिगिरगिसिर, घिसअट, मेइलाझेइला एहेगिला पसँद करेइ निहि । सभे खन साफ सुथर रहेइ। आर घार दुआइरकअ साफ सुथर राखेइक। निछु उटाइ नहेइक, मकरिँइ राँधाराँधि दमे जुइतेक करे पारेइ। अकर हाँथेक राँधअल तिअन एकधाँउ खाले घुरि खाइएक मन करतउ। घार बाखइर कुलहि डाँड़िक मेहेरारु ,बेटि छउआरा डिभि लेइ मकरिक ठिन तिअन मागे आउअत। गरिब हेलउ मकरिँइ काकअ सुधा हाँथेँ घुराइ

देइन निहि। एसन किना कनअ दिन निजके सुधाइ भात खाइलाइ हेउएइक। ताउ काकअ उ कथाटा कहेइन निहि। ससुरघारेँ मकरिक मुँहेंक सँगेक अभाब नाइ।

निकामिआ गनुइ एखन टुकुटाकु सँगसारेक काम करेइ। भागे लेल दुइटि छागइर ढाइड़ दुइ बेरा चराउए लाइ जाइ। मकरिक कामेक हुनर देखि कुलहिकेरे एकलकैँ छाइगर गिला भागे देलाहेइक। मकरि रजाम गाँउएक फुलमनि, कलाबतिराक सँगँ बन जाइ , काठ बझा आनेइ आर धुरेक गाँउ बेचेलाइ जाइ। बन ले गाँउ उपरि काठबझा आनेइक। मकरिक बझा देखि गाँउएक लक चकाइ जात आर कहाकहि हेउअहत ,गनुआक बहुटिक चलेक लुइर नाइ आर देखा गाँउ उपरि काठबझा आनेइक। बहुटिके साबाइस देउएलाइ हेउएइक। मकरिँइ नइहरेक साउताक आस ना करि निजेक सआँग खाटाइ सँगसार चालाउएइ। एहे लेखे देखेइते देखेइते कइटा बछर बिति गेलेइक।

मकरिक दुइ दादा, दुइ बहिन सभेकाकर बिहा हेइ गेलाहेइन। उमइर भारेँ हरखुँइ ठेँगा धरि चलेइ। कुटुम घार निजेक खेमअताँइ आर आउआ जाउआ करेलाइ पारेइ निहि। बेटा बेटिराकर बिहा देइकुन सँजअतिँइ बेटा पुतहुराके सँगसारेक आपाभार देइकुन एखन फुरफुइरा मने घुरि बुलेइ। मन उजाले काम करेइ, निहितअ निहि। भँदु आर गँदु दिअ भाइएइ बेटाबेटिक बाप हेलाहात। नाति, नातिनराकर सँगेँ हरखु आर सँजअतिक जिबन बिति जाहेइन। मकरिक घारेँ एखन एकगट छागइर। गनु राइतदिन छागइर लेइ भुलि रहेइ। माड़पानिक टान कबेइ चलि गेलाहेइक। एकटा कठाघार बनाउला। खाटालि आर छागइरेक दउलतेँ बिघा तिनेक खेति जमि किनलेइक । एहे बछर एकटि गाइ आर एकहार डाँगर किनेक आस करला। मकरि एखन भतति गातेँ आहि। मेनेक काम छाड़ा मकरि रहे पारेइ निहि। जतेक खन जागि रहति कनअ निहि कनअ काम अके करेइ हेतेइक। रजाम अनगुते उठेइ आर अहअ जे काम धरेइ जे, ना निदा तड़िक उपुड़झुपुड़ करते रहेइ। अकर बन जाउआ सँगिनरा माना करथिक जे, एसन हालेँ तँइ एखन बन आउइस ना, मेनेक मकरिँइ काकरअ कथा सुनेइ निहि। निफिकिर बन जाइ आर आउएइ। सँगिनराके कहेइन, मर कनअ बगड़ हेति निहि । हामर लेइ तरा भाभिहा ना। दिन गनिगानि अकर नइहरेक दादा भउजाइ ,काकि, मसि फुफुरा नमासि लेइ आउरहत। अराउ मकरिके कहलेथिक, एखन उपुड़झुपुड़ काम कम करबे। मेनेक काकरअ कथाँइ कान देलेइन निहि। आपन मरजिँइ आगुक निअर काम करबे करेहेलि। साइबबत, एकदिन मकरिक करा आलअ करि एकटा सुनदर बेटा आउलेइक। कराँइ बेटाधन पाइकुन मकरिक मनटा हरअखे भरि गेलेइक। आर बुड़हाबाप, माहामाँइके मने मने सँउरि गड़ लागलेइन।

मुगि एखन दुधुमाँइ। उमइर भारेँ एखन आर काम करेलाइ पारेइ निहि। बसि बसि आपन नातिके खेलाउएइ। आर आपन पुतहुक गुनेक कथा लकेक ठिन गाहि बुलेइ।

कुड़मि जनअजाति हेकिअ आदिबासि (गित)

डॉ० विभीषण महतो बंसरिआर
अध्यक्ष, आदिबासि कुड़मि समाज,
कुकड़ु प्रखंड समिति।

कुड़मि जनअजाति हेकिअ आदिबासि,
आहेक नेग निति आहेक आपन सँसकिरिति ।
केसअने बाँचाइ पारि हे आपन निति के छाड़ि,
दसर निति धरि सेसे हेइ गेलिअ
हाले–डाले हे ।।1।।
(धुआ...)
उठा–उठा कुड़मि जागा–जागा कुड़मि,
लड़ा हक अधिकारेक लड़ाइ हे ।।2।।

आपन भाखि छाड़ि दिसा हाराइ गेलि,
आपन चारि नेगाचारि सभे भुलाइ गेलि ।
पड़ि गेलि बेजाञ खाले हे,
हामरा कुड़मि जनअजाति सारना धरअमेक मति,
परकिति कर पुजारि हे ।।3।।
(धुआ...)
उठा–उठा कुड़मि जागा–जागा कुड़मि,
लड़ा हक अधिकारेक लड़ाइ हे ....।।4।।

नि हेतेक पुरअहित बामहअनअ बइसनम,
नि हेतेक समाजे दहेजेक परचलअन ।
मने–मने भाभि देखा हे,
बिभिसअने कहे हामर मरखि पुजा पासाइ बिहाइ,
काकरअ दरकार नि हेतेक हे ।।5।।
(धुआ...)
उठा–उठा कुड़मि जागा–जागा कुड़मि,
लड़ा हक अधिकारेक लड़ाइ हे ।।6।।

Khemta... Rag (Git)

Dr. Pratap Chandra Mohanta
Member, Adibasi Kudmi Samaj,
Central Committee.

Bhai bohin sobai mesi,
koha koha apon Bhakhi go,
Kudmali mainek bhakhi diha na chhadi
Korom dair dhori awa pon kori,
Banchai rakhiha apon bhakhi chari. ||1||

Gaon bhuin mainek sori,
bhakhichari munhek Siri go |
Kudmali mainek bhakhi diha na chhadi
Korom dair dhori awa pon kori,
Banchai rakhiha apon bhakhi chari. ||2||

Bodo Pahad budhababa,
Mahamain Korom Raja go |
Gaonua Deuti Dhorom Deuta seba kori
Korom dair dhori awa pon kori,
Banchai rakhiha apon bhakhi chari. ||3||

कुड़मालि भाखिक धचअर नेतैं खेजान रित
(Spelling rules according to the features of Kudmali language)

रामेश्वर महतो,
साहितकार

धरति माहाने सात हाजारलेउ ढेइर भाखि आहेइक। परिबेस, अलअग पानि–हाउआकर सँग खाप खाउआउएक तैंहैं, हड़राके नुड़अन–झिंकअन अलअग करेलाइ हेउएइन। उखने अराक चाइल–चलअन आर टँटिक उसरनि आन परिबेसेकले भिनु हेउएइन। ताकअर खातिर भिनु भिनु देसैं भिनु भिनु भाखिक चलअतक आहेइक।काहेनअ आपन आपन माँइ भाखिक सँग लहुक टानेक गुनैं गाढ़िआ नाता जड़ाइ आहेइक। सभे जाइतेक आपन आपन माँइ भाखि आहेइन। निजेक माँइ भाखिँइ फदड़ेकर सँगैं ढेइर चलअतक आर नामजाइजका भाखिहुँ हामरा कथा कहिअ आर चिसा–पढ़ा करिअ। दुनिआ माहानैं कतेक माँइ भाखि आहेइक, उटा आटकाल करले हाइचक हेउए हेउएइक।

बदअल हेउआटा परकितिकर निअम हेकेइक। ताकअर खातिर सिरजनेक पहिललेइ हड़ समाज सुघड़अनेक सँगैं सँगैं भाखिकरअ हेरफेर हेलाहेइक आपने आपने। तैंइ एकटा देस निहितअ एकटा तलापाटेक भितरेइ कतेक निअर अजब अजब माँइ भाखि आहेइक, ताकर हिंसाब निकास कराटा आउसानेक काम नहेइक। बहुत निअर भाखि आहेइक, जन गिलिनेक नाम तड़िक सभेकाइ जानिअ निहि। काहेनअ कतेक भाखि हेराइ मुहालाहेइक आर कतेक भाखि कम लकैं बजकअत।तेसने धरति माहाने कुड़मि जाइतेक माँइ भाखि कुड़मालि भाखिटाउ एकटा भिनु निअर भाखि हेकेइक। किछु बछर धरिकुन कुड़मालि भाखिकर बेजाँइ हामदुमि चलेहेइक। काहेनअ आपन माँइ भाखि लेइकुन कुड़मिराक चनहा, चज, गरब सभे आहेइन। आपन जाइतेक सता जिआइ राखेक हक धरतिक सभे लेखेन जाइतेक हड़राक आहेइन। मेनतुक, एहे चिसा–पढ़ाक जुगैं कनअहेलअउ भाखि टेकाइ राखेलाइ हेले अहे भाखिटाके सरजुइत भाँउअरेक नेतैं सिखिकुहुन चिसापढ़ा करेक दरकार आहेइक। काहेनअ चिसअल भाखिकर मुल हेलेइक भाँउअर। भाँउअरेक बेउरा हेउएइक बिगगानेक निअमे बाँधअल। ताथेइ भाँउअरेक रितैं गटे भाखिटाकर धचअर, साड़ागढ़अन, आखअड़ खेजानेक भाँइत, आरअ सभे लेखेन भाँइत बाचनिक निअमे बाँधअल रहेइक। ताकअर खातिर भाखिक धाँचाटा बदलि जाइएकर डर रहेइक नि।

भाँउअर नेतैं कनअहेलअउ भाखिक अछड़अन पछड़अन करेलाइ हेले फेड़ले निंखुत करिकुहुन खदिनदि करेक दरकार आहेइक। एकटा बाचनिक भाखिक खदिनदि करेक खातिर एकमुइठैं सभे निअर भाखिक मुल भेदबेउरा जानेक दरकार आहेइक। काहेनअ कनअहेलअउ कलेकर खुचरान सानाफानाकर लेइकुहुन जाने हेले, आघु गटाइला कलेक लेइकुहुन निंखुत गिआनेक हकदार हेउएक दरकार आहेइक। जेसअनः–

(१) भाखि किना हेकेइक?

(२) भाखिक लछना किना?

(३) भाखिक धचअर किना?

(४) भाखि मुलैं कइ निअर आर किना किना?
(५) बाढ़अनसरिआ भाखि (साधु भाषा) आर मुढ़िआल भाखिँइ (चलित भाषा) फरअक किना आहेइक ?
(६) भाँउअर किना?
(७) भाँउअरेक दरकार किना?
(८) कुड़मालि भाखि किना?
(९) कुड़मालि भाखिक खेजान धचअर किना?
(१०) भाँउअर नेतैं कुड़मालि भाखिँइ खेजानेकर भाँइत केसअन हेउएइक दरकार आहेइक?

(१) भाखि किना?

जन धमअस हड़ेकर टँटिक साहाइएँ उसरेइक आर जाकअर ठेघैं मनेक भाब फअइरछाइक अहेटाकेइ भाखि कहथिक। एकटा ठहअर राखेलाइ हेतेइक, कनअहेलअउ धमअस हेलेइ उटा भाखि हेउएइक नि। जेसअन,– हाँतथापड़ि देइकुहुन डाका, आँइख मिटकाइ निहितअ इसाराँइ किछु कहा। एहे गिलिन भाखि नहेइक। फेइर उसरअन सरजुइत धमअस हेलअउ भाखि नि हेतेइक, अहे उसरअनिटाक माने रहतेइक।

(२) भाखिक लछना आर धचअर किना किना?

कनअहेलअउ धमअस निहितअ साड़ाइ भाखि नहेइक। निँखुत बरनिमा गमाइक असने धमअस हेलेइक भाखि। निछु अरअठ गताइल धमअसे हेलेइक भाखि। पागलामु बजकअनिटा भाखि नहेइक। भाखिँइ एकअर–अकअर माहानैं भाभेक लेउआ–देउआ हेउएइक। बजकअनिक भितरिआ ढँग फअइनरछाउएइक। हड़ेकर चाइल चलअन आर चारिके निखराउएइक भाखिँइ। धमअसेक ताइएँ बनअल साड़ागिलिन टुम गढ़ाइएक खातिर चलअन हेउएइक। कनअ एकटा तलापाटैं हड़रा भाखिकर चलअन करअत निहितअ करता। सभे भाखि आपन ठाँइएँ उदअम आर हकदारि थाहि रहेइक।

(३) भाखि मुलैं कतना निअर आर किना किना?

भाखि मुलैं दुइ निअर हेउएइक।
(क) कहाइल भाखि निहतअ फदड़ानि भाखि।
मटामटि जन भाखिँइ हामरा कथा कहिअ, एकअर अकअर सँग भाभेक लेउआ–देउआ करिअ निहितअ आघुक दाँजअनि सदराइअ, उटाके कहाइल भाखि निहितअ फदड़ानि भाखि कहाइक।
कहाइल भाखि दुइ निअर हेउएइक।
जेसअन– (अ) तलापाटिआ भाखि आर (आ) दिगअरिआ भाखि।
(अ) तलापाटिआ भाखिक धचअर गिलिन हेलेइकरू– एहे भाखि बाचिक कनअ तलापाटेक हड़राक चालाउअल भाखि। तलापाटिआ भाखि समअइएक फरअकैं बदलि जाइक। एहे भाखिटा छटनागपुरेक पुरखेनि–चारिक धन नेतैं धराइक। तलापाटिआ भाखिक रुप बनाउअल नहेइक। तलापाटिआ भाखि पुरखेनि सँगअत (लक साहित) सिरजअनेक सरजुइत भाखि हेकेइक निहितअ परकितिआ भाखि हेकेइक। तलापाटिआ भाखि अलअट हेकेइक। एहे भाखिँइ भाँउअरेक निँखुत रितेक मान राखे पारेइक नि।
(ख) चिसाइल भाखि निहितअ चिसेक खातिर भाखि:– जन भाखिँइ पँथि, नेउतापात निहितअ कनअहेलअउ किछु चिसअन चिसाइक उटाके चिसाइल भाखि कहथिक। चिसाइल भाखि आरअ दुइ निअर हेउएइक।जेसअन:–
(अ) बाढ़अनसरिआ भाखि (साधु भाषा) आर (आ) मुढ़िआल भाखि (चलति भाषा)।

बाढ़अनसरिआ भाखिकर धचअरगिलिन हेलेइक:– इटा निछु चिसाइल भाखि नेतैं चलअतक रहेइक निहितअ निंखुत कहाइल भाखि नेतैंउ चलअन हेउएइक। बाढ़अनसरिआ भाखिकर उसरअन ढेइर गाढ़ि हेउएइक। एहे भाखिटा बदलेइक निहि। बाढ़अनसरिआ भाखिँइ सरान साड़ा आर अउजि साड़ा पुरा टाइला चलअन हेउएइक। बाढ़अनसरिआ भाखि गालमारा, बजकअन निहितअ छेइबेकर कथा काटाकाटिकर सरजुइत नहेइक। बाढ़अनसरिआ भाखिँइ भाँउअरेक रित–भाँइत निंखुत आर दमगर करेइक।

(आ) मुढ़िआल भाखिक धचअर :– कहाइल भाखिक निअर मुढ़िआल भाखिहुँ भाँउअरेक निंखुत रितेक मान राखे पारेइक नि।

(६) भाँउअर किना?

जन भाँइतेक ताइएँ कनअ भाखिके निंखुत करिकुहुन खदिनदि कराइक आर भाखिकर रुप–गढ़अन चरचाइक अहे भाँइतके भाँउअर कहथिक। टुइएक बुझेक हेरफेर आहेइक, जन पँथि माहाने भाखिकर खदिनदि चिसाइल रहेइक उटाके भाँउअर पँथि कहथिक। फेइर माँइ भाखिक सुघअड़ सुथअर रुप जानेक खातिर जन पँथिकर साहाइ लेउए हेउएइक, अहे पँथिके माँइ भाखिक भाँउअर कहथिक।

(७) भाँउअरेक दरकार किना?

कुड़मालि भाखि सुघअड़ सुथअर करिकुहुन सिखेलाइ हेले भाँउअर पढ़ेइ हेउएउएइक। भाँउअरेक निंखुत गिआन निहि रहले, कुड़मालि भाखि आर सँगअत जुइतसिर फअइरछाइके जानाइक निहि। भाँउअरेक ताइएँ टुमेक गड़हअन लेइके ठिक गिआन पाउआइक। साड़ाक अरअठ बदअल बुझाइक। टुम माहाने एक निहितअ ढेइर टुमखेजा (पद) रहेइक, उगिलिन केसअन करि रहेइक, उटा भाँउअर पढ़लेइ जानाइक। भाँउअरैं भाखिकर गढ़ानिक भाँइत बुझाइक। भाखिक उचरअइन आर बदअल समफला जानाइक। धमअस, साड़ा, टुम हेनतेनेकर निंखुत बरनिमा आर खदिनदि पाउआइक।

(८) कुड़मालि भाखि किना?

कुड़मि हड़गुसटिक माँइ भाखि हेकेइक कुड़मालि। ताकअर माने, भाखि सिरजनेक खने कुड़मि जाइतेक हड़रा जन भाखिँइ मनेक भितरेक भाउटा लेउआ–देउआ करेतेला अहेटाइ कुड़मालि भाखि।जन जाइतेक हड़रा जन भाखिटा सिरजलाहात अहे जाइतेक नामेकर नेतैं अहे भाखिटाके नामाउलाहथिक। तेसने कुड़मि जाइतेक हड़रा भाखिटा सिरजलाहात, ताकअर खातिर भाखिटाकर नाम हेलाहेइक कुड़मालि।कुड़मालि भाखि परकितिआ हेकेइक। कुड़मि हड़गुसटिक हड़रा चासबास सिरजअलाहात। कुड़मिरा पिढ़िक पिढ़ि खाटुआ लक हेकअत। ताथेइ बुढ़ापुरखा कुड़मिराक टँटिक राउ परकितिआ रहरहेइन। तैंइ कुड़मालि भाखिटा एकटा उदअम भाखि हेकेइक। परकितिक सँउरअनेक आचार–बिचार आर आपन चारिक परब–तिहार पालनेक समाजिआ दहरमबहरअमेक टासिलैं कुड़मालि भाखिक भिनु निअर महक उठेइक।

(९) कुड़मालि भाखिक खेजान धचअर किना?

कुड़मालि भाखिक खेजान रित आपन चिसअइ (लिपि) नि हेले निंखुत हेतेइक नि। मेनतुक कुड़मालि भाखिक भाँउअरेक धचअर नेतैं बाँगला आर देबनागरि चिसअइ माहान केसअन हेउएक दरकार आहेइक, ताकरअ भेदबेउरा देउआलेइक। उटा हेले कुड़मालि भाखिक उदअमिआ टेकि रहतेइक। कुड़मि हड़गुसटिक हड़राक रहअन–सहअन, नुड़अन–झिँकअन आर गतअरेक खाटालिक ताड़ासैं कुड़मालि भाखिक बेलअग धचअर आपने बनअलाहेइक। पुरखेनि जुगेक कुड़मि जाइतेक हड़रा समाज गढ़ि, गतअर

खाटाइकुन जिनगानि पुहाउएतेला। अखरा गाछगाछड़ा ले उचराइके बनुआ पसु–पाखुड़केउ पसापाला करिके आपन गिरहसतअ माहान ठाँइ देलाहेथिन। ताथेइ अखराक मन–गतरँ छटअ–बड़अक वारबिच नेखलेइन। तँइ परकितिक निअमे अखराक टँटिक उसरअल भाखिक धमअसेक उसरअनि कम–साँगि नि हेइके एके समान हेलाहेइक।

(क) कुड़मालि भाखिक बाचिक धचअर हेलेइक– सभे साड़ाक माहान सँजड़ाइल एकुकटि जड़ (ब्यञ्जन) आखड़ेक उसरअनिकर समअइटा बराबअइर रहेइक। मेनतुक कनअ जड़ (ब्यञ्जन) आखड़ेक उसरअन समअइटा झाइल हेले, अकअर भितरेक अड़ आखड़टि बिदकि बाहराइके सदराइक, जदि अहे जड़ आखड़ेक सँग कनअ अड़ आखअड़ जड़ाइ नि रहेइक हेले। अहे खातिर कुड़मालि भाखिक साड़ाँइ जड़नि आखड़ेक चलअन हेउएइक नि। जेसअन,– बड़, बड़अ, जड़, जड़अ, जाब, महअक, सगअड़, बजकअन, धमअस, अकअर, अकरअ, सुघअड़, सुथअर, गबचअन, रनजअन, हपअसटअ हेनतेन।

(ख) फेइर सभे साड़ाकर माहान सँजड़ाइल एकुकटि अड़ (स्बर) आखड़ेक उसरअनिकर समअइटा बराबअइर रहेइक। मेनतुक कनअ अड़ (स्बर) आखड़ेक उसरअन समअइटा झाइल हेले, ताकअर सटासटि अड़ आखड़टाक उसरअनिटा खाटअ हेइके सदराइक, बराबइर उसरअन धचअरेक खातिर। ताथेइ कुड़मालि भाखिँइ झाइल उसरअनेक ई, ऊ, ऐ, ओ, औ एहे अड़ आखड़ गिलिनेक चलअन नेखेइक।जेसअनः– आउएइस, कहेइक, बहेइक, हेलेइक, देलअउ, धरेक, धरेइक, गढ़ेक, गढ़ेइक, आउआ हेनतेन।

(ग) कुड़मालि भाखि सिरजअइआराक बेदअम गतरिआ खाटालिक तँहे कथा कहेइतके मगअजँ ढेइर जाँक लागेइन। ताथेइ नाखिआ रेगेक अड़ आखड़ " ँ " चाँदबुँदाक ढेइर उसरअन हेउएइक।(इठिन एकटा कथा ठहअर राखेलाइ हेतेइक जन भाखिँइ " ँ " अड़ आखड़ेक चलअन ढेइर रहेइक अहे भाखि बजकअइआराक सअइसटअब चलअनेक साबिद पाउआइक। आर अहे भाखिटा ढेइर पुरना हेकेइक ताकअर निमुद पाउआइक।)

कुड़मालि भाखिक साड़ाँइ एकमुइठँ दुइटि जड़ निहितअ अड़ आखड़ेक उसरअन हेउएइक नि। ताथेइ ङ, ञ, ण, य, श, ष, ट, ं, : एहे आखअड़ गिलिनेक चलअन नेखेइक।जेसअन:– मँइ, तँइ, अँइ दिंआ, मिंआ, सँइआ, गँइ, कहँइ, टाटाँइ, रिझुँइ, रिझँ, लँ, दँ, कहँ, रहँ, गुँसाँइ हेनतेन।

बराबइर उसरअन धचअरेक खातिर झाइल उसरअनेक "ष"आर "श" बाद देइके निछु "स"एकर चलअन हेउएइक कुड़मालि खेजाने। जेसअन:– आदिबासि, सिब, ससागँकअ, आसाड़, सराबन, सरबअत हेनतेन। कुड़मालि भाखि अइन जाइतेक हड़राकरअ माँइ भाखि हेइ जाइन, जदि जनमअल खनले फदड़ि फदड़ि केउ भाखिटा सिखअत हेले। उटा पालअहारि माँइएक पसुआ छअउनाक निअर हेउएइक। तेसने हामरा सुघअड़ सुथअर जिनगानि पुहाउएकर खातिर भाखि सिखिअ। मेनतुक आपन माँइके जुइतसिर जिआइ राखेक दाइभार छअउनाकेरे हेकेइक।

तँइ भाइ–भेआद सभेके हिआखुलेसा जहार रहलेइक।

विद्यालय से लेकर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर तक कुड़मालि भाषा के लिए वर्तमान में प्रयुक्त त्रुटिपूर्ण शब्द कुरमाली (KURMALI) को संशोधित कर कुड़मालि (KUDMALI) करना होगा। – *आदिबासि कुड़मि समाज।*

कुड़मालि जागरन गित

Dr. Shailesh Kumar Mahto
(M-A- & Ph-D- in Kudmali)
Member,
Adibasi Kudmi Samaj
Central Committee.

छटानागपुरे मुल खाँटि आदिबासि,
परकिति पुजअइआ हामर चारि अबिनासि ।
जनगननाइ सुजग लिखब एहे पालि,
मञ कुड़मि मर भाखि कुड़मालि ।
सारना धरम हामर लिखब एहे पालि,
मञ कुड़मि मर भाखि कुड़मालि ।।

बारअ मासे तेरअ परब,
एहेटाइ कुड़मि कर गरब हाइ रे हाइ ।
एकासि मुल गुसटि,
जनजातिक एहे पुसटि हाइ रे हाइ ।
काने गँजि राखबेहे एहे काथा खालि,
मञ कुड़मि मर भाखि कुड़मालि ।।

झाड़खँडे बाँगाले,
आसामे आर उतकले हाइ रे हाइ ।
आदिम जनजातिक पाँइते,
तेरअ समुदाइएक साथे हाइ रे हाइ ।
उनिस सअ तेरअक रिपट लेउआ टुकु भालि,
मञ कुड़मि मर भाखि कुड़मालि ।।

उनिस सअ पचास साले,
हेलि आइहअ हाले डाले हाइ रे हाइ ।
चिरअकाल निरबाक साजि,
राजनितिक जाले बाझि हाइ रे हाइ ।
छाड़ालिहअ एसटि सुचिञ दारुनअ चउछालि,
मञ कुड़मि मर भाखि कुड़मालि ।।

चंपा स्टेट का इतिहास

डॉ. राकेश कुमार महतो
प्रिंसिपल, बीबीएम प्लस टू स्कूल, धनबाद

वर्तमान समय में झारखंड के इतिहास के संबंध में जितनी भी किताबें प्रकाशित हुई हैं, वो सभी की सभी मूल रूप से "झारखंड का सांस्कृतिक इतिहास" किताब पर ही आधारित है। जबकि ये किताब खुद में ही काफी काल्पनिक और आधारहीन तथ्यो से भरी जान पड़ती है। इस किताब में कई वास्तविक तथ्यों को अनदेखी कर कई काल्पनिक, मनगढ़ंत और अप्रकाशित ग्रंथ को आधार ग्रंथ के तौर पर उपयोग किया गया है। इसमें "नागवंशावली" नामक एक काल्पनिक और अप्रकाशित ग्रंथ को एक आधारग्रंथ के रुप मे उपयोग किया गया है, जबकि इस नाम का कोई ग्रंथ न ही लिखा मिला है और न ही कथित समय में प्रकाशित हुआ है।

इसमें झारखंड की कुड़मि जनजाति के इतिहास को न केवल छुपाने और अनदेखी करने का काम किया गया है, बल्कि कुड़मि जनजाति के संबंध में कई हास्यास्पद बातें भी लिखी गई हैं और किताबों के अभाव में पाठक उसे ही परम सत्य मान कर चल रहे हैं। चलिए आज कुछ तथ्य और सत्य की टोह लेते हैं, ताकि भ्रम की बादल हट सके। इसमें इस तथ्य को नजरअंदाज किया गया है कि झारखंड की धरती पर झारखंड ही नहीं संभवतः भारत का पहला विधिवत राज्य की स्थापना खेरवाल वंश द्वारा लगभग 700 ईसा पूर्व में चंपा नामक राज्य की स्थापना की गई थी। उल्लेखनीय है कि ष्खेरवालष कबिला में 70% भागीदारी कुड़मि कबिला की थी।

645 AD में भारत की यात्रा करने वाले चीनी यात्री ह्युवेन त्सियांग ने अपने यात्रा वृतान्त में भारत के वर्तमान झारखंड राज्य के ष्चंपा राजष का उल्लेख किये हैं। इन्होंने अपने यात्रा वृतान्त में साफ साफ लिखा है कि इन्होंने चंपा राज की दौरा की थी, जिसकी राजधानी वर्तमान संताल परगना के राजमहल पहाड़ियों और भागलपुर के बीचोबीच वाले क्षेत्र में स्थित थी। इस राज की सीमा लखीलारी से राजमहल तक फैली थी। इस राज के अंदर काफी घने जंगल थे, जिसपर हाथी और जंगली जानवर चारों और घूमते थे। राजमहल क्षेत्र का नाम चंपा राज की राजधानी से सटे होने के कारण ही राजमहल पड़ी। चंपा के पूर्व मे कोईचिंग का राज था, जो कि जनरल कनिंघम के अनुसार वर्तमान संताल परगना में शामिल देश का पथ था।प्राचीन काल में यह राज्य हाथी दाँत, रेशम के कपड़े और शीशे के सामान के लिए प्रसिद्ध थी। मौर्य पूर्व काल में यह नगर एक विकसित व्यापारिक नगरी थी। अनार्य प्रदेश होने के कारण यह प्रदेश आर्य व ब्राह्मण वर्जित क्षेत्र था। इसी कारण कभी भगवान महावीर और गौतम बुद्ध ने भी इस राज्य में शरण ली थी।

चीनी यात्री फाह्यान ने भी इस राज्य की यात्रा की थी। इन्होंने अपने यात्रा वृतान्त में इस राज्य के वैभव की वर्णन की है। ह्वेनसांग ने इस राज्य का उल्लेख ष्चेनपोष नाम से की है। ईसा पुर्व 5वीं सदी में यह राज्य ष्चंपावतीष नाम से जाना जाता था। जैन ग्रंथ "ओपपाटिक शुत्र" में इस नगरी का सुन्दर वर्णन मिलता है। इस नगरी में पुण्यभद्र की विश्रामशाला, वहाँ के उद्दान और उद्दान में लगे अशोक वृक्ष का वर्णन मिलता है। इस ग्रंथ में कुणीका और महारानी धारिणी की यात्रा की भी उल्लेख मिलती है। इसी ग्रंथ में

भगवान महावीर की चंपा यात्रा की भी उल्लेख मिलती है। चंपा के कुछ राजपदाधिकारी और आन्तरिक स्वशासन व्यवस्था की वर्णन भी इस ग्रंथ में मिलती है, जो बिल्कुल आज के झारखंडी जनजातियों के स्वशासन व्यवस्था के समान लगती है। जैन ग्रंथ "उत्तरायन शुत्र" में चंपा के धनी व्यापारी "पालित"की कथा भी मिलती है। इस ग्रंथ के अनुसार 12वें तीर्थंकर "वाशुपुज्य" का जन्मस्थान चंपा नगर में होने का उल्लेख मिलता है। असल में अनार्य प्रदेश होने के कारण जैन धर्मावलंबियों को यह राज्य काफी सुरक्षित लगा होगा, इस कारण इस राज्य से जैनियों का विशेष रूप से लगाव हुआ होगा। इसलिए कई जैन ग्रंथ में इस राज्य का उल्लेख मिलता है। इस नगरी के शासक खेरवाल वंश या खेरवाल कबिला के थे। चंपा "कुरकुड" ने कुण्ड तालाब में पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापना की अनुमति भी दी थी। बीर स्वामी की वर्षा काल में यहाँ तीन रात बिताने का भी उल्लेख मिलता है। युवाच्वागं ने अपने यात्रा वृतान्त में चंपा राज्य का उल्लेख किया है। इनसे पता चलता है कि चंपा राज का ऐश्वर्य और वैभव सातवीं सदी और उसके बाद भी बरकरार थी। अंग महाजनपद के पुराने समय में यह राज्य मलिन, मालिन या माहामालिन नाम से प्रशिद्ध थी। जनरल कर्निंघम के अनुसार भागलपुर के वर्तमान चंपानगर या चंपापुर भी इसी नगर के अंतर्गत बसे हुए हैं।

साहित्यिक परिदृश्य से कई महाकाव्यों में भी इसका उल्लेख प्रमुखता से मिलता है। अथर्ववेद में इस राज्य को अनार्य प्रदेश होने के कारण अपवित्र माना गया है। विष्णु पुराण के अनुसार इस राज्य की स्थापना जनजाति सरदार पुतुलाक्ष के पुत्र चंप ने की थी। महाभारत के सनी पर्व के उल्लेख के अनुसार जरासंध ने कर्ण की वीरता को देखते हुए उन्हें चंपा का राजा मान लिया था, क्योंकि चंपा राजपरिवार के सदस्य काफी बाहादुर और निडर माने जाते थे।

पृत्यावदेन सा कर्णायः मालिन नगरमय,
श्रृगेशु नरशदर्ल सा राजा डडसोत सपत्नजित।
पालयामासा चमलं चकर्ण परवलार्दनः।।

वायु पुराण, हरिवंश पुराण और मत्स्य पुराण के अनुसार चंपा का दूसरा नाम चंपा नगरी भी था। (हरिवंश पुराण– 31, 49, मत्स्य पुराण– 48, 97)

चंपस्य तु पुरीचंपा,
या मालिन भवत पुरा।

संताल परगना डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अनुसार चंपा राज के उत्तर में गंगा नदी बहती थी और लखीसराय से राजमहल तक फैली थी। दक्षिण सीमा में घनी रेगिस्तानी जंगल थी। जिसमें हाथी तथा अन्य जंगली जानवर बिराजते थे। इस राज के पूर्व में किचिंगकिलो राज था। जिसे कंगजोल भी कहा जाता था, जिसकी राजधानी दक्षिण राजमहल से लगभग 18 मील दूरी पर थी। यद्यपि ह्वेनत्सियांग ने इस राज के आन्तरिक व्यवस्था के संबंध में अधिक कुछ नहीं लिखा है, पर संताल परगना डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अनुसार इस राज की स्थापना रुखेरवाल वंश ने की थी, जो वास्तव में स्थानीय जनजातियों का एक सामुहिक कबिला थी। "खेरवाल" कबिला में संताल, मुण्डा, कुड़मि, बिरहोड़, भूमिज आदि जनजातियाँ शामिल थी। चंपा राज की राजधानी ष्तेलगिरीष नामक जगह में स्थित थी, जो राजमहल पाहाड़ियों के ढलान में स्थित थी। इस राज की राजधानी की भग्नावशेष हाल हाल तक यहाँ विद्यमान थी। जो रेल परियोजना के निर्माण के दौरान नष्ट हो गयी। इस बात का उल्लेख संताल परगना डिस्ट्रिक्ट गजेटियर

में मिलती है। हालाँकि कुछ लोग इन भग्नावशेषों का संबंध बौद्ध या जैन धर्म से जोडते हैं, पर स्थानीय लोग इन भग्नावशेषों को चंपा राज की राजधानी के भग्नावशेष ही मानते हैं।

संताल परगना डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अनुसार खेरवाल वंश के लोग चंपा राज में अपने राजा के अधीन खुशी खुशी रहते थे।चंपा राज की स्थापना ईसा पुर्व 600–700 के बीच हुई मानी जाती है। प्राचीन बौद्ध साहित्य में भी इस राज का उल्लेख मिलता है। उत्तर भारत के राजा हर्षवर्धन के 12वीं शताब्दी में मुगल शासक के आगमन तक ये क्षेत्र घने जंगल से आच्छादित था, जिस कारण ये क्षेत्र विष्मरण में रहे। इस क्षेत्र मे दो और छोटे छोटे स्टेट थे जो ओबेर और सुल्तानाबाद कहलाते थे। हालांकि इन राज्यों की स्थापना काफी बाद में हुई थी। यही राज बाद में पाकुड राज और महेशपुर राज के नाम से जाने गये। संताल परगना डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अनुसार लगातार 12 साल तक चले विचार विमर्श के बाद खेरवाल कबिला टूट गया और संताल, मुण्डा, कुड़मि, बिरहोड़, भूमिज आदि कबिला अलग–अलग हो गये। जहाँ सभी उप–कबीले के अलग–थलग होने की बात है, उसके बाद खेरवाल वंश की टूट की यह घटना सन् 80 ईसवी के आस–पास की है। बाद में महानतम चंपा राज्य चार भाग में बंट गया, जो क्रमशः पंचकोट, कर्णगढ (मेदिनिपुर), छोटानागपुर और पलामु के रुप में अस्तित्व में आये। इनमें से पंचकोट और कर्णगढ़ कुड़मि के हिस्से आये, जबकि छोटानागपुर मुण्डा कबिला को और बाकि को पलामु मिला। इस छोटानागपुर को ही एक काल्पनिक परिकथा को आधार मानकर और एक काल्पनिक ग्रंथ ष्नागवंशावलीष को आगे रखकर नागवंशी कहा जा रहा है।

1757 ई० के पलासी की लड़ाई के बाद 1765 ई० में जंगल टेरी के साथ बंगाल के दीवानी हस्तानतरण के बाद अंग्रेजों ने बंगाल में बीरभूम जिले के माध्यम से इलाके को नियंत्रित करने के लिए प्रशासनिक नेटवर्क का विकास किया। कप्तान ब्राउन पहले ब्रिटिश अधिकारी थे, जिन्होंने राजमहल पाहाडियों को जीतने की योजना तैयार की। हालांकि स्थानीय लोगों की एक अलग पहचान है, परंतु राजनैतिक रूप से इस क्षेत्र को बीरभूम से ही नियंत्रित किया जाने लगा था। ऐसा माना जाता है कि मुगल भी इस क्षेत्र में घुसने में नाकाम रहे और यह क्षेत्र काफी समय तक बाहरी अतिक्रमण और नियंत्रण से एक तरह से मुक्त ही रहा। 1747 ई० में कप्तान ब्राउन के आने के बाद कई क्षेत्रों में लगातार संघर्ष चलता रहा। श्री सदरलेण्ड ने जनजातियों के बीच समझौता करवाने के लिए 1891 ई० में इस क्षेत्र को ष्दामीन इ कोहष नाम से नामांकित किया। इसी क्षेत्र को 1855 ई० में अधिनियम 37 के तहत संतालों को ध्यान में रखते हुए ष्संताल परगनाष नाम से नये जिले का सृजन किया गया। आज भले ही झारखंड क्षेत्र का पहला ऐतिहासिक राज्य चंपा का अस्तित्व नहीं है, पर शायद हम जनजातीय राज्य होने के कारण ऐतिहासिक चंपा राज के ऐतिहासिक महत्व को कम करके आंकते आ रहे हैं। इसी कारण इतिहास की पुस्तकों में इस राज्य का उल्लेख कम ही देखने को मिलता है।

कुड़मि (KUDMI) जनजाति को अनुसूचित जनजाति की सूची में सूचीबद्ध करना होगा। कुड़मालि (KUDMALI) भाषा को जनजातीय भाषा की मान्यता देते हुए संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध करना होगा। – *आदिबासि कुड़मि समाज।*

सास बहुक कड़ि

Sangeeta Kumari Mahto
Assistant Professor
Department - Education (Kudmali Method Paper)
Srinath College of Education, Adityapur, Jamshedpur.

सास आर बहुक मइधें हमेसा कड़ि हेइक, इटा कनअ नाउआ काथा नि लागेइ। सास आर बहुक नाता बेजाञ संबेदनसिल रहेइ। दुइअ परानिक माझें जेनेरेसन गेप कर तेहँ पुरखेनि आर आधुनिक जुगेक टकराउ हेइक। सास चाहेइ जे बहुञ मर अनुजाञ चलुक आर पुरखेनि नेग निति के मानुक। मेनतुक आइजकाइल आधुनिक जुगेक बहुञ निजेक गड़े डाँढ़ाइलाइ खजत। आधुनिक जुगेक रहन सहन के आपनाउहत। एहे जालाइ सास आर बहु कर मन नि मेसेइ। बहुञ साधिन रुपेँ रहेलाइ खजेइ। अहे जालाइ आधुनिक जुगेक चकमके चँधिआइ पुरखेनि नेग निति के मानेलाइ नि खजेइ।

एहे रकम सास बहुक कड़िञ घारे असानति आउएइ। मेनतुक एहे समसइआक समाधान टा एकटि समझदार बहु आर एकटि समझदार सासेँ हि बाहराइलाइ पारता आर घारेक सानति के बाँचाइ राखे पारता। आधुनिक जुगेक बहु बेटि आइज काइल चाकरि करअहत, एसने घारेक जिमेदारि आर बाहिरेक काम सँगे तालमेल बेसाइलाइ नि पारअहत। एहे सउब कारअनें घारें कड़िक सिरजन हेइक। सासेँ चाहेइ कि बहुञ अकर सेबा सुसुर करउक मान सनमान करउक। असने बहुञ चाहेइ कि अके आपन पुरुस सँगे सँगे सास ससुर देउरा ननद भजि सभे कर साहाइ मिलउक। मेनतुक सास के बेटिक जेसन बहु के दुलार आर साहाइ करेक दरकार, असने बहु केउ माञ बापेक जेसन सास के माइन देइक दरकार। माञ बाप, सास ससुर के छाड़ि केउ बड़अ लक नि बने पारत, बनलउ उ मिछा बड़ताहि कर दुनिआञ कनअ मान नि पाउआइ। अखर आसिस लेइकेइ घारेँ सुख सानति आउतेइक, घारेक उननअति हेतेइक। सभे के एहे काथा टाउ मने राखेक दरकार जे हामरा जेसन करब, हामराक धिआ पुता राउ हामराक सँगे असने करे पारेइ, तअ तखन हामराके केसन लागतेइक! असने बहुअ घारेक गहना हेउएइ, अकर उननअतिञ घारेक मान सनमान बाढ़ेइक। एकटि बहु जे आपन घार दुआइर माञ बाप भाइ बेहिन सँगि सहेलि सभे के छाड़ि के आइ रहेइ, ससुर घारेउ सभे के अकर समसइआ परेसानि के बुझिके उआके आपन रकम मानेक आर साहाइ करेक दरकार।

बहु आर सासेक नाता के मधुर बनाउएक तेहँ नारि सिकखा करअ बिसेस दरकार आहेइक। मेनतुक सिकखा माने सुदु पथिक सिकखा नहेइक। नारिक भितअरे जे मानअउताक गुन आहेइक, सिरजन कर सँगे सँगे घार सँसार के सामराइएक कउसल आहेइक, आपन नेग निति भाखि चारि के बाँचाइएक जिममा आपन काँधे उठाइएक बिड़ा आहेइक, अहे सउब गिला के आइज जागरित करे हेतअन। नारिञ पिरित, अहिंसा, तिआग, मातरितअ, सइतअ लेखेन अमरित के जनम देइक सकति हेकेइ। नारिक एहे गुन गिलाके बाढ़ाउएक तेहँ पुरुस समाज केउ बाढ़ि चढ़ि के साहाइ करे हेतअन।

आइज घारेँ पुरातन आर नउतनेक टकराउ हेउएहेइक। मेनतुक हामराकेउ बिचार करेलाइ आहेइक जे पुरातन गुन आर नउतन गुन के मेसाइ के चलेलाइ हेतेइक। सास आर बहु दुइअ लक के निजेक निजेक जिममेदारि बुझे हेतअन आर घारेँ सुख सानति राखिकुन घारेक उननअति लागिन एक दसर कर साहाइ करे हेतअन।

गाछ रपा हमदुमि
GACHH ROPA HOMDUMI

जहाइर।

एहे दुनिआञ गाछ–पालहा नि रहले हड़ सँगे आरअ जिब गिलाक जिबन गिलाउ बाँचे पारतेइक निहि। गाछ–पालहा नि रहले जिब गिलाके बाँचेक तेहैं अकसिजेन, बु, सुइध बासात पाउआतेइक निहि। तेञ एहे दुनिआञ गाछ–पालहाक बेजाञ महत आहेइक। आइज दुनिआञ हड़ निखा निजेक सारथअ आर लभ लालच कर खातिर गाछ काटिके बन के बन उजाड़ करि देहेइक। पाहाड़ कुड़ि कुड़ि के खखला करि देहेइक। नेदिञ डेम बाँधिके बु कर बेहिसाब दहन करेहेइक। एसन भाबे परकिति कर सँगे नाजाइज खेलवाड़ करेक तेहैं परकितिअ आपन भाबे हिसाब लेइ कर काम करेहेइक। कखनअ भुँइकँपअ, कखनअ बइनआ, कखनअ सुखा तअ कखनअ महामारि कर रुपैं हिसाब लेहेइक।

हामरा आदिबासि कुड़मि समाज कर हड़ निखा परकिति कर आराधक उपासक लागिअ। हामराके दुनिआके परकिति कर महत सरन कराइ हेतेइक। नि हेले दुनिआ सेसेक धाइरे पहँचि जातेइक। आइज हड़ निखा कर महतआकाँछा कर खातिर जिबन रकखक अजन परत छैंदा हेइ जाहेइक। गलअबल बारमिंग कर खातरा बाड़हिए चले लागअल आहेइक। बरफ पिघलिके समुंदर पसरि बुलेहेइक। गाछ–पालहा कम हेइक तेहैं परजाबरन असँतुलित हेउएहेइक। माटि ले लेइके बु, बासात सभे रकम कर परदुसन सँगे नाना रकअमेक बेमार आर समइसा कर उचरन हेउएहेइक।

तेञ हामराके साँगि ले साँगि गाछ रपेक दरकार आहेइक। एहे काथा गिला सरन करिके 05 जून 2021 बिससअ परजाबरन दिउअस कर दिने आदिबासि कुड़मि समाजेक हड़ समाजकामिआ निखाञ केनदिरिअ तालेबर माइनगर परसेनजित माहातअ 'काछिमा' कर आगबाढ़ाने एकटा मिरा निरनइ लेइ रहलेथिक। परकिति आराधक अनुजाञ पइत बछर बिहिन मासे (आसाड़ मासे) जाहिरा/सारना/गड़ाम/बड़ाम थाने साल, महुल, बड़, निम आर आखड़ा थाने करम, पिआल, कुसुम, आम, तँतेइर, आँउला आदि कर गाछ रपा जातेइक। अहे बछर ले पइत बछर आदिबासि कुड़मि समाज बाटे ले बिभिन नेतरितअ माहाने बिभिन जाइगाञ हाजार हाजार गाछ रपा गेल आहेइक।

जाइगा :– जाहिरा/सारना/गड़ाम/बड़ाम/आखड़ा/मड़प थान।

1) 2021 :– बिहिनमासेक (आसाड़ेक) 05 दिन ले 31 दिन तड़िक (20 जून 2021 ले 16 जुलाई 2021 तड़िक)।

2) 2022 :– बिहिनमासेक (आसाड़ेक) 04 दिन ले 32 दिन तड़िक (19 जून 2022 ले 17 जुलाई 2022 तड़िक)।

3) 2023 :– बिहिनमासेक (आसाड़ेक) 09 दिन ले 30 दिन तड़िक (25 जून 2023 ले 16 जुलाई 2023 तड़िक)।

तेञ सभेकाइ के नेहर जे आपन आपन गाँउए आपन आपन थाने गाछ रपेक मिरा काम टा साइत करबेहे। इटा काकरअ एक लक कर निहि, हामरा सभेकाइ कर आपन भार लागेइ। तअ आउआ हामरा सभे मिलिके गटे दुनिआके परकिति कर महत सरन कराइ कर काम करब आर **"गाछ रपा हमदुमि"** के बछरि जरदार भाबे सफल करे कर काम करब। जहाइर।

भारत की जनगणना के भाषा सूची में कुड़मालि (KUDMALI) भाषा कोड लागू कराने को लेकर आदिबासि कुड़मि समाज का संघर्ष:

हम सभी जानते हैं कि कुड़मि जनजाति को 1950 ई० में बनी अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल करने से छोड़ दिया गया। मगर साथ ही हमें यह भी जानना होगा कि 1961 ई० की जनगणना के बाद से भारत की जनगणना सूची से कुड़मालि भाषा का कोड भी हटा दिया गया है। इससे भारत सरकार के रिकॉर्ड में कुड़मालि भाषा की संख्या – "शून्य" है। यह लगभग दो करोड़ से भी अधिक कुड़मि समुदाय और उनकी मातृभाषा कुड़मालि के साथ घोर अन्याय है। इस बात की अहमियत को बेहद गंभीरता से लेते हुए "आदिबासि कुड़मि समाज" ने केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व में कठिन संघर्ष करते हुए प्रदेश की राजधानी से लेकर देश की राजधानी तक और विधानसभा से लेकर लोकसभा तक कुड़मालि भाषा कोड लागू कराने के लिए अनवरत प्रयास किये। इसके लिये किये गये विभिन्न कार्य निम्नलिखित हैं –

1.) 06.08.2020 :– आदिबासि कुड़मि समाज, झाड़खंड द्वारा कुड़मियों की मातृभाषा कुड़मालि (KUDMALI) के लिए भारत की जनगणना के भाषा सूची में भाषा कोड लागू करने हेतु माननीय महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त महोदय, भारत सरकार, नई दिल्ली के नाम एक ज्ञापन 06 अगस्त 2020 को जनगणना संचालन निदेशालय, झारखंड, राँची के माननीय निदेशक महोदय को सौंपा गया।

i) 19.08.2020 :– इसे उचित मानते हुए व सहमति प्रदान करते हुए दिनांक 19 अगस्त 2020 को माननीय निदेशक महोदय, जनगणना संचालन निदेशालय, झारखंड, राँची के द्वारा फाइल नं. J11011/41/2020 के साथ ज्ञापन को माननीय महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त महोदय, भारत सरकार, नई दिल्ली को अग्रेषित किया गया।

2.) 13.08.2020 :– दिनांक 13 अगस्त 2020 को संगठन द्वारा मुख्यमंत्री सचिवालय और राज्यपाल कार्यालय में भी उक्त ज्ञापन जमा किया गया। हालांकि दोनों ही स्थानों से समय प्राप्त नहीं हुआ।

ii) 21.09.2020 :– इस बीच दिनांक 21 सितंबर 2020 को मुख्यमंत्री सचिवालय, झारखण्ड सरकार के अवर सचिव श्री राम मूर्ति सिंह द्वारा कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची के प्रधान सचिव को संबंधित पत्र अग्रेषित किया गया।

3) 07.11.2020 :– लगभग तीन महीने के अथक प्रयास के बाद कठिन परिस्थिति में विशिष्ट समाजसेवी श्री आस्तिक महतो डुमरिआ के सहयोग से 07 नवंबर 2020 को मुख्यमंत्री आवास में माननीय मुख्यमंत्री महोदय से मुलाकात का अवसर प्राप्त हुआ। मौके पर ज्ञापन सौंपकर उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया गया। उन्होंने उचित कदम उठाने का आश्वासन भी दिया। मौके पर साथ में मौजूद टुंडी के माननीय विधायक श्री मथुरा प्रसाद महतो को भी ज्ञापन सौंपा गया।

4) 08–10.11.2020 :– इसके बाद 08 से 10 नवंबर 2020 के बीच विभिन्न दलों के 14 माननीय विधायक महोदयों (सर्वश्री मंगल कालिंदि, दशरथ गागराइ, सुकराम उराँव, समीर मोहंती, सबिता महतो, चम्पाइ सोरेन, रामदास सोरेन, संजीव सरदार, जोबा माँझी, दीपक बिरुआ, निरल पूर्ति, ममता देवी, लम्बोदर महतो और जे. पी. पटेल) को भी उक्त ज्ञापन सौंपा गया।

iii) 11.11.2020 :– जिसके बाबत 11 नवंबर 2020 को विधानसभा के विशेष सत्र में माननीय विधायकगण श्री मथुरा प्रसाद महतो, श्रीमती ममता देवी व श्री लंबोदर महतो ने उक्त माँग को सदन में उठाने का काम किया।

iv) 12.11.2020 :– दिनांक 12 नवंबर 2020 को कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड सरकार के अवर सचिव श्री प्रेम कुमार राय द्वारा गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग, झारखण्ड, राँची के प्रधान सचिव को संबंधित पत्र अग्रेषित किया गया।

v) 05.01.2021 :– दिनांक 05 जनवरी 2021 को गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग, झारखण्ड सरकार के संयुक्त सचिव श्री अनिल कुमार सिंह द्वारा कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची के उप सचिव को पत्र लिखकर अग्रेषित किया गया।

vi) 22.01.2021 :– दिनांक 22 जनवरी 2021 को कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड सरकार के उपनिदेशक, राजभाषा श्री मिथिलेश नारायण द्वारा निदेशक महोदय को पत्र अग्रेषित किया गया।

5) 24.12.2020 :– इधर दिनांक 24 दिसंबर 2020 को संगठन द्वारा जमशेदपुर के माननीय सांसद श्री विद्युत बरन महतो को भी बिष्टुपुर स्थित उनके कार्यालय में मुलाकात कर उक्त ज्ञापन सौंपा गया।

vii) 11.02.2021 :– आश्वासन के मुताबिक उन्होंने 11 फरवरी 2021 को लोकसभा में उक्त माँग को उठाया।

6) 26.02.2021 :– दिनांक 26 फरवरी 2021 की सुबह को माननीय विधायक श्री मथुरा प्रसाद महतो से राँची स्थित उनके आवास में जाकर मुलाकात किये।

viii) 26.02.2021 :– दिनांक 26 फरवरी 2021 को ही संगठन के आग्रह पर पुनः माननीय विधायक श्री मथुरा प्रसाद महतो के अगुवाई में माननीय विधायकगण श्रीमती ममता देवी, श्रीमती सबिता महतो, श्री मंगल कालिंदी, श्री समीर कु. मोहंती, श्री लंबोदर महतो और श्री जयप्रकाश भाइ पटेल का संयुक्त हस्ताक्षरयुक्त अनुशंसा पत्र सम्मिलित रुप से उन्होंने माननीय मुख्यमंत्री महोदय को सौंपा।

7) 07.03.2021 :– 07 मार्च 2021 को संगठन द्वारा पुनः माननीय सांसद श्री बिद्युत बरन महतो जी से बिष्टुपुर स्थित उनके कार्यालय में मिलकर महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त, भारत सरकार (नई दिल्ली) से मिलकर बात रखने की अपील की गई।

ix) 24.03.2021 :– दिनांक 24 मार्च 2021 को जनगणना कार्य निदेशालय, झारखण्ड द्वारा भारत के महारजिस्ट्रार का कार्यालय, नई दिल्ली, सामाजिक अध्ययन प्रभाग के उपमहारजिस्ट्रार डॉ. प्रतिभा कुमारी को पत्र अग्रेषित किया गया।

8) 28.12.2020 – 08.01.2021 :– इन सबके अलावे ऐतिहासिक रुप से दिनांक 28 दिसंबर 2020 को राज्य के 50 प्रखंडों के प्रखंड विकास पदाधिकारी और दिनांक 08 जनवरी 2021 को राज्य के 10 जिला के जिला उपायुक्त महोदय के माध्यम से 13 सूत्री माँग पत्र के साथ ज्ञापन में भी कुड़मालि भाषा कोड की माँग को प्रमुखता से रखा गया।

x) इतने सब के बावजूद ना ही राज्य सरकार द्वारा और ना ही केंद्र सरकार द्वारा इसपर कोई सकारात्मक कदम उठाया गया!

9) 22.03.2021 :– दिनांक 22 मार्च 2021 को राँची में प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से इस मामले पर भी वस्तुस्थिति को स्पष्ट किया गया।

10) 14.07.2021 :– दिनांक 14 जुलाई 2021 को ई–मेल के माध्यम से जनगणना कार्य निदेशालय, झारखण्ड के द्वारा भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त को स्मरण–पत्र (Reminder) भेजा गया।

11) 15.07.2021 :– दिनांक 15 जुलाई 2021 को जमशेदपुर के माननीय सांसद श्री बिद्युत बरन महतो से पुनरू बिष्टुपुर स्थित उनके कार्यालय में मुलाकात कर वस्तुस्थिति से अवगत कराया गया। उन्होंने पुनः अन्य कुड़मि सांसदों संग मिलकर कोशिश करने का आश्वासन दिया।

12) 16.07.2021 :– दिनांक 16 जुलाई 2021 को केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व में जनगणना कार्य निदेशालय, झारखण्ड के उप–निदेशक महोदय से मुलाकात कर (निदेशक के अनुपस्थिति में) निदेशक महोदय के द्वारा भारत सरकार के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त महोदय को ध्यानाकर्षण ज्ञापन प्रेषित किया गया।

13) 18.07.2021 :– दिनांक 18 जुलाई 2021 को रामगढ़ के माननीय विधायक श्रीमती ममता देवी से गोला स्थित उनके कार्यालय में मिलकर झारखण्ड सरकार को ध्यानाकर्षण करने हेतु ज्ञापन सौंपा गया। उन्होंने माननीय मुख्यमंत्री महोदय से समय लेकर यथोचित उपाय करने का आश्वासन दिया।

14) 24.07.2021 :– दिनांक 24 जुलाई 2021 को राजभवन, राँची में महामहिम राज्यपाल महोदय के नाम और मुख्यमंत्री सचिवालय, राँची में माननीय मुख्यमंत्री महोदय के नाम ध्यानाकर्षण ज्ञापन सौंपा गया।

15) 21.08.2021 :– दिनांक 21 अगस्त 2021 को बगोदर के माननीय विधायक श्री विनोद कुमार सिंह से उनके आवासीय कार्यालय में मुलाकात कर झारखण्ड सरकार से कुड़मालि भाषा कोड लागू कराने हेतु ज्ञापन सौंपा। उन्होंने मुख्यमंत्री महोदय से मिलकर एवं मॉनसून सत्र में माँग रखने का आश्वासन दिया।

16) 26.08.2021 :– दिनांक 26 अगस्त 2021 को हजारीबाग के माननीय सांसद श्री जयंत सिन्हा से उनके आवासीय कार्यालय में मुलाकात कर कुड़मालि भाषा कोड लागू कराने हेतु ज्ञापन सौंपा। उन्होंने पीएमओ तक बात पहुँचाकर यथोचित संसोधन कराने का आश्वासन दिया।

17) 29.08.2021 :– दिनांक 29 अगस्त 2021 को राँची के माननीय सांसद श्री संजय सेठ से उनके आवासीय कार्यालय में मुलाकात कर कुड़मालि भाषा कोड लागू कराने हेतु ज्ञापन सौंपा। उन्होंने संबंधित मंत्रालय तक बात पहुँचाकर यथोचित संसोधन कराने का आश्वासन दिया।

18) 31.08.2021 :– दिनांक 31 अगस्त 2021 को जमशेदपुर पूर्वी के माननीय विधायक श्री सरयू राय से उनके पार्टी कार्यालय में मुलाकात कर कुड़मालि भाषा कोड लागू कराने हेतु ज्ञापन सौंपा। उन्होंने भारत सरकार एवं झारखण्ड सरकार को पत्र लिखकर यथोचित संसोधन कराने का आश्वासन दिया।

19) 31.08.2021 :– दिनांक 31 अगस्त 2021 को गिरीडीह के माननीय सांसद श्री चंद्रप्रकाश चौधरी से उनके आवासीय कार्यालय में मुलाकात कर कुड़मालि भाषा कोड लागू कराने हेतु ज्ञापन सौंपा गया। उन्होंने यथोचित संसोधन कराने का आश्वासन दिया।

xi) 07.09.2021 :– दिनांक 07 सितंबर 2021 को जमशेदपुर के माननीय सांसद श्री बिद्युत बरन महतो के अगुवाई व आदिबासि कुड़मि समाज के माननीय केंद्रीय अध्यक्ष श्री प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व

में एक प्रतिनिधिमंडल भारत सरकार के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त महोदय से नई दिल्ली स्थित कार्यालय में जाकर मुलाकात किये। उन्हें संबंधित माँग पत्र के साथ सभी संबंधित दस्तावेजों एवं विभिन्न विभागीय अग्रेषित पत्रों के प्रतियां अनुलग्न कर ज्ञापन सौंपा गया। साथ ही गहन चर्चा के माध्यम से वस्तुस्थिति से अवगत कराया गया। उन्होंने नियमों और प्रक्रिया का हवाला देते हुए असमर्थता जताई। मगर कुछ उपाय भी बताये और सौंपे गये ज्ञापन के साथ सभी दस्तावेजों का थोरोली अध्ययन कर ही प्रतिक्रिया देने की बात कही।

xii-) 09.09.2021 :– दिनांक 09 सितंबर 2021 को बगोदर के माननीय विधायक श्री विनोद कुमार सिंह ने मॉनसून सत्र के दौरान विधानसभा में कुड़मालि भाषा का स्वतंत्र कोड लागू कराने हेतु राज्य सरकार से अनुशंसा करने की माँग की।

xiii) इन सबसे इतर पूरे मामले के दौरान शुरू से लेकर वर्तमान तक राज्य से लेकर केन्द्र तक विभिन्न माध्यमों से अनुसरण भी लगातार जारी रहा।

20) 01.12.2021 :– दिनांक 01 दिसंबर 2021 को गिरीडीह लोकसभा के माननीय सांसद श्री चंद्रप्रकाश चौधरी, जमशेदपुर लोकसभा के माननीय सांसद श्री बिद्युत वरण महतो, पुरुलिया लोकसभा के माननीय सांसद श्री ज्योतिर्मय महतो और ओड़िशा के राज्यसभा सांसद श्रीमती ममता मोहन्ता के अगुवाई में "आदिबासि कुड़मि समाज" का एक प्रतिनिधिमंडल केन्द्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व में भारत सरकार के माननीय केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय महोदय से राष्ट्रपति भवन नॉर्थ ब्लॉक स्थित उनके कार्यालय में जाकर मुलाकात किये.

मुलाकात के बाबत माननीय सांसद महोदयों द्वारा माननीय मंत्री महोदय को "आदिबासि कुड़मि समाज" के ज्ञापन के साथ संयुक्त हस्ताक्षरयुक्त आवेदन सौंपा गया. गहन चर्चा और विमर्श के उपरांत माननीय मंत्री महोदय ने सकारात्मक कार्रवाई का भरोसा दिया.

हम अब भी रुके नहीं हैं...
संघर्ष जारी है... और लक्ष्य प्राप्ति तक जारी रहेगा...
– आदिबासि कुड़मि समाज।

आदिबासि कुड़मि समाज : पिछले कार्यक्रमों की विवरणी

आदिबासि कुड़मि समाज बातों और दिखावे से ज्यादा काम के महत्व को अहमियत देते हुए पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न नेतृत्व में निस्वार्थ भाव से जमीनी स्तर से लेकर विभागीय स्तर तक समाजहित के अनेकों कार्यों को अंजाम दिया है। इन कार्यों को पूरा करने में आपका भी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से कहीं ना कहीं कुछ ना कुछ योगदान जरूर रहा है। समाज के प्रति आपके उस योगदान का हम धन्यवाद और आभार प्रकट करते हैं। इन्हीं कार्यों में से कई मुख्य कार्यों को हम आपके साथ साझा कर रहे हैं, जो निम्नलिखित हैं –

1) 23 मार्च 2021 :– करमटोली चौक, रांची स्थित प्रेस क्लब में अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अध्यक्षता में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इसमें छोटानागपुर पठार के टोटेमिक कुड़मि समुदाय को बिहार एवं अन्य संयुक्त प्रांतों के टिट्युलर कुरमी समुदाय से भिन्न होने के तथ्यात्मक प्रमाण के साथ विभिन्न मांगों से संबंधित तीन पन्नों का विवरणी मीडिया बंधुओं को सौंपा गया।

2) 20 जून 2021 से 16 जुलाई 2021 तक (05–31 आसाड़) :– गाछ रोपा होमदुमि – 1 का आयोजन किया गया।

3) 06 जुलाई 2021 :– हजारीबाग जिला कमेटी द्वारा विनोबा भावे विश्वविद्यालय के अंतर्गत आनेवाले महाविद्यालयों में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई शुरू करने के लिए कुलपति महोदय को ज्ञापन सौंपा गया।

4) 18 जुलाई 2021 :– रामगढ़ जिला कमेटी द्वारा विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के अंतर्गत सभी महाविद्यालयों में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई शुरू कराने को लेकर रामगढ़ विधायक श्रीमती ममता देवी को ज्ञापन सौंपा गया।

5) 28 जुलाई 2021 :– आकुस सरायकेला–खरसावां जिला के प्रतिनिधिमंडल द्वारा सिंहभूम महाविद्यालय, चांडिल में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई शुरू करने को लेकर प्राचार्य महोदय को ज्ञापन सौंपा गया।

6) 31 जुलाई 2021 :– आकुस सरायकेला–खरसावां जिला के प्रतिनिधिमंडल द्वारा सिंहभूम महाविद्यालय, चांडिल में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई शुरू कराने को लेकर ईचागढ़ विधायक श्रीमती सविता महतो को ज्ञापन सौंपा गया।

7) 08 अगस्त 2021 :– वीर शहीद निर्मल महतो शहादत दिवस जिला व प्रखंड स्तर पर पालन किया गया।

8) 09 अगस्त 2021 :– विश्व आदिबासि दिवस का जिला स्तर पर आयोजन किया गया।

9) 16 अगस्त 2021 :– आकुस हजारीबाग जिला के प्रतिनिधि मंडल द्वारा हजारीबाग जिला के माननीय उपायुक्त महोदय को हजारीबाग जिला में कुड़मालि भाषा को अनुसूची–1 में शामिल करने के लिए ज्ञापन सौंपा गया।

10) 21 अगस्त 2021 :– आकुस पूर्वी सिंहभूम जिला के प्रतिनिधिमंडल द्वारा घाटशिला महाविद्यालय में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई शुरू करने को लेकर प्राचार्य महोदय को ज्ञापन सौंपा गया।

11) 07 सितंबर 2021 :– केन्द्रीय कमेटी की ओर से केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व में व जमशेदपुर लोकसभा के माननीय सांसद श्री विद्युत वरण महतो के अगुवाई में भारत की जनगणना

के भाषा सूची में कुड़मालि भाषा कोड लागू करने को लेकर भारत के महारजिस्ट्रार व जनगणना आयुक्त महोदय को दिल्ली आरजीआई कार्यालय में भेंट कर ज्ञापन सौंपा गया।

12) 26 सितंबर 2021 :– आकुस के संस्थापक उपाध्यक्ष सारिगत लकखिकांत मुतरुआर के पुण्यतिथि के अवसर पर कोठार, रामगढ़ में आदिबासि कुड़मि समाज का केंद्रीय कार्यालय खोला गया। मुख्य अतिथि गिरीडीह लोकसभा के माननीय सांसद श्री चंद्रप्रकाश चौधरी के हाथों उद्घाटन हुआ। अति विशिष्ट अतिथि के रूप में मांडु विधानसभा के माननीय विधायक श्री जयप्रकाश भाई पटेल उपस्थित रहे।

13) 28 सितंबर 2021 :– कोल्हान विश्वविद्यालय के टीआरएल विभाग में झारखंड राज्य के पहले जनजातीय व क्षेत्रीय संग्रहालय का माननीय कुलाधिपति सह राज्यपाल श्री रमेश बैस के द्वारा ऑनलाइन उद्घाटन के अवसर पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो सहयोगियों संग आमंत्रित अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। इस मौके पर उन्होंने कुलपति प्रो. गंगाधर पंडा को गुलदस्ता देकर सम्मानित किया एवं कोल्हान विश्वविद्यालय के अंतर्गत महाविद्यालयों में कुड़मालि, हो, संताली आदि जनजातीय भाषाओं के पद सृजन कराने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। साथ ही टीआरएल के विभागाध्यक्ष प्रो. बीरबल हेंब्रम को भी कुड़मालि संस्कृति का प्रतीक पीला गमछा ओढ़ाकर सम्मानित किया एवं सभी महाविद्यालयों में कुड़मालि भाषा के पठन–पाठन हेतु यथोचित व्यवस्था का निवेदन किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में कुड़मालि टॉपर बबिता महतो को कोल्हान विश्वविद्यालय की ओर से निर्गत प्रशस्ति पत्र भी उन्हें अपने हाथों ससम्मान प्रदान करने का मौका दिया गया।

14) 09 एवं 10 अक्टूबर 2021 :– 22 जून 2021 को संस्था निबंधन के उपरांत शहीद निर्मल महतो भवन, सोनारी, जमशेदपुर में पहला दो दिवसीय वार्षिक केंद्रीय अधिवेशन केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अध्यक्षता और केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो के संचालन में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री छुटनि महतो और विशिष्ट समाजसेवी डॉ. बिद्याभूषण महतो शामिल हुए। आयोजक का कार्य आकुस पूर्वी सिंहभूम जिला ने निभाया।

15) 24 अक्टुबर 2021 :– मालोनचा, बालुरघाट, दक्षिण दिनाजपुर, पश्चिम बंगाल में कुड़मि समाज उन्नयन समिति द्वारा आयोजित कुड़मि कुड़मालि जड़ुआहि में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो मुख्य अतिथि के रुप में और सरायकेला–खरसावां जिलाध्यक्ष मनोज महतो विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित हुए एवं समाज के इतिहास, भाषा, संस्कृति, परंपरा के साथ हक अधिकार से संबंधित विचार रखे।

16) 12 नवंबर 2021 :– रामगढ़ जिला कमेटी द्वारा बारलौंग, रामगढ़ में एक दिवसीय कुड़मालि नेगाचारि प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन किया गया।

17) 01 दिसंबर 2021 :– ऐतिहासिक रूप से आदिबासि कुड़मि समाज का एक प्रतिनिधिमंडल केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो और केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो के नेतृत्व में गिरीडीह लोकसभा के माननीय सांसद श्री चंद्रप्रकाश चौधरी, जमशेदपुर लोकसभा के माननीय सांसद श्री बिद्युत वरण महतो, पुरुलिया लोकसभा के माननीय सांसद श्री ज्योतिर्मय महतो और ओड़िशा के राज्यसभा सांसद श्रीमती ममता मोहन्ता के अगुवाई में भारत की जनगणना के भाषा सूची में कुड़मालि भाषा कोड शामिल करने की मांग को लेकर केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय महोदय से उनके राष्ट्रपति भवन स्थित गृह मंत्रालय के कार्यालय में मुलाकात कर ज्ञापन सौंपे।

18) 26 दिसंबर 2021 :– सरायकेला–खरसावां जिला अंतर्गत चांडिल के डाक बंगला परिसर में केंद्रीय स्तरीय एकदिवसीय बिराट जड़ुआहि का आयोजन केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अध्यक्षता और

केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो के संचालन में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में विशिष्ट समाजसेवी श्री हीरालाल सांखुआर जी उपस्थित हुए। आयोजक का कार्य आकुस सरायकेला–खरसावां जिला ने निभाया।

19) 05 जनवरी 2022 :– रामगढ़ स्थित राष्ट्रीयकृत बैंक केनरा बैंक, चेटर (कोठार) शाखा में आदिबासि कुड़मि समाज केंद्रीय कमेटी का नया बचत खाता अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष के नाम से खुलवाने का प्रक्रिया पूरा किया गया।

20) 25 जनवरी 2022 :– आदिबासि कुड़मि समाज की ओर से केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व में कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा के माननीय कुलसचिव महोदय को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष महोदय के माध्यम से कुड़मालि भाषा के लिए त्रुटिपूर्ण ज्ञनतउंसप शब्द में संसोध ान कर ज्ञनकउंसप करने के लिए ज्ञापन सौंपा गया।

21) 06 फरवरी 2022 :– कांकेबार, रामगढ़ स्थित पटेल छात्रावास सह कुड़मि कुंबा में केंद्रीय स्तरीय एकदिवसीय बिराट जड़ुआहि का आयोजन केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अध्यक्षता और केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो के संचालन में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में गिरीडीह लोकसभा के माननीय सांसद सह पूर्व मंत्री (झारखंड) श्री चंद्रप्रकाश चौधरी जी शामिल हुए। आयोजक का कार्य आकुस रामगढ़ जिला ने निभाया।

22) 07 फरवरी 2022 :– आदिबासि कुड़मि समाज के एक प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अगुवाई में विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के माननीय कुलपति महोदय से जाकर मुलाकात किये एवं संगठन की ओर से कुड़मालि भाषा के लिए त्रुटिपूर्ण कुरमाली शब्द में संसोधन कर कुड़मालि करने एवं विश्वविद्यालय व इसके अंगीभूत महाविद्यालयों में स्नातक और स्नातकोत्तर संकाय में कुड़मालि (**Kudmali**) भाषा की पढ़ाई शुरू करने को लेकर ज्ञापन सौंपे।

23) 18 फरवरी 2022 :– 07 फरवरी 2022 को केंद्रीय समिति द्वारा सौंपे गये ज्ञापन के आलोक में विनोबा भावे विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति महोदय ने माननीय कुलसचिव महोदय के माध्यम से नोटिफिकेशन जारी कर विश्वविद्यालय एवं इसके अंगीभूत महाविद्यालयों में कुरमाली शब्द के स्थान पर कुड़मालि शब्द लिखने पढ़ने की स्वीकृति प्रदान की।

24) 21 फरवरी 2022 :– जिला स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

25) 24 फरवरी 2022 :– आदिबासि कुड़मि समाज के एक प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व में बिनोद बिहारि महतो विश्वविद्यालय, धनबाद के माननीय कुलपति महोदय डॉ. मुकुल नारायण देव एवं माननीय कुलसचिव महोदय डॉ. विकास कुमार जी से विश्वविद्यालय में जाकर मुलाकात किये एवं उन्हें संगठन की ओर से कुड़मालि भाषा के लिए त्रुटिपूर्ण कुरमाली शब्द में संसोधन कर कुड़मालि करने एवं विश्वविद्यालय व इसके अंगीभूत महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर संकाय में कुड़मालि (**Kudmali**) भाषा की पढ़ाई शुरू करने को लेकर ज्ञापन सौंपे। मौके पर संगठन की ओर से माननीय कुलपति महोदय को गुलदस्ता देकर धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया गया।

26) 25 फरवरी 2022 :– आदिबासि कुड़मि समाज, केंद्रीय समिति की ओर से केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो और केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो के माध्यम से झाड़खंड के चतरा, गोड्डा, दुमका, साहिबगंज, जामताड़ा, देवघर एवं पाकुड़ जिला में भी "कुड़मालि" भाषा को जिला स्तरीय नियुक्तियों में

क्षेत्रीय/जनजातीय भाषा सूची में शामिल करने के लिए महामहिम राज्यपाल महोदय एवं माननीय मुख्यमंत्री महोदय को ज्ञापन सौंपा गया।

(पूर्व में आदिबासि कुड़मि समाज, गोड्डा जिला द्वारा 09.09.2021 को और चतरा जिला द्वारा 21.09.2021 को संबंधित जिला उपायुक्त महोदय को इस संदर्भ में ज्ञापन सौंपा गया था।)

27) 26 फरवरी 2022 :– आदिबासि कुड़मि समाज हजारीबाग के प्रतिनिधि मंडल ने विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के माननीय कुलपति महोदय, माननीय कुलसचिव महोदय और माननीय परीक्षा नियंत्रक महोदय को कुड़मालि शब्द को स्वीकृति प्रदान करने के लिए गुलदस्ता देकर एवं पीला गमछा ओढ़ाकर आभार प्रकट किया गया।

28) 27 फरवरी 2022 :– पंडित रविशंकर शुक्ला लेन, दिल्ली में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अध्यक्षता और केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो के संचालन में संपन्न बैठक में सर्वसम्मति से आकुस दिल्ली प्रदेश समिति का गठन किया गया।

29) 21 मार्च 2022 :– जिला स्तर पर क्रांतिवीर शहीद रघुनाथ महतो की जयंती दिवस पालन किया गया।

30) 24 मार्च 2022 :– आदिबासि कुड़मि समाज के एक प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व में डीएसपीएम विश्वविद्यालय, राँची के माननीय कुलसचिव महोदया डॉ. नमिता सिंह जी से विश्वविद्यालय में जाकर मुलाकात किये एवं उन्हें संगठन की ओर से कुड़मालि भाषा के लिए त्रुटिपूर्ण कुरमाली (Kurmali) शब्द में संसोधन कर कुड़मालि (Kudmali) करने के लिए ज्ञापन सौंपे।

31) 25 मार्च 2022 :– आदिबासि कुड़मि समाज के एक प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व में राँची विश्वविद्यालय, राँची के माननीय कुलसचिव महोदय डॉ. मुकुंद चंद्र मेहता जी, रांची विश्वविद्यालय रांची के कुड़मालि भाषा के विभागाध्यक्ष महोदया डॉ. गीता सिंह, मारवाड़ी महाविद्यालय रांची के कुड़मालि भाषा के विभागाध्यक्ष महोदय डॉ. वृंदावन महतो एवं डीएसपीएमयू के कुड़मालि भाषा के विभागाध्यक्ष महोदय से संबंधित विभाग में जाकर मुलाकात किये एवं उन्हें संगठन की ओर से कुड़मालि भाषा के लिए त्रुटिपूर्ण कुरमाली (Kurmali) शब्द में संसोधन कर कुड़मालि (Kudmali) करने के लिए ज्ञापन सौंपे।

32) 03 अप्रैल 2022 :– कोल्हान विश्विद्यालय चाईबासा में आयोजित सरहुल पूर्व संध्या समारोह में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो वक्ता के तौर पर उपस्थित हुए एवं अपने वक्तव्य रखे।

33) 05 अप्रैल 2022 :– क्रांतिवीर शहीद रघुनाथ महतो की शहादत दिवस जिला व प्रखंड स्तर पर पालन किया गया। मुख्य रूप से सरायकेला–खरसावां जिला अंतर्गत कुकड़ु प्रखंड समिति द्वारा शहीद रघुनाथ महतो चौक, छातारडीह में मुख्य अतिथि केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के माध्यम से शहीद की प्रतिमा का अनावरण किया गया।

34) 13 अप्रैल 2022 :– 24 फरवरी 2022 को केंद्रीय समिति द्वारा सौंपे गये ज्ञापन के आलोक में बीबीएमके विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति महोदय ने माननीय कुलसचिव महोदय के माध्यम से नोटिफिकेशन जारी कर विश्वविद्यालय एवं इसके अंगीभूत महाविद्यालयों में कुरमाली शब्द के स्थान पर कुड़मालि शब्द लिखने पढ़ने की स्वीकृति प्रदान की।

35) 02 मई 2022 :– झारखंड एबॉरिजिनल कुड़मि पंच के अध्यक्ष सह आदिबासि कुड़मि समाज केंद्रीय समिति के मुख्य सलाहकार डॉ. बिद्याभूषण महतो द्वारा रांची हाईकोर्ट में कुड़मि जनजाति को अनुसूचित जनजाति में शामिल करने को लेकर दायर किये गये रिट याचिका की पहली सुनवाई हुई।

36) 15 मई 2022 :– गोलमुरी स्थित केबुल वेलफेयर क्लब हॉल में झारखण्ड एबॉरिजिनल कुड़मि पंच द्वारा आयोजित प्रेस वार्ता में रिट याचिका से संबंधित जानकारी दिया गया। इसमें मुख्य रूप से पंच के अध्यक्ष सह आकुस के मुख्य सलाहकार डॉ. बिद्याभूषण महतो, आकुस के केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो, वकील अखिलेश श्रीवास्तव और समाजसेवी अरविंद अंजुम मौजूद रहे। प्रसेनजीत महतो द्वारा आदिबासि कुड़मि समाज केंद्रीय समिति की ओर से मीडिया बंधुओं को कुड़मि कुड़मालि से संबंधित 6 पन्नों का तथ्यात्मक ब्यौरा सौंपा गया।

37) 22 मई 2022 :– आदिबासि कुड़मि समाज के प्रतिनिधियों द्वारा केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो श्काछिमाश के नेतृत्व में माननीय वकील महोदय श्री अखिलेश श्रीवास्तव जी से एक औपचारिक मुलाकात किया गया एवं उनसे कुड़मि जनजाति से संबंधित कई विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा किया गया। मौके पर उन्हें संगठन की ओर से पीला गमछा ओढ़ाकर अभिवादन किया गया।

38) 25 मई 2022 :– केंद्रीय समिति द्वारा अधिसूचना जारी कर सितंबर 2022 में द्वितीय वार्षिक केंद्रीय अधिवेशन आयोजित करने की सूचना दी गई।

39) 10 जून 2022 :– कुड़मि एसटी इन्क्लूजन के मुद्दे पर रांची हाईकोर्ट में दायर रिट याचिका पर दूसरी सुनवाई हुई।

40) 19 जून 2022 से 17 जुलाई 2022 (बिहिनमास, आसाड़ के 04 से 32 तारिख) :– "गाछ रपा हमदुमि" (Gachh Ropa Homdumi) भाग–2 कार्यक्रम आयोजित हुआ।

41) 08 जुलाई 2022 :– कुड़मि एसटी इन्क्लूजन के मुद्दे पर रांची हाईकोर्ट में दायर रिट याचिका पर तीसरी सुनवाई हुई।

42) 24 जुलाई 2022 :– झाड़खंड राज्य के पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत चक्रधरपुर प्रखंड के आसनतलिया स्थित शहीद निर्मल महतो कुड़मि भवन में आदिबासि कुड़मि समाज केंद्रीय कोर कमेटी की एक आवश्यक बैठक केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अध्यक्षता और केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो के संचालन में आहुत हुई। इसमें कई महत्वपूर्ण सांगठनिक निर्णय लिये गये। आयोजक का कार्य आकुस पश्चिमी सिंहभूम जिला ने निभाया।

43) 29 जुलाई 2022 :– डीएसपीएम यूनिवर्सिटी, रांची और रांची विश्वविद्यालय, रांची में आदिबासि कुड़मि समाज केंद्रीय समिति की ओर से केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के नेतृत्व में कुड़मालि भाषा के लिए कुरमाली शब्द में संसोधन कर कुड़मालि करने को लेकर ध्यानाकर्षण आवेदन सौंपा गया। ज्ञात हो कि चार माह पूर्व इस संबंध में ज्ञापन दिया गया था।

इस मैराथन कार्यक्रम के तहत डीएसपीएमयू, रांची के माननीय कुलसचिव महोदया डॉ. नमिता सिंह जी को व कुड़मालि विभागाध्यक्ष माननीय डॉ. परमेश्वरी प्रसाद महतो जी को एवं रांची विश्वविद्यालय के माननीय कुलसचिव महोदय डॉ. मुकुंद चंद्र मेहता जी को, कुड़मालि विभागाध्यक्ष माननीय डॉ. गीता सिंह जी की अनुपस्थिति में कार्य प्रभारी माननीय डॉ. तारकेश्वर मुंडा जी को व मारवाड़ी महाविद्यालय के कुड़मालि विभागाध्यक्ष माननीय डॉ. वृंदावन महतो जी को आवेदन सौंपा गया।

44) 08 अगस्त 2022 :– जिला व प्रखंड स्तर पर वीर शहीद निर्मल महतो का शहादत दिवस पालन किया गया।

45) 09 अगस्त 2022 :– जिला स्तर पर विश्व आदिबासि दिवस के मौके पर कार्यक्रम आयोजित किये गये।

46) 10 अगस्त 2022 :– 24 मार्च 2022 और 29 जुलाई 2022 को केंद्रीय समिति द्वारा सौंपे गये ज्ञापन के आलोक में डीएसपीएमयू रांची के माननीय कुलपति महोदय ने माननीय कुलसचिव महोदया के माध्यम से नोटिफिकेशन जारी कर विश्वविद्यालय में कुरमाली शब्द के स्थान पर कुड़मालि शब्द लिखने पढ़ने की स्वीकृति प्रदान की।

47) 12 अगस्त 2022 :– कुड़मि एसटी इन्क्लूजन के मुद्दे पर रांची हाईकोर्ट में दायर रिट याचिका पर चौथी सुनवाई हुई।

48) 26 अगस्त 2022 :– प. बंगाल के पुरुलिया में आकुस के केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अध्यक्षता में आदिबासि कुड़मि समाज, आदिबासि नेगाचारि कुड़मि समाज और कुड़मि सेना (प. बंगाल) की एक संयुक्त बैठक आहुत हुई। बैठक में सर्वसम्मति से तीनों, संगठन का समन्वय स्थापित करते हुए . "आदिबासि कुड़मि एकिन माचा" का गठन किया गया।

49) 02 सितंबर 2022 :– कुड़मि एसटी इन्क्लूजन के मुद्दे पर रांची हाईकोर्ट में दायर रिट याचिका पर पांचवीं सुनवाई हुई। अगली सुनवाई की तारीख 18 नवंबर 2022 को दी गई।

50) 04 सितंबर 2022 :– आदिबासि कुड़मि समाज दिल्ली प्रदेश समिति द्वारा एमपी क्लब, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली में करम परब का भव्य आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में पश्चिमी सिंहभूम लोकसभा के माननीय सांसद श्रीमती गीता कोड़ा जी शामिल हुए।

51) 04 सितंबर 2022 :– केंदुझर, ओड़िशा के बैतरनी नदी किनारे अवस्थित सहरपाड़ा शहर के धानबेनि गांव खिजुरडिहा टोला में आयोजित 8 दिनिआ बिराट देस करम परब 2022 में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

52) 05 सितंबर 2022 :– रायरंगपुर, ओड़िशा के दुबुलाबेड़ा स्थित वीर शहीद रघुनाथ महतो देस करम आखड़ा में आयोजित करम परब में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

53) 05 सितंबर 2022 :– आकुस के प्रतिनिधिमंडल द्वारा केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो के नेतृत्व में उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के 2 महाविद्यालयों में कुड़मालि शिक्षक के पद सृजन हेतु हजारीबाग प्रमंडल के क्षेत्रीय उपशिक्षा निदेशक महोदय को ज्ञापन सौंपा गया।

54) 06 सितंबर 2022 :– विभिन्न स्थानों पर आकुस द्वारा करम डाइर सेंउरन का आयोजन किया गया।

55) 17 सितंबर 2022 :– विभिन्न स्थानों पर आकुस द्वारा जितिआ डाइर सेंउरन का आयोजन किया गया।

56) 24 व 25 सितंबर 2022 :– केंद्रीय समिति द्वारा कांकेबार, रामगढ़ में द्वितीय दोदिवसीय वार्षिक केंद्रीय अधिवेशन केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अध्यक्षता और केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो व केंद्रीय उपाध्यक्ष निरंजन महतो के संचालन में आहुत हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में गिरीडीह लोकसभा के

माननीय सांसद सह पूर्व मंत्री (झारखंड) श्री चंद्रप्रकाश चौधरी जी शामिल हुए। आयोजक का कार्य आकुस रामगढ़ जिला ने निभाया।

57) 30 सितंबर 2022 :– चुनाराम महतो – गोबिंद महतो शहादत दिवस पर गोलमुरी, जमशेदपुर में झारखंड एबॉरिजिनल कुड़मि पंच द्वारा आयोजित प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से झारखंड हाइकोर्ट में दायर रिट याचिका की जानकारी दिया गया। मुख्य रूप से पंच के अध्यक्ष सह आकुस के मुख्य सलाहकार डॉ० बिद्या भूषण महतो एवं एडवोकेट अखिलेश श्रीवास्तव संग आकुस केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो शामिल रहे।

58) 14 अक्टूबर 2022 :– Khabron Ka Khatiyan यूट्यूब चैनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– कुड़मि आदिबासि क्यों है, कुर्मी और कुड़मि में अंतर इत्यादि।

59) 19 अक्टूबर 2022 :– Social Samvad यूट्यूब चैनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– Jharkhand Kudmi ST: कुड़मि का हमेशा इस्तेमाल हुआ है चाहे वो झारखंड राज्य गठन में हो या आंदोलन में।

60) 31 अक्टूबर 2022 :– Mashal News यूट्यूब चैनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– क्या झारखंड में कुड़मि जनजाति को अनुसूचित जनजाति की सूची में किया जायेगा शामिल?

61) 03 नवंबर 2022 :– Public Action News यूट्यूब चैनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– कुड़मि महतो पर संवाद Prasenjeet Mahato से कड़वे सवाल, क्या कुड़मि आदिवासी बन पायेगा?

62) 07 नवंबर 2022 :– Adibasi Kudmi Samaj यूट्यूब चैनल पर अकाशवाणी जमशेदपुर (FM-102.4 Mhz) से दिनांक 25.10.2022 को शाम 07:45 बजे प्रसारित हुए– "ग्रामीण संस्कृति और परम्पराओं पर आधुनिकता का प्रभाव" विषय पर अदिबासि कुड़मि समाज के केंद्रीय अध्यक्ष, प्रसेनजीत महतो से खास बातचीत का अंश।

63) 12 नवंबर 2022 :– The Followup और 22SCOPE यूट्यूब चैनल पर कुड़मि मुद्दों पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू।

64) 12 नवंबर 2022 :– Abua Bihaan यूट्यूब चैनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– UNO तक जायेंगे Kudmi को ST में शामिल करा कर रहेंगे।

64) 13 नवंबर 2022 :– हजारीबाग के कारुखाप में हजारीबाग जिला इकाई द्वारा एकदिनिआ बिराट कुड़मि कुड़मालि जड़ुआहि का आयोजन किया गया। अतिथि के रूप में केंद्रीय पदाधिकारी भी हुए शामिल।

65) 20 नवंबर 2022 :– THE LOKTANTRA यूट्यूब चौनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– कुड़मि को एसटी सूची में सरकार को शामिल करना ही होगा, यह मांग पुरानी है और यह...।

66) 26 नवंबर 2022 :– Public Action News यूट्यूब चौनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– आदिबासि कुड़मि समाज ने जवाब दिया:– Prasenjeet Mahato हमारे पास प्रमाण पत्र हैं, संवैधानिक अधिकार है।

67) 27 नवंबर 2022 :– प्रेस क्लब, रांची में कुड़मि लोकसभा सांसदों संग कुड़मि एसटी इन्क्लूजन, कुड़मालि भाषा कोड आदि कुड़मि मुद्दों पर एक परिचर्चा बैठक आयोजित हुई। इसमें माननीय सांसद श्री चंद्रप्रकाश चौधरी, बिद्युत बरन महतो और ज्योतिर्मय महतो शामिल हुए। संगठन के केन्द्रीय से लेकर प्रखंड स्तर के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

68) 18 दिसंबर 2022 :– गोड्डा के पथरगामा स्थित परसपानी रँगमँच टाँइड़ में गोड्डा जिला समिति द्वारा एकदिनिआ बिराट कुड़मि कुड़मालि सारना माहाजडुआहि का आयोजन किया गया। इसमें केंद्रीय एवं प्रदेश स्तर के पदाधिकारी शामिल हुए।

69) 23 दिसंबर 2022 :– झाड़ग्राम में एक बैठक के माध्यम से केंद्रीय अध्यक्ष के उपस्थिति में प० बंगाल संयोजक समिति का गठन किया गया।

70) 28 दिसंबर 2022 :– एक बार फिर ऐतिहासिक रूप से विभिन्न नेतृत्व में झारखंड के 60 प्रखंडों के प्रखंड विकास पदाधिकारी के माध्यम से राज्य के माननीय मुख्यमंत्री महोदय के नाम 11 सूत्री मांगपत्र सौंपा गया।

71) 03 जनवरी 2023 :– CHOTANAGPUR LIVE यूट्यूब चैनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– जानें टुसु का इतिहास और टुसु परब क्यों मनाते हैं?

72) 03 जनवरी 2023 :– Mashal News यूट्यूब चैनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– Kudmi ST Inclusion: आदिबासि कुड़मि समाज 09 जनवरी को बोलेगा धावा।

73) 06 जनवरी 2023 :– Mashal News यूट्यूब चैनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– Jharkhand Tusu Parv: टुसु परब बृहद झारखंड में क्या है महत्व?

74) 07 जनवरी 2023 :– साधु राम चाँद मुर्मु विश्वविद्यालय के सौजन्य से झाड़ग्राम के व्हाइट हाउस में कुड़मालि भाषा साहित्य विषय पर आयोजित सेमिनार में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो मुख्य वक्ता के तौर पर शामिल हुए।

75) 09 जनवरी 2023 :– ऐतिहासिक रूप से विभिन्न नेतृत्व में झारखंड के 12 जिलों के जिला उपायुक्त महोदय के माध्यम से देश के माननीय प्रधानमंत्री महोदय के नाम 09 सूत्री मांगपत्र सौंपा गया।

76) 12 फरवरी 2023 :– भीमपुर, सालबोनी में पश्चिम मेदिनिपुर जिला इकाई द्वारा जिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। केंद्रीय पदाधिकारियों के उपस्थिति में जिला समिति का गठन हुआ।

77) 21 फरवरी 2023 :– विभिन्न स्थानों पर विभिन्न नेतृत्व में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये।

78) 12 मार्च 2023 :– झाड़ग्राम में झाड़ग्राम जिला इकाई द्वारा जिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। केंद्रीय पदाधिकारियों के उपस्थिति में जिला समिति का गठन किया गया।

79) 21 मार्च 2023 :– शहीद रघुनाथ महतो जयंती पर विभिन्न स्थानों पर कई कार्यक्रम आयोजित किये गये। कुकडु प्रखंड के छातारडीह स्थित शहीद रघुनाथ महतो चौक में आयोजित कार्यक्रम में प्रखंड समिति द्वारा कुड़मालि छात्र–छात्राओं के बीच कुड़मालि पोथि का वितरण किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो शमिल हुए।

80) 28 मार्च 2023 :– चाण्डिल अनुमंडल के अनुमंडल पदाधिकारी महोदय को सरायकेला–खरसावां जिला इकाई द्वारा कुड़मि महतो नाम से जाति प्रमाण पत्र निर्गत कराने में असुविधा और उसके त्वरित निराकरण करने के संबंध में ज्ञापन सौंपा गया। मौके पर केंद्रीय अध्यक्ष भी शमिल रहे।

81) 02 अप्रैल 2023 :– सारिगत बसंत बंसरिआर जयंती दिवस पर संगठन की ओर से पूर्णिमा नेत्रालय, जमशेदपुर के सौजन्य से धातकीडीह, कान्ड्रा, गम्हरिया में नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया।

82) 05 अप्रैल 2023 :– शहीद रघुनाथ महतो शहादत दिवस पर लोटा, सिल्ली स्थित शहादत स्थल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो और केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो के नेतृत्व में भारी संख्या में रैली की शक्ल में जाकर श्रद्धांजलि दिया गया।

83) 23 अप्रैल 2023 :– विद्यालय से लेकर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर तक त्रुटिपूर्ण कुरमाली शब्द में संशोधन कर कुड़मालि करने के मामले में ***#WeWantKudmali*** टैग के साथ Twitter Campaign चलाया गया। इसके समर्थन में हजारों ट्विट किये गये।

84) 28 अप्रैल 2023 :– शाम 6 बजे Adibasi Kudmi Samaj ऑफिसियल फेसबुक पेज पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो ने लाइव आकर "कुड़मालि बनाम कुरमाली" विषय पर अपना महत्वपूर्ण वक्तव्य रखा।

*** 09, 10 मई 2023 – दिनांक 09.05.2023 को केंद्रीय समिति द्वारा केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अगुवाई में डीएसपीएमयू रांची के माननीय कुलपति महोदय को एवं झारखंड अधिविद्य परिषद, रांची के श्रीमान अध्यक्ष महोदय को और दिनांक 10.05.2023 को झारखंड शिक्षा परियोजना, रांची के निदेशक महोदया य मुख्यमंत्री सचिवालय, रांची में माननीय मुख्यमंत्री महोदय के नाम एवं राजभवन, रांची में महामहिम राज्यपाल महोदय के नाम कुड़मालि भाषा के लिए कुरमाली (Kurmali) शब्द में संशोधन कर कुड़मालि (Kudmali) करने के लिए ज्ञापन सौंपा गया।

85) 16 मई 2023 :– साधु राम चाँद मुर्मु विश्वविद्यालय, झाड़ग्राम में स्नातक एवं स्नातकोत्तर संकाय में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई शुरु कराने के लिए केंद्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में झाड़ग्राम एवं मेदिनिपुर का एक प्रतिनधिमंडल ने माननीय कुलपति महोदय से भेंट कर एक ज्ञापन दिया एवं सकारात्मक परिचर्चा किया।

86) 21 मई 2023 :– कुकडु प्रखंड समिति द्वारा दारुदा में एकदिनिआ बिराट प्रखंड सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें केंद्रीय एवं प्रदेश स्तर के पदाधिकारी संग बंगाल के प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

87) 04 जून 2023 :– ऑफिसर्स क्लब, चरही, हजारीबाग में हजारीबाग जिला इकाई द्वारा एकदिनिआ जिला सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इसमें केंद्रीय एवं प्रदेश स्तर के पदाधिकारी शामिल हुए।

88) 11 जून 2023 :– रांची के सोनाहातु प्रखंड अंतर्गत बाजार टाँइड़ पंचायत भवन में सोनाहातु प्रखंड इकाई के द्वारा एक बैठक कर केंद्रीय अध्यक्ष के उपस्थिति में सोनाहातु प्रखंड समिति का गठन किया गया।

इसके बाद केंद्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में सिल्ली स्थित अड़ाल नवाडीह गाँव जाकर Adibasi Kudmi Samaj ऑफिसियल फेसबुक पेज पर लाइव रिपोर्टिंग के माध्यम से पिछले दिनों कुँआ के पानी को लेकर उपजे मामले को छूआछूत का रंग देकर कुछ न्यूज चैनलों द्वारा सम्पूर्ण कुड़मि समाज को राष्ट्रीय–अतर्राष्ट्रीय स्तर पर बदनाम करने के साजिश का पर्दाफाश किया गया।

89) 13 जून 2023 :– Mashal News यूट्यूब चैनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– Kudmi ST inclusion: कुड़मि समुदाय आदिवासी क्यों है?

90) 25 जून 2023 :– विभिन्न स्थानों पर विभिन्न नेतृत्व द्वारा जाहिरा, सारना व गड़ाम थान में साल एवं महुआ के पौधे लगाकर "गाछ रोपा होमदुमि 3" कार्यक्रम का उचरन किया गया।

91) 26 जून 2023 :– Mashal News यूट्यूब चौनल पर केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो का इंटरव्यू। विषय– सिल्ली–नवाडीह का मामला: कुड़मि समुदाय को ही टारगेट–।

92) 11 जुलाई 2023 :– सरायकेला–खरसावां जिला सदस्य पंचानन महतो के नेतृत्व में एक विशाल प्रदर्शन के माध्यम से सिंहभूम महाविद्यालय, चाण्डिल में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई शुरू कराने को लेकर प्राचार्य महोदय को दोबारा ज्ञापन सौंपा गया। इसमें मुख्य रूप से केंद्रीय अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, जिला अध्यक्ष व जिला परिषद उपाध्यक्ष भी शामिल हुए।

93) 16 जुलाई 2023 :– रांची के पुराना विधानसभा परिसर स्थित विधायक क्लब हॉल में झाड़खँड प्रदेश अधिवेशन का भव्य आयोजन किया गया। इसमें केंद्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में प्रदेश समिति का गठन किया गया।

इसके पूर्व विधानसभा परिसर में केंद्रीय अध्यक्ष के अगुवाई में साल, महुआ, करम, पिआल व कुसुम के पौधे लगाकर "गाछ रोपा होमदुमि 3" कार्यक्रम का भव्य समापन किया गया।

94) 22 जुलाई 2023 :– केंद्रीय अध्यक्ष के असम दौरे के पहले दिन Dibrugarh स्थित सारिगत बाबुराम कुड़मि जी के आवास में उनकी तस्वीर पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात कुड़मि महतो समाज, असम के पदाधिकारियों संग एक परिचर्चा बैठक किया गया। साथ में केंद्रीय सलाहकार डॉ० सुधांशु शेखर महतो एवं असम कुड़मालि साहित्य सभा के मुख्य सचिव सुरेश कुड़मि मौजूद रहे।

95) 23 जुलाई 2023 :– Dirial Tea Estate, Dibrugarh, Assam में कुड़मि महतो समाज असम के डिब्रुगढ़ जिला समिति द्वारा आयोजित पांचवर्षीय जिला महासम्मेलन में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो मुख्य अतिथि के रूप में एवं केंद्रीय सलाहकार डॉ० सुधांशु शेखर महतो मुख्य वक्ता और असम कुड़मालि साहित्य सभा के मुख्य सचिव सुरेश कुड़मि विशिष्ट वक्ता के तौर पर शामिल हुए एवं अपना महत्वपूर्ण वक्तव्य रखा।

96) 25 जुलाई 2023 :– तेजपुर साहित्य भवन, तेजपुर, सोनितपुर, असम में "Assam Kudmali Sahitya Sabha" द्वारा आयोजित एकदिनिआ कुड़मालि भाखि जड़ुआहि में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो मुख्य अतिथि के रूप में एवं केंद्रीय सलाहकार डॉ० सुधांशु शेखर महतो मुख्य वक्ता के रूप में शामिल होकर अपना महत्वपूर्ण वक्तव्य रखा।

97) 08 अगस्त 2023 :– शहीद निर्मल महतो शहादत दिवस पर बिरसानगर, जमशेदपुर में पूर्वी सिंहभूम जिला समिति द्वारा श्रद्धांजलि सभा सह जमशेदपुर ब्लड सेंटर के सौजन्य से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो शामिल हुए।

98) 09 अगस्त 2023 :– International Day of the World's Indigenous Peoples (बिश्व आदिबासि दिवस) पर विभिन्न स्थानों पर विभिन्न नेतृत्व में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये।

99) 15 अगस्त 2023 :– स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर केंद्रीय कार्यालय कोठार, रामगढ़ में संगठन की ओर से केंद्रीय सचिव बैजनाथ महतो द्वारा झंडोत्तोलन किया गया एवं इसके बाद एक परिचर्चा बैठक किया गया।

100) 21 अगस्त 2023 :– झारखंड प्रदेश समिति द्वारा प्रदेश अध्यक्ष पन्नालाल राम जुरुआर के अगुवाई में गोस्सनर महाविद्यालय, रांची और झारखंड राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, रांची में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई स्नातक एवं स्नातकोत्तर संकाय में शुरु करने के लिए ज्ञापन सौंपा गया।इसमें केंद्रीय पदाधिकारी एवं रामगढ़ व हजारीबाग जिला इकाई के पदाधिकारी व सदस्यगण भी शामिल हुए।

इसके बाद एक प्रतिनिधिमंडल केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के अगुवाई में रांची विश्वविद्यालय, रांची के माननीय कुलपति महोदय से जाकर पुनः मुलाकात किये एवं कुड़मालि भाषा के लिए त्रुटिपूर्ण कुरमाली शब्द में संशोधन कर कुड़मालि करने के लिए ज्ञापन सौंपे। कुलपति महोदय ने कुलसचिव महोदय को त्वरित कमेटी गठित कर इसे अमल में लाने का निर्देश दिए।

101) 5–9 सितंबर 2023 :– 25 सितंबर 2023 को शुक्ल पक्ष भादर एकादशी के दिन करम परब से एक हफ्ते पहले नदी घाट से जाउआ उठाने से पहले सरायकेला जिला के कुकड़ु, गम्हरिया, चाण्डिल व नीमडीह प्रखंड इकाइयों द्वारा प्रखंड विकास पदाधिकारी को घाट सफाई कराने को लेकर ज्ञापन सौंपा गया।

102) 11 सितंबर 2023 :– हजारीबाग जिला इकाई द्वारा कटकमदाग में एकदिनिआ कुड़मि कुड़मालि जड़ुआहि का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो ने केंद्रीय सचिव से परामर्श के बाद पूर्व में गुगल मीट के माध्यम से कोर कमेटी के बीच हुए विचार के आधार पर हजारीबाग जिला में 05 नवंबर 2023 को तृतीय वार्षिक केंद्रीय अधिवेशन आयोजित करने का घोषणा किया।

103) 12 सितंबर 2023 :– प्रदेश समिति द्वारा प्रदेश अध्यक्ष के अगुवाई में विनोबा भावे विश्वविद्यालय में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई स्नातक एवं स्नातकोत्तर संकाय में इसी सत्र से शुरु करने के लिए माननीय कुलपति महोदय के अनुपस्थिति में माननीय कुलसचिव महोदय को पुनः ज्ञापन सौंपा गया। इसमें केंद्रीय पदाधिकारी एवं रामगढ़ व हजारीबाग जिला इकाई के पदाधिकारी व सदस्यगण भी शामिल हुए।

104) 14 सितंबर 2023 :– विद्यासागर विश्वविद्यालय, पश्चिम मेदिनिपुर में जिला समिति द्वारा विश्वविद्यालय में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई स्नातक एवं स्नातकोत्तर संकाय में इसी सत्र से शुरु करने के लिए माननीय कुलपति महोदय को ज्ञापन सौंपा गया। मौके पर केंद्रीय अध्यक्ष भी शामिल रहे।

105) 15 सितंबर 2023 :– पश्चिम मेदिनिपुर जिला समिति द्वारा गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, सालबोनी में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई शुरु करने के लिए प्राचार्य महोदय को ज्ञापन सौंपा गया। मौके पर केंद्रीय अध्यक्ष भी शामिल रहे।

106) 19, 21 सितंबर 2023 :– करम परब से पूर्व विभिन्न स्थानों पर करमइति कन्याओं द्वारा जाउआ उठान कर करम परब का उचरन किया गया।

107) 23 सितंबर 2023 :– डुंगुरिआ, मयूरभंज, ओड़िशा में आयोजित "देस करम परब" के पांचवें दिन केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए और राज्य के कुड़मि बहुल जिलों के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विद्यालयों में कुड़मालि भाषा का पठन पाठन शुरु कराने का संदेश दिया। साथ में मुख्य वक्ता के तौर पर कुड़मालि प्राध्यापक सुरेश कुड़मि एवं विशिष्ट अतिथि के तौर पर राज्यसभा सांसद ममता मोहन्ता भी उपस्थित रहे।

108) 25, 26 सितंबर 2023 :– विभिन्न स्थानों पर 25 सितंबर को करम डाइर सँउरन और 26 सितंबर को जाउआ डाला व करम डाइर का भासान कर करम परब का समापन किया गया।

109) 30 सितंबर 2023 :– कोटशिला, पुरुलिया में **"सगअड़"** पत्रिका मंडली द्वारा आयोजित पोथि उढ़ान कार्यक्रम में केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इसमें अतिथियों द्वारा **सगअड़** कुड़मालि पत्रिका के दूसरे खेप के अलावे कुड़मालि समाचार पत्र **"नाउआ बिहान"** और विभिन्न 10 कुड़मालि पुस्तकों का विमोचन किया गया।

110) 11 अक्टूबर 2023 :– झाड़ग्राम जिला समिति द्वारा राज महाविद्यालय, झाड़ग्राम और राज महाविद्यालय (महिला विभाग), झाड़ग्राम में कुड़मालि भाषा की पढ़ाई शुरू कराने के लिए ज्ञापन सौंपा गया। मौके पर केंद्रीय अध्यक्ष भी शामिल रहे।

111) 15 अक्टूबर 2023 :– करंजिया, मयूरभंज में ओड़िशा प्रदेश इकाई द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में ओड़िशा प्रदेश में कुड़मि जनमुद्दों के साथ कुड़मालि भाषा संस्कृति परंपरा के उत्थान पर विशेष परिचिर्चा किया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो के उपस्थिति में ओड़िशा राज्य कमेटी का गठन किया गया। मुख्य अतिथि ने सर्वसम्मति से 05 नवंबर को केंद्रीय अधिवेशन के बाद 08 नवंबर 2023 को मयूरभंज विश्वविद्यालय में कुड़मालि भाषा का पठन पाठन शुरु कराने के लिए ज्ञापन देने का घोषणा किया।

इसके अलावे :–

विभिन्न कुड़मि शहीदों व महापुरुषों का जयंती और शहादत दिवस का पालन, विभिन्न प्रतिभाओं का सम्मान, बारह महीने के तेरह परब, कुड़मालि नेगाचारि से विभिन्न कार्यानुष्ठान, जमीनी स्तर पर जनजागरण अभियान आदि कई कार्यों का क्रियान्वयन।

अन्य महत्वपूर्ण कार्य :–

फ्लैश बैक : 07 अक्टूबर 2018 को अध्यक्ष प्रसेनजीत महतो और समाजसेवी आस्तिक महतो के नेतृत्व में झारखंड टीआरआई उपसमिति के अध्यक्ष सह माननीय मंत्री श्री नीलकंठ सिंह मुंडा को कुड़मि (Kudmi) जनजाति समुदाय को अनुसूचित जनजाति की सूची में सूचीबद्ध करने की मांग को लेकर मांगपत्र सौंपा गया।

09 फरवरी 2020 को करमटोली चौक, रांची स्थित प्रेस क्लब में एकदिवसीय कुड़मालि शोधार्थी सह छात्र समावेश का आयोजन किया गया।

अगस्त व सितंबर 2020 में कोल्हान के प्रखंड कार्यालयों में प्रखंड विकास पदाधिकारी महोदयों को और तीनों जिला मुख्यालयों में जिला उपायुक्त महोदयों को पिछड़ा वर्ग सर्वेक्षण में हो रहे गड़बड़ी में सुधार के लिए ज्ञापन सौंपा गया।

ऐतिहासिक रूप से 28 दिसंबर 2020 को झारखंड राज्य के 50 प्रखंडों के प्रखंड कार्यालयों में प्रखंड विकास पदाधिकारियों के माध्यम से और 08 जनवरी 2021 को 10 जिला के जिला मुख्यालयों में जिला उपायुक्त महोदयों के माध्यम से राज्य सरकार को 13 सूत्री मांगपत्र सौंपा गया।

06 अगस्त 2020 से 01 दिसंबर 2021 तक भारत की जनगणना के भाषा सूची में कुड़मालि (ज्ञनकउंसप) भाषा कोड लागू कराने को लेकर राज्य स्तर से केन्द्र स्तर तक विभिन्न विभागों, कार्यालयों, सदनों व मंत्रालयों में पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और विभिन्न माध्यमों से ऐतिहासिक प्रयास किया गया।

आप सभी के सहयोग को सधन्यवाद, जोहाइर।

आदिबासि कुड़मि समाज

महत्वपूर्ण जयंती एवं शहादत दिवस :

जनवरी :
03 जनवरी – शहीद रतिलाल महतो जयंती (1949)
05 जनवरी – सारिगत केसब चन्द्र टिडुआर जयंती (1931)
07 जनवरी – सारिगत ठाकुर दास महतो पुण्यतिथि (1990)
11 जनवरी – शहीद सांसद सुनील महतो जयंती (1966)
15 जनवरी – गोकुल महतो, गणेश महतो, मोहन महतो, शीतल महतो, सहदेव महतो शहादत दिवस (1931)
22 जनवरी – सारिगत सुधीर महतो पुण्यतिथि (2014)

फरवरी :
03 फरवरी – शहीद चुनाराम महतो जयंती (1924)
09 फरवरी – शहीद चानकु महतो जयंती (1816)
15 फरवरी – सारिगत टेकलाल महतो जयंती (1945)
28 फरवरी – सारिगत डॉ. पशुपति प्रसाद महतो पुण्यतिथि (2019)

मार्च :
04 मार्च – शहीद सांसद सुनील महतो शहादत दिवस (2007)
14 मार्च – शहीद गणेश महतो जयंती (1887)
21 मार्च – क्रांतिवीर शहीद रघुनाथ महतो जयंती (1738)

अप्रैल :
02 अप्रैल – सारिगत बसंत बंसरिआर जयंती (1929)
05 अप्रैल – क्रांतिवीर शहीद रघुनाथ महतो शहादत दिवस (1778)
22 अप्रैल – सारिगत लक्ष्मीकांत मुतरुआर जयंती (1939)

मई :
03 मई – शहीद कालिया मोहन्ता शहादत दिवस (1917)
15 मई – शहीद चानकु महतो शहादत दिवस (1856)
16 मई – शहीद शीतल महतो जयंती (1896)

जून :
16 जून – सारिगत आनंद खुँटदार जयंती (1931)
25 जून – सारिगत सुधीर महतो जयंती (1956)

जुलाई :
07 जुलाई – शहीद गोबिंद महतो जयंती (1924)
13 जुलाई – शहीद रतिलाल महतो शहादत दिवस (1999)

अगस्त :
02 अगस्त – शहीद शक्तिनाथ महतो जयंती (1948)
08 अगस्त – शहीद निर्मल महतो शहादत दिवस (1987)
23 अगस्त – शहीद गोकुल महतो जयंती (1886)

सितंबर :
22 सितंबर – सारिगत बसंत बंसरिआर पुण्यतिथि (2011)
23 सितंबर – सारिगत बिनोद बिहारि महतो जयंती (1923)
23 सितंबर – सारिगत आनंद खुँटदार पुण्यतिथि (2018)
26 सितंबर – सारिगत लक्ष्मीकांत मुतरुआर पुण्यतिथि (2012)
27 सितंबर – सारिगत टेकलाल महतो पुण्यतिथि (2011)
30 सितंबर – शहीद चुनाराम महतो – गोबिंद महतो शहादत दिवस (1942)

अक्टूबर :
21 अक्टूबर – शहीद अजीत–धनंजय महतो शहादत दिवस (1982)
29 अक्टूबर – सारिगत डॉ. पशुपति प्रसाद महतो जयंती (1943)

नवंबर :
04 नवंबर – शहीद मोहन महतो जयंती (1901)
05 नवंबर – सारिगत केसब चन्द्र टिडुआर पुण्यतिथि (2003)
07 नवंबर – शहीद सहदेव महतो जयंती (1906)
19 नवंबर – सारिगत ठाकुर दास महतो जयंती (1917)
28 नवंबर – शहीद शक्तिनाथ महतो शहादत दिवस (1977)

दिसंबर :
18 दिसंबर – सारिगत बिनोद बिहारि महतो पुण्यतिथि (1991)
25 दिसंबर – शहीद निर्मल महतो जयंती (1950)